BLESSED IS HER NAME

मैरी की कहानी

अपने सभी बच्चों की माँ

बारबरा ओलेनिक द्वारा लिखित

हिंदी अनुवाद प्रायोर्षी मिश्रा द्वारा

कथन: प्रायोर्षी मिश्रा एवं यश राज

कॉपीराइट © 2026 बारबरा ओलेनिक
सर्वाधिकार सुरक्षित।
संयुक्त राज्य अमेरिका में मुद्रित।

समर्पण

उनको, जो समस्त मानव जाति की माता हैं, और उन सभी को, जो यह पूर्ण विश्वास रखते हैं कि अंततः उन्हीं का 'निष्कलंक हृदय' विजयी होगा।

विषय-सूची

भूमिका.....6
अध्याय एक: निर्दोष गर्भाधान.....8
अध्याय दो: नर्क की गहराइयाँ.....13
अध्याय तीन: मरियम का जन्म.....16
अध्याय चार: मरियम की शिक्षा.....20
अध्याय पाँच: मंदिर.....23
अध्याय छह: योआकिम की मृत्यु.....29
अध्याय सात: नर्क की गहराइयाँ.....32
अध्याय आठ: अन्ना की मृत्यु.....37
अध्याय नौ: मरियम का वयस्क होना.....39
अध्याय दस: मरियम और यूसुफ की सगाई.....41
अध्याय ग्यारह: सृष्टि के वे क्षण.....43
अध्याय बारह: स्त्रियों में आप धन्य हैं.....46
अध्याय तेरह: यूसुफ को प्रकटवाणी.....49
अध्याय चौदह: बेथलहम की यात्रा.....53
अध्याय पंद्रह: मसीह का जन्म.....59
अध्याय सोलह: प्रस्तुति.....63
अध्याय सत्रह: मिस्र की यात्रा.....68
अध्याय अठारह: बालक यीशु.....75
अध्याय उन्नीस: नाज़रेथ की वापसी.....79
अध्याय बीस: मंदिर में उपदेश.....83
अध्याय इक्कीस: यीशु - किशोरावस्था से वयस्कता तक.....88
अध्याय बाईस: यूसुफ की मृत्यु.....91

अध्याय तेईस: सार्वजनिक जीवन की ओर 95
अध्याय चौबीस: एक माँ का बलिदान 97
अध्याय पच्चीस: यीशु का बपतिस्मा 100
अध्याय छब्बीस: यीशु का प्रलोभन 102
अध्याय सत्ताईस: मसीह के शिष्य 105
अध्याय अठ्ठाइस: मसीह के सार्वजनिक चमत्कार 106
अध्याय उनतीस: विस्तारित होती सेवा 110
अध्याय तीस: रूपान्तरण 112
अध्याय एकतीस: अंतिम भोज 113
अध्याय बत्तीस: मरियम का शोक 116
अध्याय तेईस: कालवारी का मार्ग 118
अध्याय चौंतीस: पुनरुत्थान 121
अध्याय पैंतीस: मसीह का स्वर्गारोहण 123
अध्याय छत्तीस: पिन्तेकुस्त 125
अध्याय सैंतीस: अच्छाई और बुराई का संग्राम 127
अध्याय अड़तीस: प्रेरितों का धर्मसार 131
अध्याय उनतालीस: याकूब की मृत्यु 134
अध्याय चालीस: पतरस की मुक्ति 135
अध्याय इकतालीस: सुसमाचार 138
अध्याय बयालीस: हमारी परमप्रिया की मृत्यु 141
अध्याय तैंतालीस: मरियम का स्वर्गारोहण 141
लेखक का संदेश 150

भूमिका

'**ब्लेस्ड इज़ हर नेम**' वर्ष 2000 में बारबरा ओलेनिक द्वारा रचित एक 'प्रेरित' पटकथा का गद्यात्मक रूपांतरण है। यह रचना स्पेन के एग्रेडा की एक समर्पित फ्रांसिस्कन नन, आदरणीय मरियम (जिन्हें प्रायः मारिया डी एग्रेडा, 1602-1665 के नाम से जाना जाता है) के आध्यात्मिक लेखों पर आधारित है। परमेश्वर को समर्पित एक धर्मपरायण परिवार में जन्मी मारिया और उनकी माता ने जनवरी 1619 में 'निष्कलंक गर्भाधान' के मठ में प्रवेश किया, जबकि उनके पिता और दोनों भाई फ्रांसिस्कन भिक्षु बन गए। मारिया की योग्यता को देखते हुए, मात्र पच्चीस वर्ष की आयु में ही पोप की विशेष अनुमति द्वारा उन्हें अप्रत्याशित रूप से उस मठ की संरक्षिका नियुक्त कर दिया गया। अपनी पवित्रता की ख्याति के साथ प्राण त्यागने के पश्चात, मात्र सात वर्ष के भीतर 21 जून 1672 को स्पेन के राजदरबार में 'धर्मविधि धर्मसंघ' द्वारा उनके संत घोषित किए जाने की प्रक्रिया आरंभ कर दी गई।

उनकी शाश्वत प्रसिद्धि केवल उनके पवित्र जीवन से नहीं, अपितु उनकी महान कृति 'ईश्वर का रहस्यमयी नगर' (द मिस्टिकल सिटी ऑफ गॉड) से उपजी है। मठ में सम्मिलित होने के नौ वर्ष पश्चात, 1627 में उनके मन में इस कार्य का विचार आया। अपने स्वीकारोक्ति-पिता (कन्फ़ेसर) की आज्ञा पर उन्होंने इसे लिखना आरंभ किया और मात्र बीस दिनों में प्रथम 400 पृष्ठ रच दिए। यद्यपि वे इसके प्रकाशन को रोकना चाहती थीं, तथापि इसकी एक प्रति राजा फिलिप चतुर्थ को भेजी गई, जिन्होंने इसमें गहरी रुचि व्यक्त की थी। कालांतर में, एक अन्य स्वीकारोक्ति-पिता के निर्देशानुसार उन्होंने अपनी समस्त पांडुलिपियों को अग्नि को समर्पित कर दिया, किंतु 1655 में उन्होंने पुनः इस कार्य को नए सिरे से आरंभ किया और 1660 तक इसे पूर्ण कर लिया; उनकी मृत्यु के पश्चात 1670 में मैड्रिड में इसे प्रकाशित किया गया।

दिव्य रहस्योद्घाटन का अभिलेख होने का दावा करने वाली यह कृति, 'ईश्वर का रहस्यमयी नगर', कुंवारी मरियम के दिव्य जीवन और मृत्यु के रहस्यों का विस्तार से वर्णन करती है, जिन्हें 'मानवता की माता' और 'स्वर्ग की रानी' के रूप में महिमामंडित किया गया है। मूल रूप से 4000 पृष्ठों और चार खंडों में विभाजित इस स्पेनिश ग्रंथ का 1885 में रिडेम्पटोरिस्ट पिताओं द्वारा जर्मन भाषा में अनुवाद किया गया था। उसी जर्मन संस्करण से प्रेरित होकर शिकागो के एक पुरोहित, फादर जॉर्ज जे. ब्लैटर ने स्पेनिश भाषा सीखी ताकि वे इसका अंग्रेजी अनुवाद कर सकें, जिसका प्रथम प्रकाशन

1912 में हुआ।
सितंबर 1999 में, बारबरा ने न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय से अपने शोध-प्रबंध (थीसिस) पर आधारित एक संगीत-नाटिका 'द मिरेकल ऑफ फातिमा' पर कार्य करना आरंभ किया। एक स्थानीय कैथोलिक पुस्तक केंद्र में भ्रमण के दौरान, उनके साथ एक अद्‌भुत ईश्वरीय घटना घटी जब 'ईश्वर का रहस्यमयी नगर' पुस्तक अचानक अलमारी से गिरकर उनके चरणों में आ गई। इस रचना से प्रभावित होकर उन्होंने पूरे वर्ष इसका अध्ययन किया और 1000 पृष्ठों के उस विशाल ग्रंथ के अध्यायों को बार-बार पढ़ा।

8 दिसंबर 2000 को उन्होंने उस पटकथा को लिखना आरंभ किया, जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं किया था, और दिसंबर तक इसे पूर्ण कर लिया। उस पटकथा का यह नया कथा-रूपांतरण परमेश्वर की कुंवारी माता के इतिहास और उनके दिव्य जीवन को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाता है। क्योंकि अब वह समय आ गया है कि उनकी विजय हो!

अध्याय एक
निर्दोष गर्भाधान

यीशु के जन्म से पच्चीस वर्ष पूर्व, नाज़रेथ का गाँव जीवन और गतिविधि से परिपूर्ण होकर मानो स्पंदित हो रहा था। उसकी सँकरी गलियाँ व्यापारियों की पुकारों से गूँज रही थीं, जो अपने विविध सामानों की घोषणा करते हुए लोगों को आकर्षित कर रहे थे, और बालक-बालिकाएँ हँसी के उल्लासपूर्ण फुहारों के साथ भीड़ के बीच से खेलते-कूदते हुए निकल रहे थे। लोहार के हथौड़े की लयबद्ध टंकार पत्थर की दीवारों से टकराकर प्रतिध्वनित हो रही थी और वह ध्वनि उन व्यापारियों के संवादों में मिल रही थी जो वस्तुओं के मूल्य पर परस्पर मोल-भाव कर रहे थे। वायुमंडल ताज़ी, अभी-अभी भट्ठी से निकली गरम ब्रेड की सुगंध से परिपूर्ण था, जो दालचीनी, जीरा और इलायची जैसे मसालों की मिट्टी-सी सुगंध के साथ मिलकर चारों ओर फैल रही थी, मानो बेंत से बुनी टोकरियों से झरती हुई सुगंध पूरे गाँव को आच्छादित कर रही हो। सूर्य का प्रकाश मिट्टी की छतों पर झिलमिला रहा था, और दूर कहीं से सुनाई देने वाली बकरियों की मिमियाहट दैनिक जीवन की उस मधुर संगति में सम्मिलित हो रही थी, जिससे यह प्रतीत होता था कि यह नगर उद्देश्य, परंपरा और जीवन की लय से परिपूर्ण होकर जीवित है।

गाँव के चौक में कुछ स्त्रियाँ, जो गहरे नीले, मृदुल लाल और पृथ्वी के स्वाभाविक क्रीम रंगों के लंबे, लहराते लिनन वस्त्रों से आच्छादित थीं, एकत्र होकर खड़ी थीं। उनके स्वर हँसी और संवाद की एक जीवंत ध्वनि में एक-दूसरे से मिलते जा रहे थे। वे दो युवा स्त्रियों को घेरे हुए थीं, जो गर्भवती थीं; वे अपने कोमल हाथों से उनके गोल होते उदरों को स्नेहपूर्वक स्पर्श करती हुई धीमे स्वर में आशीषें प्रदान कर रही थीं और आपस में समझ से भरी मुस्कानें बाँट रही थीं। उस वातावरण में उत्साह की एक सूक्ष्म तरंग मानो स्पंदित हो रही थी, और बहनत्व की वह स्नेहमयी ऊष्मा उन्हें ऐसे आवृत कर रही थी मानो कोई सांत्वनापूर्ण शाल उनके चारों ओर फैली हो। सूर्य का प्रकाश उनके मुखमंडलों पर नृत्य करता हुआ उनकी आँखों में झलकती प्रतीक्षा और आशा को उजागर कर रहा था, जबकि बुने हुए वस्त्रों की हल्की सरसराहट और मंद पवन में बहती लैवेंडर तथा पके अंजीरों की सुगंध उस क्षण को आनंद, आशा और नए जीवन की प्रतिज्ञा से परिपूर्ण बना रही थी।

उसी समय एक वृद्ध दंपति उस चहल-पहल से भरी भीड़ के मध्य से संयत गति से आगे बढ़ रहा था। उनका उपस्थित होना शांत और गंभीर था। योआकिम, जिनका शरीर आयु के भार के बावजूद अब भी सुदृढ़ प्रतीत होता था, अत्यंत विनम्र गरिमा के साथ चल रहे थे; उनके अनुभव से परिपक्व हाथ उनकी पीठ के पीछे संयत रूप से जुड़े हुए थे, और वे अपनी पत्नी के सावधान कदमों के साथ कदम मिलाते हुए आगे बढ़ रहे थे।

योआकिम के बगल में उनकी पत्नी अन्ना चल रही थीं। उसकी चाल में एक स्वाभाविक गरिमा थी, किन्तु उसका झुर्रियों भरा चेहरा शब्दों से परे एक गहरे दर्द की छाया में डूबा हुआ था। उसकी आँखें, जो कभी जवानी से चमकती थीं, अब एक दूरदर्शी, उदासी भरी निगाह लिए हुए थीं, जो चुप्पी में उठाए गए बोझों को दर्शा रही थीं। उसके पृथ्वी-रंग के आवरण की सिलवटें प्रत्येक कदम के साथ हल्के से लहरा उठती थीं; वह वस्त्र समय के प्रभाव से जर्जर अवश्य हो चुका था, परंतु उसमें अब भी एक गंभीर गरिमा विद्यमान थी, ठीक उसी प्रकार जैसे उस स्त्री में, जो उसे धारण किए हुए थी।

जब वे स्त्रियों के उस समूह के समीप पहुँचे, तब योआकिम ने देखा कि अन्ना की दृष्टि गर्भवती स्त्रियों पर ठहर गई है। अनायास ही उनका हाथ धीरे से अपने ही निष्फल उदर पर आकर ठहर गया, मानो हृदय की गहराई में छिपी वेदना स्वयं को व्यक्त करने का मार्ग खोज रही हो। योआकिम ने थोड़ा निकट आकर कोमल स्वर में कहा, “अन्ना... ऐसा मत करो।”

अन्ना ने एक मुस्कान लाने का प्रयास किया, यद्यपि उनकी आँखों में छिपा हुआ दुःख उस प्रयास को प्रकट कर रहा था। उन्होंने शांत स्वर में उत्तर दिया, *“योआकिम, मैं ठीक हूँ। आइए, हम उन्हें शुभकामनाएँ दें। शीघ्र ही वे ईश्वर से ऐसे अद्भुत वरदान प्राप्त करने वाली हैं। वे कितनी धन्य हैं!”*

वे समूह के पास पहुँचे, और महिलाओं की हँसी थम गई, उनकी नज़रें बेचैनी से अन्ना की ओर टिक गईं। अन्ना ने उन्हें स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ अभिवादन किया, हालाँकि उसके शब्द पूर्णतः सत्य और निष्कपट थे।

"रैचेल, तुम्हारा समय भी जल्द ही आने वाला है, और सुज़ाना का भी। तुम्हें क्या लगता है, इस बार दोनों को एक-एक बेटा और होगा? क्या मैं तुम्हारे लिए बेटियों के लिए प्रार्थना करूँ?"

तभी उन स्त्रियों में से एक ने अत्यंत कटु और निष्ठुर स्वर में उत्तर दिया, *"अन्ना, तुम्हें स्वयं के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।"*

वह संपूर्ण समूह अट्टहास कर उठा, और उनके स्वर वायु को चीरते हुए किसी पैनी छुरी की भांति प्रतीत हो रहे थे। पहली की क्रूरता से उत्साहित एक दूसरी महिला योआकिम की ओर मुड़ी।

"योआकिम, मेरी एक प्यारी छोटी बहन है। वह पूर्णतः यौवन संपन्न है और आपको वह संतान प्रदान करने में समर्थ है जिसकी आपको अभिलाषा है। हमारा विधान कहता है कि यदि पत्नी किसी ऊसर भूमि के समान बांझ हो जाए, तो आप नवीन पत्नी स्वीकार कर सकते हैं" ।

योआकिम का जबड़ा कस गया, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, उसने बड़े प्यार से अन्ना को उस समूह से दूर ले लिया। अन्ना के चेहरे पर छाई पीड़ा को देखकर उसका हृदय टूटा जा रहा था।

दिन का उजाला अब पूर्णिमा की ठंडी और चांदनी रात में बदल गया था। तारों भरे आसमान के नीचे नाज़रेथ का गाँव शांत सो रहा था। चाँद की रोशनी घरों की छाया बनाते हुए अंत में योआकिम और अन्ना के छोटे से घर पर आकर ठहर गई।

वे दोनों प्रार्थना में घुटने टेके हुए थे, उनके सिर झुके थे और हाथ भक्ति में जुड़े थे। कमरे में पूरी तरह शांति थी, बस उनकी धीमी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं जो अनुग्रह की सुगंध की तरह स्वर्ग की ओर उठ रही थीं। सबसे पहले योआकिम ने बड़े आदर के साथ बोलना शुरू किया। उसके शब्दों में उम्मीद और तड़प दोनों थी।

"हे *सर्वशक्तिमान पिता,* हम आने वाले मुक्तिदाता के लिए निरंतर प्रार्थना करते हैं। *वही, जो मानवता का उद्धार होगा। उनका 'शब्द' ही मनुष्य के जीवन का आधार बने। हे प्रभु, आपका प्रेम अपने बच्चों के लिए कितना महान है कि आप उनके अपराधों पर भी क्रोध को थामे रखते हैं। फिर भी, वे आपकी सामर्थ्य से नहीं डरते, और न ही वे आपकी महानता की महिमा का सम्मान करते हैं*।"

अन्ना की आवाज़ उसकी आवाज़ में मिल गई, नरम लेकिन उतनी ही भावुक। वर्षों से अनसुनी रही प्रार्थनाओं का भार उसके शब्दों में महसूस हो रहा था। "*हे सर्वशक्तिमान पिता, सर्व के प्रभु, मैं एक संतान को जन्म देने की अपनी प्रार्थना जारी रखती हूँ ताकि हम अपने धर्म के नियमों का सम्मान कर सकें। इस संतान को हम आपको समर्पित करेंगे। हम प्रार्थना करते हैं कि आपकी पवित्र इच्छा पूरी हो।*"

दीपक की टिमटिमाती रोशनी में उनकी छाया दीवार पर पड़ रही थी। उनकी प्रार्थनाएं अटूट विश्वास और समर्पण के साथ हवा में गूँजती

रहीं। उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर बहुत जल्द ऐसे तरीके से मिलने वाला था जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

अब योआकिम और अन्ना को संतान के लिए प्रार्थना करते हुए दस वर्ष बीत चुके थे। ऋतुएं बदल चुकी थीं और अब पूरा गाँव सर्दियों की शांति में लिपटा था। वह स्थान, जो कभी गर्मियों की गर्माहट से भरा था, अब ठंडा और शांत था। पेड़, पत्तों के बिना ठिठुरे हुए खड़े थे और धरती पाले से कठोर हो गई थी।

उनके साधारण घर के भीतर, बीतते वर्षों ने योआकिम और अन्ना पर अपनी छाप छोड़ी थी। उनके चेहरों पर समय की रेखाएं उभर आई थीं और उनके बाल चांदी की चमक जैसी सफेदी से भर गए थे, फिर भी उनका विश्वास अडिग रहा।

एक बार फिर वे प्रार्थना में घुटनों के बल झुके हुए थे, उनकी आवाज़ें एक साथ ऊपर उठ रही थीं, जो उनकी अटूट भक्ति का प्रमाण थी। लेकिन इस बार, जब वे प्रार्थना कर रहे थे, एक अचानक और तेजस्वी प्रकाश ने उस कक्ष को भर दिया और अपनी दिव्य चमक में उन दोनों को समा लिया। उनके सामने एक युवा और अत्यंत सुंदर पुरुष प्रकट हुआ, जिसका स्वरूप अलौकिक होने के साथ-साथ साक्षात भी था। वह स्वर्गदूत गब्रियल था, जिसका रूप ईश्वरीय प्रकाश से दमक रहा था और उसकी आवाज़ कोमल होने के साथ-साथ अधिकारपूर्ण भी थी।

"मैं गब्रियल हूँ, जो पवित्र त्रिमूर्ति द्वारा इस संदेश के साथ भेजा गया हूँ - तुम, योआकिम और अन्ना, जिन्होंने स्वयं को भक्तिमय सेवक सिद्ध किया है और जो मानवता की मुक्ति एवं मुक्तिदाता के आगमन के लिए निरंतर प्रार्थना करते रहे हो, तुम हमारे सामने आए हो और हमारी दया में तुम्हारी पुकार सुनी गई है।
इस प्रकार, तुम्हारी संतान के लिए की गई प्रार्थना भी स्वीकार कर ली गई है। हमारे दाहिने हाथ के अनुग्रह से, हम तुमसे यह प्रतिज्ञा करते हैं कि तुम्हें आशीष का फल प्राप्त होगा।

अन्ना, यद्यपि एक बांझ है, परंतु ईश्वरीय चमत्कार से एक पुत्री को गर्भ में धारण करेगी, जिसका नाम हम मरियम रखेंगे। वे स्त्रियों में धन्य

होंगी। सभी राष्ट्र उन्हें 'धन्य' के रूप में जानेंगे, क्योंकि प्रेम ने सर्वशक्तिमान के हृदय को कोमल कर दिया है और मनुष्यों के प्रति उनकी दया को शीघ्र कर दिया है। यह पुत्री अपने सभी कार्यों में और अपने पूरे जीवन में अद्भुत होगी। उनके बचपन से ही, उन्हें ईश्वर को समर्पित कर देना, जैसा कि तुमने प्रतिज्ञा की है। वे चुनी हुई, गौरवान्वित, शक्तिशाली और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होंगी। इस बालक के गर्भधारण पर सारा स्वर्ग और पृथ्वी आनंद मनाएगा।"

अन्ना के चारों ओर वह दिव्य प्रकाश और भी प्रखर हो गया, और गब्रियल उसकी ओर मुड़ा और निजी रूप से उससे बातें करने लगा। "*हम तुझमें एक परिपूर्ण कृति की रचना करेंगे, जो हमारी सर्वशक्तिमत्ता का उद्देश्य है और हमारे बच्चों के लिए निर्धारित पूर्णता का एक आदर्श तथा संपूर्ण सृष्टि का अंतिम मुकुट है। उनमें, जो पाप से मुक्त होंगी, हम वे सभी अनुग्रह और भलाई संचित करेंगे जो प्रथम मनुष्य को दी गई थीं और फिर खो गईं। केवल तू ही यह जानेगी कि मरियम आदम की संतानों के लिए जीवन और मोक्ष का द्वार होंगी।*"

इतना कहते ही, स्वर्गदूत गब्रियल ओझल हो गया, और उस दंपत्ति के चारों ओर फैला वह प्रकाश भी धीरे-धीरे धुंधला हो गया, जिससे वे दोनों एक विस्मित कर देने वाले मौन में रह गए।

शीत ऋतु की विदाई हुई और उसकी जगह उत्तर-ग्रीष्म की कोमल गर्माहट ने ले ली।

अन्ना, जिसका गर्भ अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा था, अपने बगीचे में काम कर रही थी; उसके हाथ बड़ी सावधानी से पौधों की देखभाल कर रहे थे। उसके ऊपर हवा में एक क्षणभंगुर सफेदी छाई हुई थी, जो एक अस्पष्ट लेकिन महसूस की जा सकने वाली उपस्थिति जैसी लग रही थी। अन्ना के चेहरे पर अपार आनंद की आभा थी और वह धीरे-धीरे गुनगुना रही थी। वहीं से गुज़रती हुई एक पड़ोसन उसे अभिवादन करने के लिए रुकी।

"*अब अधिक समय नहीं बचा है, है ना अन्ना?*" उस महिला ने उत्सुक और गर्म स्वर में पूछा।

अन्ना मुस्कुराई और उसने अपना एक हाथ अपने उभरे हुए उदर पर रखते हुए कहा, "*गर्मियों के खत्म होने में अभी भी दो महीने बाकी हैं।*"

"*और तुम्हें क्या लगता है? लड़का? या लड़की?*"

अन्ना की आँखों में एक चमक सी आ गई और वह धीरे से हँसते हुए बोली, "*मेरी उम्र में एक चमत्कार!*"

दोनों स्त्रियाँ एक साथ हँस पड़ीं, और उनकी आवाज़ें हवा में गूँज रही थीं।

अध्याय दो
नर्क की गहराइयाँ

पृथ्वी के बहुत नीचे, नर्क की गहराइयाँ एक निरंतर और अतृप्त क्रोध से उबल रही थीं। वहाँ की ज्वालाएँ जीवित पशुओं के समान गरज रही थीं, जिनकी अग्नि-जिह्वाएँ उन नुकीली और काली चट्टानों को चाट रही थीं, जिससे ऐसी भयानक और कांपती हुई परछाइयाँ बन रही थीं जो तड़पती हुई आत्माओं के समान नृत्य कर रही थीं। वहाँ की भूमि ताप से स्पंदित हो रही थी, जो फटी हुई और पिघली हुई थी, और जिससे तरल अग्नि की नदियाँ बह रही थीं जिन्होंने उस अगाध कुंड के बीच अपना मार्ग बना लिया था। वायु गंधक की तीखी दुर्गंध और विलाप की गूँज से भरी हुई थी, जिसका शोक उस नारकीय विस्तार के कण-कण में बुना हुआ था। ज्वालाओं के बीच अंधकार छाया हुआ था, जो केवल प्रकाश का अभाव नहीं, बल्कि एक निगलने वाली और दम घोंटने वाली शून्यता थी, जो उन शापित आत्माओं को किसी अदृश्य हाथ के समान दबा रही थी। वह अनंत यातना का स्थान था, जहाँ समय अपना अर्थ खो चुका था और निराशा उस स्थान की वायु में किसी घोंटने वाले कोहरे की भांति लिपटी हुई थी, जो उन सभी को जकड़ लेती थी जो उस गर्त में गिरने का साहस करते थे।

लुसिफ़र, उसका विशाल और भयावह रूप, बेचैनी से इधर-उधर टहल रहा था। अचानक, उसने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और एक हृदय-विदारक गर्जना की, जिसका स्वर उस अथाह कुंड में गूँज उठा। उसने अपना हाथ फैलाया, उसमें झाँका, और अन्ना और उसकी पड़ोसन का हँसता हुआ दृश्य उभरा। उसने देखा कि अन्ना ने अपना हाथ अपनी गर्भवती पेट पर रखा हुआ था, उसकी खुशी साफ़ झलक रही थी।

लुसिफ़र का हाथ मुट्ठी में बदल गया, और उसने एक गला फाड़ने वाली कराह निकाली, उसका क्रोध साफ़ झलक रहा था।

बाद में, अपने घर के भीतर, अन्ना खिड़की के समीप बैठी हुई थी, और उसकी उंगलियाँ कुशलता से एक नन्हे बालक के कोमल वस्त्र की सिलाई कर रही थीं। दोपहर का सुनहरा प्रकाश उन लकड़ी के झरोखों से छनकर आ रहा था, जिससे उस कच्ची भूमि पर उष्ण और चितकबरी आकृतियाँ बन रही थीं। एक मंद समीर ने उसकी गोद में रखे वस्त्र को धीरे से हिलाया,

जिसमें मेंहदी और ताजी बनी हुई ब्रेड की हल्की सुगंध समाहित थी। गाँव के जीवन की वह मंद गुनगुनाहट बाहर से भीतर की ओर बह रही थी, दूर से आती कुछ ध्वनियाँ, कभी किसी बकरी का मिमियाना, परंतु इन दीवारों के भीतर सब कुछ शांत था, मानो वह एकांत भक्ति का एक पवित्र आश्रयस्थल हो।
तत्पश्चात, बिना किसी पूर्व सूचना के, वहां की वायु परिवर्तित हो गई। कक्ष की संपूर्ण उष्णता लुप्त हो गई और उसका स्थान एक अप्राकृतिक शीतलता ने ले लिया, जिससे उसकी त्वचा सिहर उठी। वह कोमल प्रकाश धुंधला पड़ गया, मानो स्वयं सूर्य भय से पीछे हट गया हो। उसके हृदय पर एक भारी बोझ सा आ गया, जो अत्यंत सघन और दम घोंटने वाला था। टिमटिमाता हुआ तेल का दीपक कांपने लगा और उसकी लौ छोटी होने लगी, जबकि कक्ष के सबसे दूरस्थ कोने में छाया से भी अधिक गहरा अंधकार एकत्रित होने लगा।

और तभी, वह वहां उपस्थित था।

लुसिफ़र प्रकट हुआ, जिसकी उपस्थिति ने उसके चारों ओर के वातावरण को विकृत कर दिया था; वह भयानक सौंदर्य और अत्यंत भय से युक्त एक आकृति थी। उसकी आँखें सुलगते हुए अंगारों के समान उस पर गड़ी हुई थीं, और यद्यपि उसका मुखमंडल एक स्वर्गदूत की पूर्णता के साथ गढ़ा गया था, फिर भी वह किसी अधिक गहरी वस्तु से कलंकित था, एक प्राचीन क्रोध और एक ऐसी करुणा जो विकृत होकर क्रूरता बन गई थी। उसके चारों ओर की वायु एक अदृश्य शक्ति से स्पंदित हो रही थी, जो उस पर दबाव डाल रही थी और उस शांति का गला घोंटने का भय दिखा रही थी, जो कुछ ही क्षण पूर्व उस कक्ष में व्याप्त थी। अन्ना की उंगलियों से सुई छूटकर गिर गई, जिसकी उसे सुध न रही, क्योंकि वह स्वयं अंधकार के उस साक्षात् स्वरूप को एकटक निहार रही थी।

उसका रूप जानवर से ज़्यादा मानवीय था, हालाँकि उसकी उपस्थिति रंचमात्र भी कम भयावह न थी। उसने अन्ना को धिक्कारना आरम्भ किया और उसके स्वर से द्वेष टपक रहा था।

"स्वयं को देखो, एक ऐसी वृद्ध और मुरझाई हुई स्त्री जो गर्भवती है। और योआकिम तो तुमसे भी अधिक आयु का है। यह उसका नहीं है, है ना? ओ व्यभिचारिणी! तू मुझे प्रसन्न करती है। तू, जो इतनी भक्ति से ईश्वर से प्रार्थना करती है, अपने गर्भ में अपना पाप लिए हुए है।

अन्ना घुटनों के बल गिर गई और रोने लगी, तथा उसने अपने अजन्मे बालक की रक्षा हेतु सहज रूप से अपने हाथों से अपने उदर को ढक लिया। इससे पूर्व कि लुसिफ़र एक भी शब्द और कह पाता, एक आकस्मिक दिव्य ज्योति ने उस दमनकारी अंधकार को छिन्न-भिन्न कर दिया। पलक झपकते ही, दो स्वर्गीय दूत उतरे, जिनकी उपस्थिति ने उस कक्ष को उस तेज से आलोकित कर दिया जिसने उस पतित स्वर्गदूत के स्वरूप से रिसते हुए अंधकार को पराजित कर दिया।

एक स्वर्गदूत अपार वेग के साथ नीचे की ओर आया, जिसके विशाल पंख शुद्ध प्रकाश की ढाल के समान फैल गए, जिससे उसने अन्ना को दैवीय सुरक्षा के घेरे में सुरक्षित कर लिया। उसके चारों ओर की वायु, जो कुछ ही क्षण पूर्व भय से बोझिल थी, अब एक अलौकिक उष्णता से गूँजने लगी, एक ऐसी सुखदायक शक्ति, जिसने बुराई की उस दम घोंटने वाली पकड़ को पीछे धकेल दिया।
दूसरा दूत अटल भाव से लुसिफ़र के सम्मुख खड़ा हो गया, जिसका व्यक्तित्व अटूट अधिकार और सामर्थ्य से ओत-प्रोत था। उसकी आँखें स्वर्ग की अग्नि के समान प्रज्वलित थीं और उसके वस्त्र पिघले हुए स्वर्ण की भाँति चमक रहे थे। बिना किसी संकोच के, उस दूत का स्वर गूँज उठा, जो अत्यंत गंभीर और प्रभावशाली था, और जिसका प्रत्येक शब्द सर्वशक्तिमान के प्रताप से स्पंदित हो रहा था।

"तुम इस घर में फिर कभी प्रवेश नहीं करोगे," देवदूत ने घोषणा की, उसकी आवाज़ से हवा तक काँप उठी। *"क्या तुम नहीं देखते कि अन्ना की रक्षा हम, प्रभु के सेवकों, द्वारा की जा रही है। चले जाओ, क्योंकि तुम्हारा यहाँ कोई हक़ नहीं है!"*

उस घर की दीवारें भी मानो उस दैवीय आदेश के भार से कांपने लगीं। वह अंधकार किसी घायल सर्प की भाँति फुफकारते हुए पीछे हट गया, और लुसिफ़र का वह विशाल स्वरूप, जो पहले अत्यंत प्रभावी लग रहा था, अब इस अचल शक्ति के सम्मुख डगमगाने लगा।

लुसिफ़र की आँखें क्रोध से सिकुड़ गईं और उसके स्वर में विष घुला हुआ था। "वह ऐसी तुच्छ स्त्री की रक्षा क्यों करता है जो एक अवैध संतान को धारण किए हुए है? *वह अपने भक्तों के लिए सबसे घटिया लोगों को*

ही चुनता है।"

देवदूत की आवाज़ दृढ़ थी। "*जाओ और जान लो कि अन्ना कभी अकेली नहीं है।*"

लुसिफ़र का रूप धुंधला होने लगा, लेकिन उसकी आवाज़ गूँजती रही, एक भयावह प्रतिध्वनि की तरह। "*और मैं देख रहा हूँ। मैं हमेशा देख रहा हूँ*"

जैसे ही उसकी उपस्थिति लुप्त हुई, उसका स्वर उस अगाध कुंड में विलीन हो गया, जो उसके निरंतर द्वेष का एक भयानक स्मरण था। "ऐसी स्त्री मुझे इतना विचलित क्यों करती है? यदि आवश्यकता हुई, तो मैं उसके जीवन का अंत कर दूँगा। अपनी शांति पुनः प्राप्त करने के लिए मुझे जो कुछ भी करना पड़े, मैं करूँगा।"

अध्याय तीन
मरियम का जन्म

दो महीने बाद, नाज़रेथ का गाँव पूर्णिमा की कोमल किरणों में नहाया हुआ था, जिसकी रोशनी परिदृश्य पर लंबी परछाइयाँ डाल रही थी। रात शांत थी, हवा में भोर के वादे की ताजगी थी। गाँव के ऊपर की पहाड़ी पर, योआकिम प्रार्थना के लिए घुटनों के बल झुका था, उसकी परछाई चाँदनी से नहाए आसमान के सामने साफ़ नज़र आ रही थी। उसने अपने हाथ जोड़े हुए थे, सिर झुका हुआ था, और वह चुपचाप अपनी कृतज्ञता और प्रार्थनाएँ व्यक्त कर रहा था।

चाँद की कोमल किरणें उसके छोटे से पत्थर के घर के एक कमरे में दाखिल हो रही थीं, जहाँ अन्ना प्रसव की पीड़ा से तड़प रही थीं। फिर भी, प्रसव की सामान्य चीखों और संघर्षों के विपरीत, कमरा एक अलौकिक शांति से भरा था। अन्ना सीधी बैठी थीं, उनका चेहरा शांत था, मानो प्रसव की पीड़ा से अप्रभावित हों। दाइयाँ उस कक्ष में इधर-उधर आ-जा रही थीं, और उनके चेहरों पर विस्मय और असमंजस का मिला-जुला भाव था।

"*अन्ना,*" एक दाई ने आश्चर्य भरी आवाज़ में फुसफुसाया, "*मैंने ऐसा कुछ कभी नहीं देखा। ज़रा सा भी दर्द नहीं। अजीब है, है ना, बहन?*"

दूसरी दाई ने धीरे से हँसकर कहा, हालांकि उसकी आँखें हैरानी से भर गई थीं। "*शायद यह उसकी उम्र का असर है। अगर मुझे पता होता कि यह इतना आसान होगा, तो मैं खुद ही इंतज़ार कर लेती। देखो, बच्ची बाहर आ रही है।*"

अन्ना ने, जो पूर्णतः स्थिर और शांत थी, अपने हाथ आगे बढ़ाए और दाई ने उस नवजात शिशु को धीरे से उसकी गोद में रख दिया। उस नवजात बालिका को उसके आगमन के लिए तैयार किए गए कोमल मलमल के वस्त्रों में लपेटा गया था, और उसके सुकोमल शरीर को अत्यंत सावधानी से संभाला गया था। किंतु, जैसे ही वह अपनी माता की गोद में लेटी, वहां साधारण से परे कुछ घटित हुआ; उसकी त्वचा से एक ऐसा प्रकाश फूट रहा था जो इस जगत का नहीं था, एक मृदु और स्वर्गीय आभा जिसे केवल अन्ना और स्वर्गदूत ही देख सकते थे। वह उषाकाल की प्रथम लज्जा के समान चमक रही थी, जो सूक्ष्म होते हुए भी अकाट्य थी; यह उस बालिका के जीवन पर दैवीय स्पर्श की एक शांत घोषणा थी।

दाइयाँ, यद्यपि उस स्वर्गीय आभा से अनभिज्ञ थीं, किंतु वे कुछ असाधारण अनुभव कर रही थीं, और विस्मय के साथ एक-दूसरे को निहारने लगीं। उनके हाथ, जो नए जीवन के आगमन की थकावट और स्पंदन के अभ्यस्त थे, उस बालिका को मौन श्रद्धा के साथ देखते हुए थोड़े कांपने लगे।

आखिरकार, पहली दाई ने अपनी आवाज़ पाई, हालांकि वह मुश्किल से एक फुसफुसाहट से अधिक थी। "*एक लड़की!*" वह बोली, उसकी आवाज़ में आश्चर्य झलक रहा था। "*अन्ना, तुम्हारी एक बेटी है। उसे देखो, कितनी नाज़ुक, बेदाग़। कितनी परिपूर्ण।*"

दूसरी दाई ने सिर हिलाया और उसकी उंगलियाँ धीरे से उस शिशु के कोमल कपोलों को छूने लगीं। उस कक्ष में एक मौन आदर का भाव छा गया, और वहां की वायु किसी ऐसी अदृश्य किंतु गहरी अनुभूति से भर गई जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन था। उन दोनों स्त्रियों में से कोई भी यह नहीं जानती थी कि स्वयं स्वर्ग इस शिशु के जन्म के समय उपस्थित रहने के लिए झुक आया था, जिसे मानवता की मुक्ति को धारण करने के लिए नियत किया गया था।

अन्ना ने उस बालिका को अपने हृदय से लगा लिया, और उसका मन उस प्रेम से भर उठा जो शब्दों की सीमा से परे था। वह कक्ष उस नन्ही बालिका के हृदय से प्रस्फुटित होने वाले एक कोमल प्रकाश से आलोकित प्रतीत हो रहा था, एक दैवीय उपस्थिति, जिसने उस स्थान को शांति और उष्णता से भर दिया था।

दूसरी दाई मुस्कुराई, उसकी आवाज़ हल्की लेकिन प्रशंसा से भरी थी। "*खैर, लगता है तुम्हें हम जैसी लोगों की ज़रूरत नहीं है। तुमने बहुत अच्छी तरह से काम संभाल लिया, अन्ना, मेरी कल्पना से भी बेहतर। चलो, बहन, अब हम नई माँ को उसके बच्चे के साथ अकेला छोड़ दें। ईश्वर ने आखिरकार तुम्हें आशीर्वाद दिया है। शुभ रात्रि, अन्ना।*"

जैसे ही दाइयों ने जाने के लिए दरवाज़ा खोला, भोर की पहली किरणों ने आसमान को गुलाबी और सुनहरे रंगों से रंग दिया। दूसरी दाई धीरे से हँसी। "*आपका मतलब है शुभ प्रभात। चलो यह अच्छी खबर योआकिम को भी सुनाते हैं!*"

उनके पीछे द्वार बंद हो गया, और वह कक्ष एक बार फिर उगते हुए

सूर्य के कोमल प्रकाश में नहा गया। अन्ना अपनी नवजात पुत्री के साथ अकेली बैठी थी, जहाँ खिड़की की झिर्रियों से छनकर आती सूर्य की किरणें उस बालिका के नन्हे स्वरूप को आलोकित कर रही थीं। अन्ना ने धीरे से अपने शिशु को देखा, उसकी सुकोमल उंगलियों और नन्हे पैरों को छुआ, और उस चमत्कार पर विस्मित होती रही जिसे उसने अपनी गोद में थाम रखा था। उस शिशु के हृदय से निकलने वाला वह प्रकाश अब और भी प्रज्वलित होने लगा था, जिससे वह संपूर्ण कक्ष एक पवित्र आभा से भर गया।

भावनाओं से अभिभूत होकर, अन्ना ने बच्चे को अपने सीने से लगा लिया और घुटनों के बल बैठ गई, उसकी आवाज़ कृतज्ञता और विस्मय से काँप रही थी। *"हे प्रभु, समस्त जीवन के सृजनकर्ता और सर्वशक्तिमान, आपने अपनी अनंत बुद्धि से मुझे यह संतान प्रदान की है। आपका धन्यवाद। परंतु अब मैं आपसे पूछती हूँ, मैं उसकी देखभाल कैसे करूँ जिसे केवल आपने ही 'शाश्वत शब्द' को धारण करने के योग्य समझा है? मैं उन पवित्र माता को कैसे संभालूँ, जो आपके पुत्र की माता होंगी?"*

तभी एक स्वर, जो कोमल होते हुए भी अधिकार से पूर्ण था, उस कक्ष में गूँज उठा। *"तुम बाहरी रूप से उसकी देखभाल करोगे जैसे माँ अपने बच्चे की करती है, बिना किसी श्रद्धा-प्रदर्शन के, परन्तु इस श्रद्धा को भीतर ही बनाए रखना।"*

अचानक, कमरा एक ऐसी दिव्य चमक से भर गया जो सांसारिक समझ से परे थी। स्वर्गदूतों का एक समूह प्रकट हुआ, उनके तेजस्वी रूप आग और मोती की तरह झिलमिला रहे थे, जो उस साधारण कक्ष के हर कोने को दिव्य प्रकाश से भर रहे थे। उनके वस्त्र तरल सोने की तरह लहरा रहे थे, उनके पंख प्रकाशमान वैभव में फैल रहे थे, जो दिव्य अनुग्रह की फुसफुसाहट से हवा को तरंगित कर रहे थे।

तत्पश्चात, मानो साक्षात् स्वर्ग ही समीप आ गया हो, एक मधुर स्वर लहरा उठी, एक ऐसा स्तुति गान जो इतना शुद्ध और इतना अतीव सुंदर था कि उस घर की दीवारें भी उसकी गूँज से झंकृत होने लगीं। स्वर्गदूतों के स्वर पूर्ण सामंजस्य में एक साथ मिल गए; यह उस नवजात बालिका, मरियम, के प्रति आनंद और आदर से भरा हुआ एक स्तुति गान था। यह ध्वनि केवल नश्वर कानों के लिए नहीं थी, बल्कि परलोक के लोकों के लिए भी थी,

आकाश के प्रति यह एक उद्घोषणा थी कि ईश्वर द्वारा चुनी हुई वह पवित्र आत्मा इस संसार में पदार्पण कर चुकी है।

अन्ना ने, जब अपनी पुत्री को अपनी गोद में लिया हुआ था, अनुभव किया कि वह संगीत उसे किसी उष्ण प्रकाश की भांति चारों ओर से घेरे हुए है और उसका हृदय विस्मय से भर उठा। वहां की वायु इस प्रकार चमकने लगी मानो स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का पर्दा अत्यंत सूक्ष्म हो गया हो; और उस पवित्र क्षण में उसे ज्ञात हो गया कि उसकी संतान धन्य है और उसे एक ऐसी नियति के लिए पृथक किया गया है जो कल्पना से भी परे है।

उस शिशु के हृदय से प्रस्फुटित होने वाला प्रकाश और भी प्रज्वलित हो गया, जो एक माध्यम बन गया जिसके द्वारा ईश्वर के शब्द सीधे उस बालिका तक पहुँच रहे थे, जो उन सभी बातों को समझ रही थी जो कही जा रही थीं।

ईश्वर की वाणी गूँजी, "*मेरी प्रिय, पृथ्वी पर 'शब्द' तुझे अपनी माता के रूप में प्राप्त करेंगे, बिना किसी पिता के; ठीक वैसे ही जैसे स्वर्ग में उनका एक पिता है, बिना माता के।*"

हमारी ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार वह समय आ चुका है कि हम उस ज्योति को, उस मानवरूपी प्राणी को जीवन प्रदान करें, जो पाप से मुक्त है और जो उस सर्प के मस्तक को कुचल डालेगी। वह घड़ी निकट है, जो मरणशीलों के लिए अत्यंत धन्य है, जिसमें हमारे देवत्व के भंडार खोल दिए जाएँगे और स्वर्ग के द्वार उन्मुक्त कर दिए जाएँगे। अब मानव जाति स्वयं को उद्यत करे, क्योंकि शीघ्र ही उन्हें वे गुरु, वे भाई और वे मित्र प्राप्त होंगे, जो ईश्वर के वे मेमने होंगे जो संसार के पाप हर लेंगे।"

तब, गब्रियल की ओर मुड़कर, ईश्वर ने आज्ञा दी, "*लिम्बो की उन गुफाओं में जाओ। हनोक, एलियास, उन पवित्र पूर्वजों और धर्मियों से, जो वहां सहस्राब्दियों से प्रतीक्षा कर रहे हैं, कह दो कि मानवता की मुक्ति अब अत्यंत निकट है।*"

ईश्वर की माता मरियम का जन्म 8 सितंबर, ईसा पूर्व 14 को हुआ था। यही वह क्षण था, जिसने मनुष्य के उद्धार की योजना को पूर्णता प्रदान की।

इतना कहकर गैब्रियल अदृश्य हो गया, उसका तेजस्वी स्वरूप अदृश्य में विलीन हो गया, जैसे कोई तारा भोर के विशाल विस्तार में धुंधला हो रहा

हो।
वह कक्ष, यद्यपि पुनः शांत हो गया था, फिर भी उनकी उपस्थिति की अवशिष्ट उष्णता से स्पंदित हो रहा था। अन्ना, जो अब अपनी नवजात पुत्री के साथ अकेली थी, मरियम को एकटक निहारने लगी और उसका हृदय प्रेम, विस्मय और श्रद्धा के एक अवर्णनीय मिश्रण से भर उठा।

किंतु, वह वास्तव में अकेली नहीं थी।

बाकी के स्वर्गदूत पास ही रहे, उनकी अलौकिक किरणें कक्ष में एक कोमल प्रकाश बिखेर रही थीं। हालांकि वे बोले नहीं, पर उनकी उपस्थिति एक मौन घोषणा थी, सुरक्षा का एक ऐसा वचन जो इस क्षण, इस रात, और स्वयं समय से भी परे तक फैला रहेगा। वे अदृश्य पहरेदारों की तरह खड़े थे, उस बच्चे के रक्षक, जिसका नाम एक दिन युगों-युगों तक गूँजेगा। एक हल्की हवा कमरे में बही, जो अपने साथ शांति का एहसास, इस बात का एक शांत आश्वासन लेकर आई कि मरियम कभी बिना सुरक्षा के नहीं चलेगी।

अध्याय चार
मरियम की शिक्षा

योआकिम और अन्ना के विनम्र घर में, वातावरण स्नेह और प्रेम से भरा था। यह जोड़ा, जो अब नवजात मरियम के माता-पिता बन गए थे, अपने बच्चे पर कोमल स्नेह लुटा रहे थे।
योआकिम, जो अपनी पुत्री की दैवीय नियति से अनभिज्ञ था, उसे अपनी गोद में वैसे ही थामता था जैसे कोई भी स्नेही पिता थामता है। यद्यपि माता मरियम जन्म से ही बुद्धि और वाणी की शक्ति से संपन्न थीं, फिर भी उन्होंने अपने माता-पिता के सम्मुख इसका कोई प्रदर्शन नहीं किया। इसके स्थान पर, वे उनके प्रेम का उत्तर अपनी मुस्कुराहटों और कोमल स्पर्श से देती थीं; उनके नन्हे हाथ योआकिम के मुखमंडल तक पहुँचते या उसकी उंगलियों को थाम लेते थे।

रात्रि की उस शांति में, जब उनके माता-पिता सो रहे होते थे, मरियम घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करती थीं और उनके होंठ मौन रूप से हिलते थे मानो वे परमात्मा से संवाद कर रही हों। जैसे-जैसे वे बड़ी हुईं और उन्होंने चलना आरम्भ किया, वे अपनी माता और पिता के हाथों को थाम लेती थीं और अपनी आयु से कहीं अधिक शांत विवेक के साथ उनका मार्ग-दर्शन करती थीं। वे उनके हाथों को केवल तभी छोड़ती थीं जब उन्हें किसी तितली की ओर अपनी नन्ही उंगलियाँ बढ़ानी होती थीं, जो तितली उन पर आकर बैठ जाती थी और उसके कोमल पंख उनके कपोलों को छू जाते थे।
जब अन्ना नन्ही मरियम को गाँव की घुमावदार गलियों से लेकर निकलती थी, तो वह बालिका, जिसकी आयु अभी कठिनता से तीन वर्ष की थी, किसी ज़रूरतमंद को देखकर प्रायः रुक जाती थीं। अपनी सुकुमार आयु के विपरीत एक शांत दृढ़ निश्चय के साथ, मरियम धीरे से अपना कोमल शाल उतारती थीं और बड़ी सावधानी से उसे उस दुर्बल और रुग्ण व्यक्ति के कंधों पर ओढ़ा देती थीं जो शीतल भूमि पर सिमटा हुआ होता था। उनके नन्हे हाथ एक विचारशील करुणा के साथ चलते थे, मानो वे अपने इस छोटे से कार्य के महत्व को समझती हों। भोजन के समय, मरियम अपने अल्प भोजन के साथ बैठती थीं और उनकी बड़ी-बड़ी निष्पाप आँखें उन लोगों को निहारती थीं जिनके पास कुछ न था। बिना किसी संकोच के, वे अपने भोजन को विभाजित कर देती थीं, स्वयं के लिए केवल सबसे छोटा ग्रास लेती थीं और शेष भाग उन भूखी

आत्माओं को अर्पित कर देती थीं जो उनके मार्ग में आती थीं। उनके ये निस्वार्थ कार्य, जो इतने शुद्ध और विनम्र थे, उन्हें देखने वालों के हृदयों पर एक अमिट छाप छोड़ देते थे।

गरीबों को दान देते समय, वह उनके हाथों को चूमती और, जब संभव होता, तो उनके पैरों को भी, और उनकी आत्माओं के लिए पूरी लगन से प्रार्थना करती। वह फुसफुसाती, "*हे प्रभु, ज़रूरतमंदों पर दया और कृपा करो*।"

कई बार, अन्ना ने अपनी नन्ही बालिका को घुटनों के बल प्रार्थना में लीन पाया, जिनके हाथ कसकर जुड़े हुए थे और मुखमंडल स्वर्ग की ओर उठा हुआ था। मरियम की प्रार्थनाएँ विनम्रता और भक्ति से भरी होती थीं। "*हे सर्वोच्च ईश्वर*," वह कहती, "*मैं आपकी उस योग्यता के साथ स्तुति नहीं कर सकती जिसके आप पात्र हैं। आपकी महिमा और वैभव के सम्मुख मैं एक किरण के समान भी नहीं हूँ। हे मेरे प्रभु, मुझे आपकी भली-भांति सेवा करनी है, और मैं जानती हूँ कि शीघ्र ही वह समय आएगा जब मुझे इस घर को छोड़कर जाना होगा। मैं आपके गृह में प्रवेश करने और आपकी सेवा के लिए पूर्णतः तत्पर और व्याकुल हूँ। मैं आपसे विनती करती हूँ कि मेरे माता-पिता के हृदयों को अपनी पवित्र इच्छा पूर्ण करने की प्रेरणा दें, ताकि मैं उस कार्य को आरम्भ कर सकूँ जो आपने मुझे सौंपा है।*"

उसी समय, अन्ना को एक दिव्य दर्शन प्राप्त हुआ। उसने स्वयं को पुनः मरियम के गर्भाधान के उसी क्षण में पाया, जहाँ वह घुटने टेके बैठी थी और स्वर्गदूत गाब्रिएल ईश्वर का संदेश सुना रहे थे। तत्पश्चात, उसने स्वयं को अपनी संतान को मंदिर की ओर ले जाते हुए देखा, जहाँ मरियम को रहना था और पवित्र पुरुषों एवं स्त्रियों द्वारा शिक्षा प्राप्त करनी थी। योआकिम को भी वही दर्शन प्राप्त हुआ। उन दोनों ने मिलकर यह समझ लिया कि अब उन्हें क्या करना है।

वह दिव्य दर्शन वास्तविकता में परिवर्तित हो गया। योआकिम और अन्ना यरूशलेम की गलियों से होकर चलने लगे और मरियम उनके मध्य में थीं, जिनका नन्हा हाथ उन दोनों के हाथों में था। जैसे ही मंदिर दिखाई दिया, मरियम ने उनके हाथों को छोड़ दिया और स्थिर एवं सुदृढ़ कदमों के साथ आगे बढ़ने लगीं। उन्होंने उस विशाल द्वार में प्रवेश किया और घुटने टेककर प्रभु को एक अत्यंत भक्तिपूर्ण और उत्साहपूर्ण प्रार्थना अर्पित की। योआकिम ने प्रार्थना की, और उसका स्वर दुःख से भारी था,

"हे सर्वशक्तिमान प्रभु, अत्यंत दुःख के साथ हम वही कर रहे हैं जो आपने माँगा है। हम इस बालिका को आपको लौटाते हैं। हमारी पुत्री, जो आपकी पुत्री है।"

अन्ना का हृदय भी वेदना से भर उठा जब उसने अपनी मौन प्रार्थना जोड़ी, *"हे मेरे प्रिय प्रभु, वह आपकी संतान है और वह आपके 'शब्द' को उसी प्रकार आगे ले जाएगी जैसा आपने नियत किया है। इतनी पवित्रता और इतनी गहरी विनम्रता, जो इस नन्हे से प्राणी में स्पष्ट दिखाई देती है, मैंने पहले कभी नहीं देखी। मैं उसे आपको लौटाती हूँ और प्रार्थना करती हूँ कि मैंने उसे उसी प्रकार माना है जैसा आपने मुझे निर्देशित किया था।"*

मरियम ने भी मौन रहकर प्रार्थना की, *"मेरे परमप्रिय पिता, मैं एक साथ शोक और हर्ष दोनों का अनुभव कर रही हूँ। क्योंकि मैं उन दो प्रिय और कोमल जनों को छोड़ रही हूँ कि मेरा हृदय घायल हुआ जा रहा है। फिर भी, यह उल्लास से धड़क रहा है, क्योंकि अब मैं आपकी वैसी सेवा करना सीखूँगी जिसके आप सर्वथा योग्य हैं।"*

तभी ईश्वर की वाणी उस स्थान में गूँज उठी, जो अत्यंत कोमल किंतु आज्ञाकारी थी, *"आओ, मेरी प्रिय, मेरे मंदिर में आओ, और वह खोजो जिसकी तुम्हारी आत्मा को इतनी अभिलाषा है।"*

मंदिर के प्रवेश द्वार की ओर पंद्रह सीढ़ियाँ जाती थीं। एक रब्बी उन्हें लेने के लिए नीचे आए और उन्होंने मरियम का हाथ थामकर उन्हें प्रथम सीढ़ी पर पहुँचाया। उनकी अनुमति पाकर, मरियम मुड़ीं और योआकिम तथा अन्ना के सम्मुख घुटनों के बल बैठ गईं। उन्होंने उन दोनों के हाथों को थाम लिया, उन्हें चूमा और अपनी आँखें मूंदकर उन हाथों को अपने मुखमंडल के दोनों ओर रख लिया। उनके माता-पिता की आँखों से अश्रुधारा बह निकली, परंतु कोई शब्द नहीं कहा गया। उन्हें छोड़कर, मरियम मुड़ीं और बिना किसी सहायता के अथवा पीछे मुड़कर देखे बिना, शेष सीढ़ियाँ चढ़ गईं। वे स्वर्गदूत, जो उनके जन्म से ही उनके साथ थे, उनके साथ-साथ उन सीढ़ियों पर चढ़ने लगे। तत्पश्चात, उन सभी के पीछे मंदिर के द्वार बंद हो गए।

अध्याय पाँच

मंदिर

मंदिर के भीतर, महापुजारी सिमोन, मरियम को भविष्यद्वक्ति अन्ना के पास ले गए, जो उनकी शिक्षिकाओं में से एक थीं और जिन्हें प्रभु ने मरियम के दैवीय विधान के विषय में पहले ही जागृत कर दिया था। सिमोन ने उस स्त्री से कहा:

"*बहन अन्ना, मैं तुम्हारे पास नाज़रेथ के योआकिम और अन्ना की पुत्री मरियम को लाया हूँ।*"

मरियम घुटनों के बल गिर गईं और उन्होंने अन्ना के हाथ को चूमा। "*मैं निवेदन करती हूँ कि मुझे अपने पवित्र मार्गदर्शन में लें। मैं ईश्वर के घर में मेरे प्रवेश के इस दिन आपका आशीर्वाद मांगती हूँ।*"

अन्ना ने स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ कहा, "*मेरी पुत्री, तुम मुझमें एक सहायक माता को पाओगी। मैं पूरी सावधानी के साथ तुम्हारी और तुम्हारी शिक्षा की देख-रेख करूँगी। आओ, मैं तुम्हें वह स्थान दिखाती हूँ जहाँ तुम विश्राम करोगी और उन अन्य कन्याओं से तुम्हारा परिचय कराती हूँ जो यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आई हैं।*"

वे एक संकीर्ण गलियारे से होकर एक बड़े कक्ष में पहुँचे, जहाँ पाँच से तेरह वर्ष की आयु की कई बालिकाएँ मेजों के चारों ओर एकत्रित होकर पवित्र शास्त्र का पाठ कर रही थीं। अन्ना और मरियम के प्रवेश करते ही वे सभी उठ खड़ी हुईं। मरियम उन सभी के पास गईं, उनके हाथों को थामा और उन्हें चूमा। "*मैं आप सभी से विनती करती हूँ कि जो आप जानती हैं, वह मुझे भी सिखाएं। मुझे अपना आशीर्वाद दें और मुझे अपनी सेवा करने की अनुमति दें ताकि मैं आप जैसा बनना सीख सकूँ।*"

एक बड़ी आयु की कन्या ने मरियम का हाथ थामा और उन्हें खड़ा किया। अन्य बालिकाओं ने उन्हें घेर लिया और बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया।

उस रात्रि के उत्तरार्ध में, अन्ना ने मरियम को सोने की तैयारी में सहायता की। जब अन्ना ने उन्हें चादर ओढ़ा दी और उनके माथे को चूम लिया, तब मरियम ने उनके जाने की प्रतीक्षा की और फिर चुपके से अपने बिस्तर से नीचे उतर आईं। वे भूमि पर दंडवत लेट गईं और फर्श को चूमने लगीं।

"*धन्यवाद, मेरे प्रभु, मुझे अपने घर में आमंत्रित करने और मेरा स्वागत*

करने के लिए आपका धन्यवाद। हे पृथ्वी, मुझे सहारा देने और इस पवित्र स्थान पर खड़े होने की अनुमति देने के लिए तुम्हारा धन्यवाद। क्योंकि मैं इस पर चलने और रहने के योग्य भी नहीं हूँ।"

तब उसने अपने स्वर्गदूतों की ओर मुड़कर कहा, "*सर्वशक्तिमान के स्वर्गीय दूतों, मेरे सबसे विश्वासपात्र मित्रों और साथियों, मैं अपनी आत्मा की समस्त शक्तियों के साथ आपसे विनती करती हूँ कि मेरे प्रभु के इस पवित्र मंदिर में मेरे साथ रहें। मेरे कार्यों के शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में, मुझे स्मरण कराते रहें जब भी मुझे अपने चाल-चलन में सुधार की आवश्यकता हो, ताकि मैं हर बात में परम सर्वोच्च की उत्तम इच्छा को पूर्ण कर सकूँ, पवित्र याजकों को प्रसन्न कर सकूँ और अपने गुरु तथा साथियों की आज्ञा का पालन कर सकूँ।*"

अप्रकाशित रहस्यों के उन बारह स्वर्गदूतों से उसने आगे कहा, "*और मेरे प्रिय स्वर्गदूत मित्रों, यदि सर्वशक्तिमान आपको अनुमति दें, तो जाएँ और मेरे पवित्र माता-पिता को उनके दुख के समय में सांत्वना दें।*"

जैसे ही वे बारह स्वर्गदूत उसकी प्रार्थना को पूरा करने के लिए प्रस्थान कर गए, मरियम अन्य स्वर्गदूतों के साथ स्वर्गीय वार्तालाप में लीन रहीं। परमेश्वर की आंतरिक आज्ञा पर, स्वर्गदूतों ने मरियम की आत्मा को उनकी उपस्थिति के लिए तैयार किया।

मरियम का सुकुमार शरीर अचानक दमकने लगा, वे एक दिव्य और अलौकिक प्रकाश से नहा गईं, जो मानो भीतर से ही फूट रहा था। उनका चेहरा, शांत और तेजस्वी, एक अवर्णनीय परमानंद को प्रतिबिंबित कर रहा था। धीरे-धीरे और गरिमा के साथ, उन्हें शरीर और आत्मा सहित असीम स्वर्गीय ऊंचाइयों में ऊपर उठा लिया गया, जो शुद्ध और दिव्य वैभव का लोक है। वहाँ, परम पवित्र त्रिएक (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, जिनकी उपस्थिति से असीम करुणा और आनंद प्रवाहित हो रहा था। उन्होंने अनंत स्नेह के साथ उनका स्वागत किया, उनकी दिव्य स्वीकृति हजारों सूर्यों की भांति चमक रही थी। जैसे ही मरियम उनके मध्य खड़ी हुईं, वे पूर्णतः रूपांतरित हो गईं; उनका अस्तित्व उस दिव्य प्रकाश से भर गया जिसने सभी सांसारिक सीमाओं को मिटा दिया। उस क्षण में, उन्होंने दिव्यता के मूल सार को देखा, किसी परदे या धुंधले प्रतिबिंब के माध्यम से नहीं, बल्कि सहज रूप से, सीधे, आमने-सामने। यह अनुभव समझ से परे था, एक ऐसा मिलन जो इतना गहरा था कि उसने समय और स्थान की सीमाओं को लांघ दिया, जिससे वे सदा के

लिए बदल गईं, दिव्य कांति से भर गईं और सृष्टि के स्रोत के साथ शाश्वत रूप से एक हो गईं।

ईश्वर ने उससे कहा, "*मेरी कपोती, मेरी प्रिय, मेरी इच्छा है कि तू उन गुप्त वरदानों को देखे और समझे जो उन आत्माओं के लिए निर्धारित हैं जिन्हें मैंने उत्तराधिकारी के रूप में चुना है। वे जिन्हें मेमने द्वारा उद्धार प्राप्त होगा। देख कि मैं अपनी उन रचनाओं के प्रति कितना उदार हूँ जो मुझे जानती हैं और मुझसे प्रेम करती हैं।*"

मेरे वचन सत्य हैं, मेरे वादे उन लोगों के प्रति विश्वासयोग्य हैं जो मेरा अनुसरण करते हैं, क्योंकि वे अंधकार में नहीं चलते। मैं चाहता हूँ कि तुम, मेरी चुनी हुई, उन खजानों की प्रत्यक्षदर्शी बनो जिन्हें मैंने नम्रों को उठाने, गरीबों को समृद्ध करने, कुचले हुए लोगों को ऊँचा उठाने, और मेरे नाम के लिए मनुष्यों द्वारा किए और सहे जाने वाले सभी कार्यों का प्रतिफल देने के लिए संजो कर रखा है।"

मरियम ने गहरी विनम्रता से उत्तर दिया, "*हे परम प्रधान, सर्वोच्च और शाश्वत परमेश्वर, आप अगम्य प्रभु हैं, जो अपने अस्तित्व और पूर्णता में अनंत और अविनाशी हैं। किंतु आपकी महिमा के सम्मुख मेरी यह लघुता क्या कर पाएगी? मैं स्वयं को आपकी महानता की ओर देखने के योग्य भी नहीं मानती, फिर भी मुझे आपकी दयादृष्टि की अत्यंत आवश्यकता है। हे प्रभु, आपकी उपस्थिति में समस्त सृष्टि शून्य के समान है। मुझमें अपनी समस्त इच्छा और अपना आनंद पूर्ण कीजिए। और यदि क्लेश और उत्पीड़न सहने हैं, यदि आपकी दृष्टि में नम्रता और सौम्यता इतनी अनमोल है, तो मुझे ऐसे बहुमूल्य खजानों और प्रेम की इस धरोहर से वंचित न रखें। परंतु इन कष्टों के प्रतिफल के विषय में, उन्हें उन्हें प्रदान करें जो अधिक योग्य हैं। मेरे प्रभु, मैं आपसे एक और अनुग्रह मांगती हूँ, कि मैं आपके सम्मुख ये चार व्रत ले सकूँ: कौमार्य, निर्धनता, आज्ञाकारिता और उस मंदिर में निरंतर निवास का व्रत, जिसमें आपने मुझे बुलाया है।*"

उसके व्रतों को स्वीकार करते ही ईश्वर ने उसे दिव्य कृपा से अलंकृत किया। उसकी इंद्रियाँ तेजस्वी प्रकाश से प्रकाशमान हो उठीं, जो उन्हें सौंदर्य से परिपूर्ण कर रही थीं। देवदूत उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए, उनके दिव्य स्वरूप एक अलौकिक आभा से झिलमिला रहे थे, और उन्होंने मरियम को अकल्पनीय वैभव के वस्त्रों और आभूषणों से सजाना शुरू कर दिया। उन्होंने उसे एक अद्भुत शोभा वाली चादर ओढ़ाई, जिसका वस्त्र प्रकाश और अनुग्रह के धागों से बुना गया था, जो उसके

शरीर के चारों ओर तरल तेज की तरह बह रहा था। उसके कमर के चारों ओर, उन्होंने बहुरंगी पत्थरों से जड़ा एक हार का फंदा बांधा, जिसमें से प्रत्येक रत्न हज़ारों इंद्रधनुषों के रंगों से चमक रहा था, जो दिव्य सृष्टि की असीम विविधता का प्रतीक था। धीरे से, उन्होंने उसके गले में एक हार पहनाया, जिसकी नाज़ुक जंजीर में तीन चमकते मोती थे, आस्था, आशा और परोपकार, जिनमें से प्रत्येक उसकी आत्मा की पवित्रता से दमक रहा था।

उसके नाजुक लेकिन मजबूत हाथों में सात अंगूठियाँ सजी थीं, प्रत्येक एक दिव्य आत्मा के वरदानों का तेजस्वी प्रतीक थी:

प्रज्ञा, समझ, सुबुद्धि, साहस, ज्ञान, भक्ति और प्रभु का भय। अंगूठियाँ एक आंतरिक अग्नि से झिलमिला रही थीं, मानो दिव्य अनुग्रह के सार से जीवंत हों। अंततः, स्वर्गदूतों ने उसे अतुलनीय सुंदरता का एक मुकुट पहनाया, जिसके रत्न इतनी तेज रोशनी बिखेर रहे थे कि वह स्वयं तारों को भी फीका कर रही थी। जैसे ही उन्होंने वह मुकुट उनके शीश पर रखा, उनके स्वर एक सुरीले समवेत गान में गूंज उठे, जो उन्हें 'परमेश्वर की वधू' और 'स्वर्ग की साम्राज्ञी' के रूप में घोषित कर रहे थे। उनके चारों ओर की वायु इस पवित्र क्षण की गंभीरता से स्पंदित होने लगी, मानो समस्त सृष्टि उनकी इस महिमा की साक्षी बन रही हो, जो उनके अद्वितीय सद्गुणों और ईश्वर के साथ उनके अनंत मिलन का प्रमाण था।

ईश्वर ने घोषणा की, "*तू हमारी वधू होगी, समस्त सृजित प्राणियों में अनंत काल के लिए हमारी प्रिय और चुनी हुई। स्वर्गदूत तेरी सेवा करेंगे, और सभी राष्ट्र और पीढ़ियाँ तुझे धन्य कहेंगी। मैं तुझे अपने अनुग्रह और सामर्थ्य के समस्त भंडार सौंपता हूँ। तू जो चाहे मांग, और वह पूर्ण किया जाएगा।*"

मरियम की अंतिम विनती निस्वार्थ थी। "*मेरे प्रिय प्रभु और स्वामी, मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि आप अपने इकलौते पुत्र को मर्त्य मनुष्यों के उपचार के रूप में संसार में भेजें, ताकि सभी मनुष्य आपकी दिव्यता के सच्चे ज्ञान के लिए बुलाए जाएँ। मैं प्रार्थना करती हूँ कि योआखिम और अन्ना को आपके दाहिने हाथ के प्रेमपूर्ण वरदानों की प्रचुरता प्राप्त हो; निर्धनों और पीड़ितों को उनके कष्टों में धीरज और सांत्वना मिले; और मैं आपकी ईश्वरीय इच्छा के आनंद को पूर्ण कर सकूँ।*"

इन शब्दों के साथ, स्वर्ग संगीत से भर गया और स्वर्गदूतों ने मरियम

को मंदिर में उनके शयनकक्ष में पहुँचा दिया। अगली सुबह, मरियम ने अपनी माता द्वारा दी गई अपनी कुछ सांसारिक वस्तुओं को लिया, केवल कुछ पुस्तकों और वस्त्रों को छोड़कर, और अपनी शिक्षिका को निर्देश दिया कि उन्हें निर्धनों में बांट दिया जाए।

इस प्रकार, वह चुनी हुई कन्या, जो तेजस्वी और पाप के कलंक से रहित थीं, और जिन्हें जगत की ज्योति को धारण करने के लिए नियत किया गया था, अपनी पवित्र शिक्षा आरंभ करने हेतु मंदिर के पावन कक्षों में पधारीं। आदर और श्रद्धा से वायु झिलमिलाने लगी जब उन्होंने निर्धनता और आज्ञाकारिता के व्रतों को अंगीकार किया, और उन्हें अपने अस्तित्व के ताने-बाने में बुन लिया। उनका हृदय अपने युवा जीवन की हर श्वास, हर पग और हर क्षण में इन सिद्धांतों को जीने की तीव्र अभिलाषा से प्रज्वलित था।

उनकी आँखें प्रकाश से दीप्तिमान थीं और हाथ विनीत प्रार्थना में बंधे हुए थे; उन्होंने याजकों से विनती की कि वे उनका मार्गदर्शन करें, उनके लिए अनुशासन और भक्ति का मार्ग प्रशस्त करें, और उनके सम्मुख वे नियम रखें जो उन्हें दैवीय उद्देश्य के एक पात्र के रूप में गढ़ सकें।

मरियम के उस लघु कक्ष में, भोर की प्रथम किरण खिड़की से भीतर रेंगती हुई आई। प्रत्येक दिन मरियम भोर होते ही अपने बिछावन से उठतीं, उनकी प्रत्येक चेष्टा शांत और सुविचारित होती थी। वे प्रार्थना में घुटने टेकतीं और उनका मुखमंडल स्वर्ग की ओर उठा रहता था।

मंदिर में, मरियम प्रार्थना में अपनी सहपाठिनों के साथ सम्मिलित होतीं, और उनका स्वर उनके स्वरों के साथ मधुर सामंजस्य में गूंजता था। उसका चेहरा दीप्तिमान था, उसकी भक्ति हर हाव-भाव में झलक रही थी।

तीसरे पहर से लेकर संध्या तक, उन्हें स्वयं को शारीरिक सेवाकार्यों में व्यस्त रखना होता था। वे फर्श बुहारतीं, कक्षों की स्वच्छता करतीं और अन्य सभी के वस्त्र धोती थीं। उनके लिए कोई भी कार्य तुच्छ न था। न ही उन्हें कभी ऐसे कार्य करने के लिए कहा गया था; मानो ये सेवाएँ उनके लिए अर्पित किए गए सबसे महान उपहार हों।

मरियम प्रत्येक दिन का अंत एक मेज पर बैठकर करतीं, उनकी आँखें पवित्र शास्त्र के पृष्ठों पर टिकी होती थीं। पढ़ते समय उनकी

उंगलियाँ शब्दों का स्पर्श करतीं और उनके मुख पर गहरे चिंतन का भाव होता था।

हमारी स्वर्गीय राजकुमारी अपने लघु कक्ष के फर्श पर घुटनों के बल बैठकर अथवा दंडवत लेटकर अधिक समय व्यतीत करतीं, जहाँ वे अपने स्वर्गीय संरक्षकों से वार्तालाप करतीं या स्वयं सर्वशक्तिमान द्वारा और अधिक दिव्य ज्ञान प्राप्त करती थीं।

अध्ययन की मेजों पर, मरियम अपने साथियों के बीच बैठतीं, उनका छोटा सा स्वरूप उन पवित्र ग्रंथों पर झुका रहता था। वे श्रद्धा के साथ उन प्राचीन शब्दों पर अपनी उंगलियाँ फेरतीं और एकाग्रता के कारण उनके माथे पर बल पड़ जाते थे। यद्यपि वे शास्त्रों के रहस्यों को अपनी आयु से कहीं अधिक गहराई से समझती थीं, फिर भी वे एक नौसिखिए के उत्साह के साथ अपने अध्ययन में जुटी रहती थीं। वे प्रश्न पूछतीं, मार्गदर्शन खोजतीं और अपने शिक्षकों को अत्यंत ध्यानपूर्वक सुनती थीं, उनकी विनम्रता उनकी बुद्धि के समान ही उज्ज्वल रूप से चमकती थी।

भोजन कक्ष में, कुंवारी मरियम अपनी सहपाठिनों के मध्य इस प्रकार विचरण करतीं जैसे कि कोई अलौकिक कृपा उनके साथ हो, और वे उन्हें अत्यंत शिष्टता के साथ भोजन परोसती थीं। वे स्वयं के लिए केवल एक तुच्छ भाग ही लेती थीं, जिससे उनका यह कार्य निर्धनता के उनके व्रत का एक मूक प्रमाण बन जाता था। जब अन्य लड़कियाँ उनका धन्यवाद करतीं, तो वे धीरे से मुस्कुरा देतीं, और उनकी आँखों में वह ऊष्मा भर आती जो उनके प्रति उनके निष्कपट प्रेम को दर्शाती थी। वे बहुत ही कोमल स्वर में कहतीं, "*सेवा करना ही मेरा आनंद है।*"

जैसे-जैसे वर्ष व्यतीत होते गए, मरियम के मुखमंडल में परिपक्वता आने लगी और उनके बचपन की सुकुमार कोमलता ने एक नवयुवती के सूक्ष्म नैन-नक्शों का रूप ले लिया। फिर भी, उनकी आत्मा अपरिवर्तित रही, पवित्र, समर्पित और ईश्वरीय अनुग्रह के प्रकाश से दीप्तिमान। उनके दिन प्रार्थना, सेवा और अध्ययन की एक लय में बंधे हुए थे, जहाँ प्रत्येक कार्य उस प्रेम के साथ किया जाता था जो मानो इस पार्थिव जगत की सीमाओं को लांघ चुका हो।

जब मरियम आठ वर्ष की आयु तक पहुँचीं, तब तक मंदिर में उनका जीवन विश्वास, आशा और प्रेम के सद्गुणों का एक जीवित प्रमाण बन चुका था। उनका प्रत्येक कार्य, चाहे वह कितना ही छोटा

क्यों न हो, उस प्रेम से ओत-प्रोत था जो अपनी शक्ति ईश्वर से प्राप्त करता प्रतीत होता था। वे न केवल मंदिर के भीतर के लोगों के लिए, बल्कि उन सभी के लिए ज्योति का एक स्तंभ थीं जो उनके वृत्तांत को जानेंगे।

इस प्रकार, जैसे-जैसे समय निरंतर बदलता रहा, उसका प्रत्येक क्षण उस महानता के लिए चुनी गई आत्मा के चित्रण में एक तूलिका की भांति सिद्ध हुआ। प्रार्थना, सेवा और अटल भक्ति के माध्यम से, मरियम न केवल वर्षों में बढ़ीं, बल्कि उस अनुग्रह और प्रज्ञा में भी विकसित हुईं, जो एक दिन उन्हें जगत की ज्योति (मुक्तिदाता) को धारण करने के लिए तैयार करने वाली थी।

अध्याय छह
योआकिम की मृत्यु

मरियम मंदिर की नीरवता में घुटने टेके हुए थीं, उनका लघु स्वरूप मोमबत्तियों की मंद आभा से आलोकित हो रहा था। उनका मुखमंडल, जो प्रायः शांत रहता था, अब एक गहन परमानंद को प्रतिबिंबित कर रहा था, मानो उनकी आत्मा ईश्वरीय मिलन के लिए पार्थिव लोक की सीमाओं को लांघ चुकी हो। उनके अधर मौन रूप में हिल रहे थे; उनके शब्द मर्त्य कानों द्वारा अनसुने थे, किंतु स्वर्गदूतों की श्वास के साथ परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँच रहे थे।

"हे *मेरी प्रिय और चुनी हुई, अपने विचारों और कार्यों में तू अति सुंदर है,*" परमेश्वर की वाणी उनके भीतर प्रतिध्वनित हुई, जो कोमल और अनंत दोनों थी। "*मैं तुम्हारी महानतम महिमा के लिए सेवा करने और बलिदान करने की इच्छा को स्वीकार करता हूँ और अब ऐसा करने का समय आ गया है। क्योंकि यह मेरी दैवीय आज्ञा है कि तुम्हारे पिता योआकिम को इस नश्वर जीवन से शाश्वत और अमर जीवन में जाना है। उनकी मृत्यु जल्द ही होगी, और वे शांति से परलोक सिधारेंगे। उन्हें संत जनों के बीच लिम्बो में रखा जाएगा, मानव जाति की मुक्ति की प्रतीक्षा करने के लिए।*"

उस बालिका का चेहरा बदल गया, उनका भाव शोक से एक कोमल मुस्कान में परिवर्तित हो गया, यद्यपि उनके गालों पर अश्रुधारा बह रही थी। उन्होंने उन्हें पोंछने का कोई प्रयास नहीं किया और उन्हें स्वतंत्र रूप से गिरने दिया। जैसे ही वे अश्रु भूमि को छूते, वे चमक उठते और उनके स्वर्गदूत साथियों के झिलमिलाते पंखों में रूपांतरित हो जाते, जिन्होंने उन्हें कोमलता से ऊपर उठाया और उनके पिता योआखिम के सिरहाने तक ले गए।

योआकिम के शयनकक्ष में, जहाँ आने वाली मृत्यु की गहरी गंभीरता से हवा भारी थी।मरियम चुपचाप खड़ी थी, उसकी उपस्थिति उस धुंधले कमरे में प्रकाश की किरण थी। उसने देखा और सुना जब स्वर्गदूत गैब्रियल प्रकट हुए, उनका रूप दीप्तिमान

था, और उन्होंने उसके पिता से बात की। "परमेश्वर के सबसे समर्पित सेवक," गैब्रियल ने श्रद्धा से भरी आवाज़ में कहना शुरू किया, *"सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान प्रभु चाहते हैं कि तुम यह जानो कि मरियम, तुम्हारी पुत्री, सर्वशक्तिमान द्वारा के रूप में चुनी और नियुक्त की गई है, जिसमें दिव्य वचन स्वयं को निवास कराएगा। वही मसीहा की माता और स्त्रियों में धन्य, सभी प्राणियों में सबसे उत्कृष्ट, और स्वयं ईश्वर के सिवा किसी से भी कमतर नहीं होगी। वही है जिसने हमें इस घड़ी, आपकी मृत्यु के समय, आपकी सहायता करने के लिए भेजा है। वही सर्वशक्तिमान के समक्ष एक अत्यंत विश्वासयोग्य और शक्तिशाली मध्यस्थ है।"*

जब गैब्रियल बोल रहे थे, योआखिम की प्रिय पत्नी अन्ना, उनके सिरहाने खड़ी थी। दैवीय कृपा से, उन्होंने हर शब्द सुना और समझा। उनका हृदय शोक और विस्मय के मिश्रण से भर उठा; उनकी निगाहें अपने पति के चेहरे पर टिकी थीं। जैसे ही अंतिम शब्द कहा गया, योआकिम ने अपनी अंतिम सांस ली, उनकी आत्मा एक तेजस्वी प्रकाश के विस्फोट में उनके शरीर से ऊपर उठ गई। देवदूतों का एक समूह उसके चारों ओर आ गया, जो उसकी आत्मा को लिम्बो (अंतराल) तक ले जा रहा था, जहाँ वह मानव जाति की मुक्ति की प्रतीक्षा करेगा।

अन्ना की दृष्टि अपनी पुत्री की ओर मुड़ी, जो अब एक अलौकिक गरिमा के साथ उसकी ओर बढ़ रही थीं। मरियम ने धीरे से अपनी माँ के चेहरे को छुआ, उसका स्पर्श एक मौन सांत्वना थी, फिर मुड़कर कमरे से चली गई। उस क्षण की गंभीरता वायु में व्याप्त रही।

समय व्यतीत हुआ, और अब नौ वर्ष की आयु में, मरियम को मंदिर में अत्यंत व्याकुलता से प्रार्थना करते हुए देखा गया। उनका मुखमंडल, जो प्रायः दिव्य प्रकाश से चमकता था, अब एक गहरे शोक को प्रतिबिंबित कर रहा था। कई सप्ताहों से वे प्रार्थना में घुटने टेके हुए थीं, और उनका हृदय विरह के बोझ से भारी था। परमेश्वर ने स्वयं को उन पर प्रकट करना बंद कर दिया था, और उनकी उपस्थिति का अभाव एक ऐसी पीड़ा थी जिसे सहना उनके लिए कठिन था।

मंदिर के उस शांत एकांत में, मरियम ठंडे पत्थर के फर्श पर

दंडवत लेटी थीं, और उनका लघु स्वरूप भावनाओं के वेग से कांप रहा था। उनका स्वर यद्यपि कोमल था, किंतु उसमें उनकी व्यथा का भारीपन समाया हुआ था।

"*मेरे परम प्रिय पिता,*" वे फुसफुसाईं, और उनके शब्द दुख से कांप रहे थे, "*मुझसे ऐसा क्या अपराध हुआ है जिससे आप रुष्ट हो गए? आप स्वयं को मुझसे क्यों छिपाए रखते हैं? और मेरे पवित्र साथी स्वर्गदूत भी कहाँ हैं? यदि यह केवल उस पीड़ा की गहराई है जो मुझे आपके निमित्त सहनी है, तो मैं इसे सहती हूँ और आपसे और अधिक पीड़ा की विनती करती हूँ। क्योंकि यह मेरे द्वारा कल्पित अब तक का सबसे गहरा दुख और शोक है।*"

उनके अश्रु मौन रूप में गिर रहे थे, प्रत्येक आँसू उसकी अटूट भक्ति का प्रमाण था। यद्यपि स्वर्ग मौन प्रतीत हो रहा था, उसका विश्वास अडिग रहा, सर्वशक्तिमान के प्रति उसका प्रेम अंधकार में भी प्रज्वलित हो रहा था। वह इस परीक्षा को भी अन्य सभी की तरह विनम्रता और शालीनता से सहन करेगी, उसकी दिव्य बुद्धिमत्ता पर भरोसा करते हुए।

मरियम अपने कक्ष के शांत एकांत में घुटने टेके हुए थीं, और उनका लघु स्वरूप भावनाओं के वेग से कांप रहा था। उनके स्वर में उनकी व्यथा का भारीपन था, जब उन्होंने एक बार फिर उन स्वर्गीय प्राणियों को संबोधित किया जो कभी उनके निरंतर साथी हुआ करते थे।

"*स्वर्गीय राजकुमारों, महान और सर्वोच्च राजा के राजदूतों और मेरी आत्मा के सबसे वफादार दोस्तों,*" उसने दुख से कांपती आवाज़ में कहना शुरू किया, "*तुम भी मुझे क्यों छोड़ गए? कृपया लौट आओ, कृपया लौट आओ। हालाँकि, हे मेरे स्वामियों, मुझे आपकी नाराज़गी पर आश्चर्य नहीं है, यदि मेरे कृतघ्न कार्यों से मैंने आप और मेरे स्रष्टा की अवमानना का पात्र बनना ही लिखा है।*
हे स्वर्ग की ज्योतियों, इस विषय में मेरी अज्ञानता को दूर कर मुझे आलोकित करें, और यदि मेरा कोई दोष रहा हो, तो मुझे सुधारें और मेरे प्रभु से पुनः क्षमा प्राप्त कराएं। मेरे शोक पर दया करें, मुझे बताएं कि मेरे प्रियतम कहाँ हैं; मुझे बताएं कि उन्होंने स्वयं को कहाँ छिपा लिया है। क्योंकि मैं जानती हूँ कि वे अपना मुखमंडल और अपना सौंदर्य आपकी दृष्टि से कभी ओझल नहीं करते!"

उनके अश्रु निरंतर गिरते रहे, जो उनकी अटूट निष्ठा का साक्षी थे। फिर भी, स्वर्ग मौन रहा, और वह कक्ष एक टीस भरी शून्यता से भर गया, जहाँ उनकी व्यथा का भारीपन वायु में व्याप्त था।

अध्याय सात

नर्क की गहराइयाँ

नर्क की उन दम घोटने वाली गहराइयों में, जहाँ की वायु गंधक की तीक्ष्ण दुर्गंध और निराशा से छटपटा रही थी, लुसिफ़र उन नुकीले और सुलगते मार्गों पर विचरण कर रहा था। उसके पैरों तले की ज़मीन फुफकार रही थी और दरारें पड़ रही थीं, शाप की पिघली हुई नदियाँ जली हुई धरती में साँप जैसी लकीरें बना रही थीं। उसका हर कदम एक भयावह, आदिम लय के साथ गूँज रहा था, जो युगों से पनपी अवज्ञा और पीड़ा की एक संगीतमय धुन थी। उसके पंख, जो कभी दमकते थे, अब फटे-पुराने सायों की तरह लटक रहे थे, जिनकी किनारों पर बुझने से इनकार करने वाली अंगारों की चमक झिलमिला रही थी। उसकी आँखें, अथक आग के दो नरक, एक ऐसी निगाह से जल रही थीं जो संसारों के आवरण को भेद सकती थी। वे आँखें मरियम पर टिकी थीं, जो एक कोमल मानवीय आत्मा थीं और जिनका संताप उस अथाह कुंड में एक ज्योति की भाँति जल रहा था। उनकी पीड़ा एक कच्ची और मानो दिव्य तीव्रता के साथ स्पंदित हो रही थी, एक ऐसा विरोधाभास जिसने उसे पीछे भी धकेला और उसकी जिज्ञासा को भी जकड़ लिया। वह अंधकार में एक प्रकाश के समान था, उसके पार्श्व में एक कांटे की भाँति, जिससे वह अपनी दृष्टि हटा न सका। यद्यपि उसने उनके संताप को देखा, जो उसके नारकीय साम्राज्य की दमनकारी पृष्ठभूमि के विरुद्ध दुख और धैर्य का एक दृश्य था, फिर भी उनके अस्तित्व की गहराइयों में एक गहन रहस्य छिपा था। मरियम की व्यथा किसी पराजित आत्मा की हताश पुकार नहीं थी; बल्कि यह अपनी पवित्रता में अडिग एक आत्मा का विलाप था, एक ऐसी पहेली जो उसकी दुष्ट पकड़ से परे थी। लुसिफ़र उनकी कठिनाइयों के घावों को देख सकता था और आशा की उस कांपती हुई लौ को भी, जो हठपूर्वक अपने चारों ओर के अंधकार को चुनौती दे रही थी, फिर भी उनके आंतरिक प्रकाश की जटिल परतें उसकी खोजी द्वेष भावना के लिए अभेद्य बनी रहीं। उस विद्रोही चमक में, उसने कुछ ऐसा पहचाना जो

खतरनाक रूप से उस खोए हुए स्वर्ग की पवित्रता की याद दिलाता था, जो उसके स्वभाव के सर्वथा विपरीत थी।

उसका मन क्रोध और अनचाहे आकर्षण के एक अशांत मिश्रण से मथ रहा था। वे नारकीय गलियारे उसके नपे-तुले और खौलते हुए कदमों की आवाज से गूंज रहे थे, मानो वे दीवारें भी उसके द्वंद्वपूर्ण विचारों के तूफान से परिचित हों।

उसका स्वर, जो द्वेष और खौलती हुई हताशा से भरा एक गंभीर स्वर था, उस प्रज्वलित अगाध कुंड में गूंज उठा। वह गुर्राया, और उसकी वाणी तिरस्कार तथा अविश्वास का एक विषैला मिश्रण थी। "*कौन है यह अभागा युवा प्राणी, जिसके ये दयनीय शब्द मेरे अस्तित्व में उससे कहीं अधिक व्याकुलता उत्पन्न कर रहे हैं जितनी मैं सहना चाहता हूँ? संभवतः इसे अन्य प्रकार के अतिथियों से लाभ प्राप्त हो सकता है।*"

इन शब्दों के साथ ही, मानो वह वायु भी नए भयंकर कष्टों की आशंका से कांप उठी। "अन्य प्रकार के अतिथि" वाक्यांश मात्र एक खोखली धमकी नहीं थी; यह उन षड्यंत्रों की प्रस्तावना थी जो उसके नरकीय मस्तिष्क की गहराइयों में पक रहे थे। अपने स्वयं के निराशापूर्ण सार से रचे गए राक्षसों और दूतों को भेजने के विचार ने उसे एक अंधकारपूर्ण प्रत्याशा से भर दिया। ये पिशाच विनाश के दूत बनकर भेजे जाने थे, जिनका उद्देश्य मरियम के संताप के ताने-बाने में और अधिक दुख के धागे बुनना था।

उसके चारों ओर, उसके मंत्रोच्चारणों के जवाब में नरक का परिदृश्य बदल गया। दहशत से पिघले हुए कष्ट की नदियाँ जली हुई हड्डियों के पुलों के नीचे बही रहीं, और हवा में भी शाश्वत शाप की तीखी बदबू व्याप्त थी। दीवारों पर परछाइयाँ नाच रही थीं, जो अनगिनत खोई हुई आत्माओं के कष्ट से साँस लेती प्रतीत होती थीं। इस भयानक संगति में, लूसिफर का आंतरिक संघर्ष उजागर हो गया। यहाँ वह था, दुःख का वास्तुकार, एक ऐसी दिव्य आत्मा से मिल रहा था जिसकी चमक इतनी तेज थी कि नरक की घुटन भी उसकी रोशनी को बुझा नहीं सकती थी।

एक पल के लिए, जब उसके शब्दों की गूँज चटकती लपटों में खो गई, तो लूसिफर अपनी निरंतर चहलकदमी पर ठहर गया। उसके चेहरे पर

अनिश्चितता की एक सूक्ष्म, लगभग न के बराबर झलक आई, यह इस बात का एक संक्षिप्त संकेत था कि मरियम की अडिग पवित्रता एक ऐसी पहेली थी जिसे वह पूरी तरह से सुलझाने के लिए तैयार नहीं था।
क्या हो सकता है कि उसकी पीड़ा के भीतर सिर्फ निराशा ही नहीं, बल्कि आशा की एक छोटी, अडिग सी चमक भी छिपी हो? और अगर आशा की वह चिंगारी मौजूद थी, तो वह नरक जैसी जगह में कैसा अराजकता फैला सकती थी, जहाँ निराशा और पीड़ा ही उसके द्वारा स्वीकार किए गए एकमात्र नियम थे? यह विचार उसे भीतर से खाता रहा, उसने जो व्यवस्था बनाई थी, उसे अस्थिर कर गया।

उस तनावपूर्ण खामोशी में, पाताल की हवा भारी हो गई, मानो नरक के निवासी भी अपनी साँसें रोककर खड़े हो गए हों।

अंधेरी विडंबना स्पष्ट थी: जिसने अनगिनत त्रासदियों को रचा था, वह अब खुद को एक मानवीय आत्मा की अप्रत्याशित शक्ति से जूझता हुआ पा रहा था, एक ऐसी शक्ति जो उसके द्वारा इतनी निर्दयता से थोपे गए व्यवस्था को ही बिखेर देने का खतरा पैदा कर रही थी। अपने "अन्य प्रकार के अतिथियों" को भेजने की योजना केवल अधिक पीड़ा पहुँचाने के लिए नहीं थी, बल्कि यह मरियम की पवित्रता के रहस्य का विच्छेदन करने का एक सुविचारित दांव था, ताकि उस भ्रम को तोड़ा जा सके कि शाश्वत रात्रि की गहराइयों में ऐसा प्रकाश भी अस्तित्व में रह सकता है।

इस प्रकार, एक अंतिम और तिरस्कारपूर्ण घुर्राहट के साथ, जो मृत्यु की घंटी की गूंज के समान प्रतिध्वनित हुई, लुसिफ़र ने पुनः अपना निरंतर विचरण आरंभ कर दिया; उसका मस्तिष्क उन षड्यंत्रों से सुलग रहा था जो स्वयं नरक के भूलभुलैया जैसे गलियारों के समान ही जटिल और भयानक थे। मंच सज चुका था, और इस नारकीय नाटक का अगला अंक उस प्राचीन दुष्टता और मानवीय पवित्रता की उस अडिग लौ के बीच होने वाले आमने-सामने के संघर्ष के रूप में प्रकट होने वाला था, जिसने सबसे अंधकारमय लोकों को भी चुनौती देने की प्रतिज्ञा की थी।

मरियम के उस लघु कक्ष में, वे एक अशांत निद्रा में लेटी थीं। उनके चारों ओर काली परछाइयां मंडराने लगीं, जो उन पिशाचों का रूप ले रही थीं जिन्होंने उनके मन और आत्मा पर आक्रमण करने का प्रयास किया। तथापि, जैसे ही वे निकट आए, वे एक अदृश्य शक्ति द्वारा पीछे

धकेल दिए गए और उतनी ही तीव्रता से ओझल हो गए जितनी तीव्रता से वे प्रकट हुए थे। दूर से देख रहे लुसिफ़र को यह कदापि प्रिय न लगा। उसने निम्न और डरावनी घुर्राहट के साथ आज्ञा दी।

"*तो फिर उसके साथियों के हृदयों में प्रवेश करो,*" उसने कहा, "*लोभ और ईर्ष्या को उन अन्यों को कलंकित करने दो जो प्रभु के सेवक बनने के लिए इतना कठिन परिश्रम करते हैं। देखें कि यह तुच्छ प्राणी इन व्याधियों को कैसे सहती है?*"

अगली सुबह, जब कुंवारी मरियम ने प्रवेश किया, तो मंदिर का भोजन कक्ष कानाफूसी से भरा हुआ था। वे अन्य युवतियां, जिनके हृदय पिशाचों के प्रभाव से अंधकारमय हो चुके थे, मरियम द्वारा अभिवादन किए जाने पर उनसे किनारा करने लगीं। वे उनके द्वारा अपने दैनिक कार्य कराए जाने की अभ्यस्त हो गई थीं, और अब उन्होंने उनके कार्यों को और भी कठिन बना दिया। एक कन्या ने अपनी थाली फर्श पर गिरा दी और तुरंत अपनी सीट पर लौट आई, जिससे उस गंदगी को साफ करने का भार मरियम पर आ पड़ा। सिस्टर अन्ना ने कक्ष में प्रवेश किया, उनका चेहरा कठोर था।

अन्ना ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा, "हमें *उस वस्तु के प्रति अधिक सावधान रहना चाहिए जिसे हमारे प्रभु पोषण के रूप में प्रदान करते हैं।*" मरियम ने नम्रतापूर्वक अपना सिर झुकाया। "*हाँ, दीदी; मेरी चपलता की कमी और भोजन के प्रति मेरी इस अति-उत्सुकता के लिए मुझे क्षमा करें।*" तभी एक छात्रा बोल उठी, उसका स्वर दोषारोपण के कारण तीखा था। "*इसने मेरे हाथों से थाली छीन ली, जिससे वह गिर गई। मैंने इसे अपनी थाली देने का प्रयास किया, परंतु इसने यह कहते हुए मना कर दिया कि वह दूषित है क्योंकि मैंने उसमें से पहले ही खा लिया था।*"

एक अन्य कन्या भी बोल पड़ी, और उसका लहजा भी उतना ही कठोर था। "*हाँ दीदी, और यह पहली बार नहीं है। यही बात उन पवित्र शास्त्र की पुस्तकों के विषय में भी सत्य है जिन्हें हमें आपस में बांटना होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मरियम उन्हें ले लेती है और छिपा देती है। इसी कारण मुझे अपना पाठ स्मरण नहीं है- इसकी वजह से मैं अध्ययन नहीं कर पाई हूँ।*"

मरियम, जिसका चेहरा विनम्रता से भरा था, ने कोमलता से उत्तर दिया।

"मेरी सखियों और स्वामिनी, आप निसंदेह सत्य कह रही हैं कि मैं आप सब में सबसे तुच्छ और अपूर्ण हूँ। तथापि, मेरी बहनों, आप अधिक ज्ञानवान होने के नाते, मेरे दोषों को क्षमा करें और मेरी अज्ञानता में मुझे शिक्षा दें। क्योंकि मैं एक सेविका के समान आप सब से प्रेम करती हूँ और आपका सम्मान करती हूँ, और केवल यही चाहती हूँ कि हर बात में आपकी आज्ञा का पालन करूँ। अतः मुझे आज्ञा दें और बताएं कि आप मुझसे क्या चाहती हैं।"

परंतु उनके इन वचनों ने उनके साथियों के हृदयों को कोमल नहीं किया। इसके विपरीत, लुसिफ़र का प्रभाव उन्हें निरंतर उकसाता रहा कि वे उन्हें और अधिक हानि पहुँचाएँ, यहाँ तक कि वे शारीरिक हिंसा पर भी उतारू हो गईं।
जब मरियम फर्श साफ़ कर रही होती, तो वे उसे धक्का देकर गिरा देतीं और उसका चेहरा पानी की बाल्टी में डुबो देतीं। उन्होंने उसे मंदिर के अंधेरे कमरों में बंद कर दिया, उनकी क्रूरता पुरोहितों और अधीक्षिकाओं से तो छिपी थी - लेकिन ईश्वर से नहीं।

ऐसे ही एक अवसर पर, वे लड़कियाँ एक कमरे में इकट्ठी हुईं और मरियम को अपशब्द कहने लगीं तथा उनके साथ शारीरिक दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। इस हंगामे ने पुरोहितों और दासी-स्त्रियों का ध्यान आकर्षित किया, जो घटनास्थल पर दौड़ पड़े।

शिमौन ने क्रोध से भरी आवाज़ में पूछा, "*प्रभु की शिक्षाओं के विरुद्ध इस घोर कृत्य का कारण क्या है? इसके लिए कौन दोषी है? मुझे जवाब दो!*"

उन छात्राओं में से एक ने मरियम की ओर आरोप की उंगली उठाई। "*यह नाज़रेथ की मरियम ही है जिसने यह सब उत्पन्न किया है। वह हम सभी में बहुत विवाद और क्रोध पैदा करती है। और जब हम उससे सामना करते हैं, तो वह हमें और भी अधिक चिढ़ाती और उकसाती है।*

जब हम उसे अपनी मनमानी करने देते हैं, तो वह अत्यंत अभिमानी हो जाती है। वह दिखावटी नम्रता से हमारे पैरों तले फर्श पर लोटकर हम पर हँसती है, फिर बाद में फिर से झगड़ा करती है जिससे चारों ओर कोलाहल मच जाता है! अगर वह मंदिर नहीं छोड़ती, तो हमारे बीच शांति बनाए रखना असंभव होगा।"

पुजारी और अधिष्ठात्री ने मरियम को अपने कार्यालय में ले जाकर उसे

कड़ी फटकार लगाई। अन्ना ने, निराशा से भरी आवाज़ में कहा, "*मरियम, तुम्हें ऐसा कार्य करने के लिए क्या विवश कर सकता है? तुम एक पवित्र स्थान में ऐसा कलह क्यों लाती हो? अगर ऐसा जारी रहा, तो हमें तुम्हें मंदिर से निष्कासित करना होगा।*"

मरियम चुपचाप खड़ी रहीं, और अपनी निर्दोषता सिद्ध करने का कोई प्रयास किए बिना उन्होंने सब कुछ स्वीकार कर लिया। जब उन्हें कक्ष से जाने की अनुमति मिली, तो वे तुरंत अपनी सखियों के पास गईं और उनके चरणों में घुटने टेककर फूट-फूट कर रोने लगीं। उन कन्याओं ने समझा कि उनके ये अश्रु दंड के कारण हैं, इसलिए उन्होंने सद्भावना के साथ उनके इस अपमान को स्वीकार कर लिया।

"*मुझे क्षमा करें कि मैंने आपको इस तरह का व्यवहार करने पर विवश किया,*" मरियम ने कहा, उसकी आवाज़ सच्चाई से काँप रही थी। "*क्योंकि यह सब मेरे ही कारण हुआ, और मैं आपसे विनती करती हूँ कि मुझे आपकी सेवा जारी रखने की अनुमति दें ताकि मैं अपने प्रभु की सेवा कर सकूँ।*"

अपने कक्ष में, वे प्रार्थना में घुटने टेके हुए थीं। "*मेरे परम प्रिय पिता, मैंने सभी को रुष्ट किया है। और मेरा सबसे बड़ा अपराध यह है कि मैं उन कार्यों के प्रति अंधी हूँ जिनके कारण यह सब हुआ। मैं अपनी उन बहनों के लिए प्रार्थना करती हूँ जिन्हें मैंने ऐसा दुख पहुँचाया है। मैं प्रार्थना करती हूँ कि मुझे मार्ग दिखाया जाए कि मैं अब उन्हें और अधिक ठेस न पहुँचाऊँ।*"

अध्याय आठ

अन्ना की मृत्यु

सिमोन और अन्ना के शांत कक्षों में, जब वे सो रहे थे, तो एक दैवीय उपस्थिति स्वप्न में उन दोनों के पास आई। परमेश्वर की वाणी ने, जो कोमल होते हुए भी सुस्पष्ट थी, उनसे धीरे से संवाद किया और उस कलह की वास्तविकता को प्रकट किया जो मंदिर के भीतर उत्पन्न हुई थी।
जब प्रातः की किरणें प्राचीन हॉल में फैलीं, तो दोनों ने धीमी आवाज़ में परामर्श किया, उनके हृदय दिव्य प्रकटीकरण के भार से भारी थे। उन्होंने मरियम को एक बार फिर बुलाया, और उस ज्ञान के कारण जो अब उनके पास था, उनके मुखमंडल के भाव कोमल हो गए थे।

सिमोन ने शांत दृढ़ संकल्प के साथ, अपनी आवाज़ को स्थिर और दयालु बनाए हुए उससे कहा, "*हमें यह बताया गया है कि जो कुछ भी घटित हो रहा है, उसमें आपका कोई दोष नहीं है। हम इस कलह का अंत कर देंगे ताकि आप हमारे प्रभु के विषय में और अधिक जानने और उनकी सेवा कैसे की जाए, इस अपनी अभिलाषा में निरंतर बनी रह सकें।*"

मरियम की आँखें समर्पित नम्रता से चमक उठीं और उन्होंने उत्तर दिया, उनका स्वर सच्ची निष्ठा से कांप रहा था। "*हे मेरे वरिष्ठों, मैं आपसे विनती करती हूँ कि मुझे अपनी बहनों की सेवा करने दें और उनके तिरस्कार के कष्ट को सहने दें। मुझे उनकी इस शिक्षा से बहुत लाभ होता है। परंतु मैं आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगी, और यदि आप ऐसा आदेश देते हैं, तो मैं आपके वचनों पर ध्यान दूँगी।*"

दिन ढलकर संध्या में परिवर्तित हो गया, और उनके उस विनीत कक्ष की सीमाओं के भीतर, मरियम के लंबे समय से अनुपस्थित स्वर्गीय साथी पुनः प्रकट हुए। उनकी मौन उपस्थिति ने उस स्थान को भर दिया, और उनके प्रकाश ने एक ऐसी कोमल आभा बिखेरी जिसने उनके शोक की छायाओं को दूर कर दिया। उन्होंने भावपूर्ण प्रार्थना में उनसे वार्तालाप किया, और

उनका हृदय अपनी तड़प और भक्ति को उड़ेल रहा था। लंबे समय के अलगाव के पश्चात, प्रभु ने स्वयं को एक बार फिर उन पर प्रकट किया, और वे एक ऐसी कोमल कांति के साथ उनके सम्मुख उपस्थित हुए जिसने उनके हृदय को उस चिर-प्रतीक्षित ऊष्मा से प्रज्वलित कर दिया। उनकी उपस्थिति उनकी आत्मा के लिए एक मरहम के समान थी, जो इस बात का स्मरण कराती थी कि उन्होंने उन्हें कभी वास्तव में नहीं त्यागा था। समय अपनी अटूट गति से मंदिर में बीतता रहा, और देखते ही देखते मरियम दस वर्ष की हो गईं।

एक दिन, उन्हें स्वयं परमेश्वर से अत्यंत हृदयविदारक समाचार प्राप्त हुआ: उनकी माता, अन्ना, अपने पार्थिव जीवन के अंत के निकट थीं।

परमेश्वर की आज्ञा पर, मरियम को उनके जन्मस्थान पर वापस ले जाने के लिए स्वर्गदूतों को भेजा गया। शोक और पवित्र कर्तव्य से ओत-प्रोत उस दृश्य में, मरियम अपनी माता के सिरहाने बैठी थीं और उनकी अंतिम श्वास तक कोमलता से उनका हाथ थामे रहीं। अत्यंत ममता के साथ, उन्होंने अपनी माता की आँखें मूंद दीं, उनके कपोलों पर और फिर उनकी उंगलियों के पोरों पर एक कोमल चुंबन अंकित किया। जैसे ही स्वर्गदूत अन्ना की आत्मा को अधोलोक (लिम्बो) ले गए, मरियम मंदिर लौट आईं, वे विछोह और ईश्वरीय दया की शाश्वत प्रतिज्ञा, दोनों का एक जीवित प्रमाण थीं।

अध्याय नौ
मरियम का वयस्क होना

वर्ष बीतते गए और मरियम ने, जो अब चौदह वर्ष की आयु पार कर चुकी थीं, अपने भाग्य को एक बार फिर ईश्वरीय विधान द्वारा प्रेरित पाया। एक रात्रि, जब याजक सिमोन निद्रा में थे, परमेश्वर ने उनसे संवाद किया और निर्देश दिया कि मरियम के विवाह का प्रबंध किया जाए। जब प्रातःकाल हुआ, तो सिमोन मरियम के साथ बैठे ताकि वे अपनी इस मंशा को साझा कर सकें। इससे पहले कि वे कुछ कह पाते, मरियम ने स्पष्ट और अटल निश्चय के साथ पहले उन्हें संबोधित किया।

"*महोदय,*" उन्होंने अपनी बात आरंभ की, उनका स्वर स्थिर था परंतु उसमें अत्यंत गंभीरता भरी थी, "*मेरी अभिलाषा है कि मैं अपने समस्त जीवन भर निरंतर कौमार्य को सुरक्षित रखूँ, क्योंकि मैं उन महान आशीषों के बदले, जो परमेश्वर ने मुझ पर बरसाए हैं, स्वयं को इस पवित्र मंदिर की सेवा में प्रभु को समर्पित करना चाहती हूँ। और वही करना चाहती हूँ जो उनकी इच्छा के अनुरूप हो।*"

सिमोन ने कोमल प्रज्ञा के साथ उनकी बात सुनी और विचारमग्न भाव से उत्तर दिया। "*मेरी पुत्री, तुम्हारी पवित्र इच्छाएँ प्रभु को स्वीकार्य हैं; परंतु स्मरण रखो कि इस्राएल की कोई भी कन्या तब तक विवाह से विमुख नहीं रहती जब तक कि हम दिव्य भविष्यवाणियों के अनुसार मसीह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वैवाहिक जीवन में भी तुम सत्यता और महान पूर्णता के साथ परमेश्वर की सेवा कर सकती हो। इसलिए, तुम्हें प्रार्थना आरंभ करनी चाहिए कि परमेश्वर तुम्हारे लिए एक ऐसा पति चुनें जो तुम्हें और दाऊद के वंश, दोनों को प्रिय हो।*"

उसी शाम, अपने कमरे के एकांत में, मरियम ने एक बार फिर दिव्य आत्मा के साथ एकाकार होने का प्रयास किया। प्रार्थना में घुटनों के बल बैठकर, अपने हाथों को कसकर जोड़कर, उसने एक कोमल, भावुक स्वर में अपनी हृदय की विनती प्रस्तुत की। "*मेरी आत्मा के सर्वोच्च कल्याण और प्रेम, आप मेरे हृदय के रहस्य और मेरी उन अभिलाषों को भली-भांति जानते हैं, जिन्हें आपने मेरे अस्तित्व के प्रथम क्षण से ही मुझमें जागृत किया है। अतः मेरे स्वामी, मुझे वैसा*

ही शुद्ध और कुंवारी बनाए रखें, जैसी मैंने इच्छा की है। हे प्रभु, मैं आपकी महानता को पुकारती हूँ और आपकी अनंत करुणा पर भरोसा रखती हूँ।"

उनके शब्द वायु में गूंजते रहे, जो सर्वशक्तिमान के प्रति उनकी अटूट भक्ति और विश्वास का प्रमाण थे। दिव्य आदेशों और मानवीय तड़प के इस परस्पर मेल में, मरियम का मार्ग निर्धारित हो चुका था, एक ऐसी यात्रा जो शोक, पवित्र कर्तव्य और सर्वशक्तिमान की सेवा में समर्पित भाग्य के तेजस्वी वादे से बुनी गई थी। उनका हृदय, यद्यपि उनके बुलावे के भार से दबा हुआ था, फिर भी अडिग रहा; वह उद्धार के लिए तड़पते संसार में विश्वास और नम्रता का एक प्रकाश स्तंभ था।

अध्याय दस
मरियम और यूसुफ की सगाई

यरूशलेम के ग्राम में, एक शोभायात्रा विश्वासियों को मंदिर के अंतर्गर्भ की ओर ले चली, जहाँ कई पुरुष भावपूर्ण प्रार्थना में घुटने टेके हुए थे। उन्हीं के मध्य यूसुफ नामक एक पुरुष थे, जो दाऊद के वंशज थे; वे तैंतीस वर्ष के और अत्यंत रूपवान थे, तथा उनका हृदय और शरीर पाप से सर्वथा निष्कलंक था। अन्यों के समान, उन्होंने भी अपने प्रभु की पूर्ण रूप से सेवा करने हेतु कौमार्य का व्रत लिया था। उस दिन जब वे प्रार्थना कर रहे थे, एक आंतरिक वाणी, जो सुस्पष्ट और आज्ञाकारी थी, उनके भीतर प्रतिध्वनित हुई:

"यूसुफ, मेरे सेवक, मरियम तुम्हारी पत्नी होंगी; उन्हें आदरपूर्ण श्रद्धा के साथ स्वीकार करो, क्योंकि वे मेरी दृष्टि में स्वीकार्य, धर्मपरायण और शरीर व आत्मा में अत्यंत शुद्ध हैं, और वे जो कुछ भी तुमसे कहेंगी, तुम वही करना।"

उस पावन क्षण में, उनकी आँखों के सम्मुख एक दिव्य दर्शन प्रकट हुआ: मरियम, जो मंदिर के अपने कर्तव्यों में लीन थीं, प्रार्थना में झुकते समय अलौकिक आभा से दीप्तिमान दिखाई दीं। इस ईश्वरीय प्रकाशन ने उनकी आत्मा को एक पवित्र उद्देश्य से भर दिया।

बाद में, मंदिर की पवित्र दीवारों के भीतर, मरियम चाँद से भी अधिक तेजस्वी दिखीं - अतुलनीय सौंदर्य और अनुग्रह का एक दृश्य। यहाँ, पुरोहित ने उसे पुरुषों में सबसे पवित्र और धर्मनिष्ठ यूसुफ से विवाह-बंधन में बाँध दिया। मंदिर के बाहर, अश्रुपूरित नेत्रों के साथ मरियम ने याजकों और सिस्टर अन्ना से विदा ली। इसके उपरांत, वे और यूसुफ नाज़रेथ की घुमावदार गलियों से होते हुए उनके उस पैतृक घर की ओर चल पड़े, जो उन्हें उनके माता-पिता से विरासत में मिला था। उनके आगमन पर पड़ोसियों और मित्रों ने उनका आत्मीय स्वागत किया।

वह धन्य महारानी अपने नए जीवनसाथी के साथ अपने जन्मस्थान पर लौट आई थीं। जैसा कि इब्रानियों में प्रथा थी, वैवाहिक जीवन के प्रथम कुछ

दिन एक-दूसरे की आदतों और स्वभाव को समझने के लिए समर्पित किए गए, ताकि समय आने पर, वे अपने व्यवहार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सामंजस्य स्थापित कर सकें।

प्रत्येक ने, परम प्रधान को प्रसन्न करने के लिए उत्सुक रहते हुए और यह जानते हुए कि वह उनकी ही इच्छा थी जिसने उन्हें एक साथ लाया था, बिना किसी प्रश्न के अपने भाग्य को अंगीकार किया।

यूसुफ अपनी नवविवाहित पत्नी को एक ऐसी पवित्रता से निहारते थे जो उनके कुलीन स्वभाव को दर्शाती थी; उन्हें उसकी कोमल भक्ति देखने में आनंद आता था। बदले में, मरियम को यूसुफ को देखने में आनंद मिलता था, जो एक विनम्र बढ़ई के रूप में निपुणता के साथ लकड़ी पर कार्य करते थे; वे प्रभु के प्रति सदैव कृतज्ञ रहते थे कि उन्होंने उन्हें अपनी नई पत्नी के भरण-पोषण का साधन प्रदान किया है। उनके प्रार्थना और शांत वार्तालाप के साझा क्षणों ने ईश्वर से किए गए उनके व्रतों को पुनः पुष्ट किया। इन आदान-प्रदानों में, सर्वोच्च ने एक बार फिर यूसुफ के हृदय में पवित्रता के गुण और उसकी पवित्र पत्नी के प्रति अर्पित पवित्र प्रेम की पुष्टि की। समय के साथ, यूसुफ को मरियम के अनेक गुणों के बारे में दिव्य ज्ञान भी प्राप्त हुआ - इसका प्रभाव तब देखा गया जब एक तेजस्वी प्रकाश, जो मानो स्वयं मरियम से परावर्तित हो रहा हो, ने उसे आच्छादित कर लिया।

अध्याय ग्यारह
सृष्टि के वे क्षण

उनके विवाह के छह मास पश्चात, ग्राम का जीवन अपनी गति से चलता रहा और यूसुफ ने मरियम की असीम करुणा तथा परमेश्वर की सेवा करने की उनकी अटल अभिलाषा को प्रत्यक्ष देखा। वे समस्त ग्राम में परोपकार के कार्य करती थीं, रोगियों और मरणासन्न व्यक्तियों की कोमलता से सेवा करती थीं, और प्रत्येक प्रातः एवं संध्या, वे मानव जाति के उद्धार के लिए अपनी प्रार्थना का स्वर ऊँचा करती थीं। एक संध्या, अपने विनीत कक्ष की शांत सीमाओं के भीतर, मरियम प्रार्थना में दंडवत लेटी थीं, और उनकी भुजाएँ एक क्रूस के आकार में फैली हुई थीं। तड़प और नम्रता से भरे स्वर में उन्होंने पुकार की:

"पिता का इकलौता पुत्र वास्तव में मानवीय स्वभाव के साथ स्वयं को एकाकार करने के लिए कब उतरेगा? दिव्यता की उस धारा को किसने रोक रखा है, जिससे संपूर्ण मानव जाति अतृप्त बनी हुई है? यदि कदाचित मैं ही कोई बाधा हूँ, तो इस आशीष को रोकने से पूर्व मेरा विनाश हो जाए, क्योंकि यह किसी भी प्राणी की योग्यता पर निर्भर नहीं हो सकता।
हे अनंत प्रभु और परमेश्वर, जैसे-जैसे मनुष्यों के पाप बढ़ते जा रहे हैं और आपके विरुद्ध अपराधों की संख्या गुणित होती जा रही है, हम उस आशीष के योग्य कैसे ठहरेंगे जिसके हम प्रतिदिन और भी अयोग्य होते जा रहे हैं? मैं अपने हृदय की गहराइयों से आपसे यह विनती करने का साहस करती हूँ कि आप अपने आगमन में शीघ्रता करें और अपनी महान महिमा के लिए मुक्ति के कार्य को गति प्रदान करें।"

उस क्षण, सर्वशक्तिमान का दिव्य संगीत स्वर्ग में गूँज उठा, जो मोक्ष की योजना के आरंभ की घोषणा कर रहा था।

उसी रात्रि, और आगामी नौ दिनों तक उसी मध्यरात्रि के प्रहर में, मरियम को दैवीय सामर्थ्य द्वारा ऊपर उठाया गया, उनका अस्तित्व आलोकित हो उठा और दिव्यता के दर्शन उनकी आँखों के सम्मुख प्रकट होने लगे।
प्रत्येक रात्रि, उन्हें सृष्टि के उन पवित्र क्षणों के दर्शन कराए गए: **प्रथम क्षण** में, परमेश्वर ने अपने अनंत गुणों और अपनी महिमा को प्रकट करने की उस अवर्णनीय अभिलाषा का प्रकाशन किया; **द्वितीय क्षण** में, उन्होंने इस ईश्वरीय

संचार के पीछे निहित उद्देश्य के दृढ़ निश्चय को जाना।

तृतीय क्षण में, इस संदेश के अत्यंत सावधानीपूर्वक चयन और व्यवस्था का रहस्य प्रकट हुआ। इस पावन अनुक्रम में, ख्रीस्त की पवित्र मानवता की सिद्ध रचना का विधान निर्मित हुआ और उसे ईश्वरीय बुद्धि में एक आदर्श स्वरूप दिया गया। सृष्टि के **चतुर्थ क्षण** में, उन वरदानों और अनुग्रहों का प्रकाशन हुआ जो दिव्यता के साथ मिलन में ख्रीस्त की मानवता को प्रदान किए जाने थे; साथ ही, ईश्वरीय शब्द की माता के विधान और पूर्वनियुक्ति का रहस्य भी खोला गया, और उस निवास स्थान की रचना का भी, जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी की सीमाएँ परिभाषित होनी थीं। **पंचम क्षण** में, मरियम स्वर्गदूतों के स्वभाव की रचना की साक्षी बनीं: स्वर्गीय सेनाओं का उनके पदानुक्रम के अनुसार नौ वृंदों में विभाजन, भले स्वर्गदूतों का चुना जाना और दुष्टों का परित्याग, तथा स्वयं स्वर्ग और नरक की रचना। अंततः, **षष्ठ क्षण** में, परमेश्वर ने एक जनसमूह की रचना को प्रकट किया, संपूर्ण मानव जाति का निर्धारित क्रम, जिसका आरंभ एक पुरुष और एक स्त्री से हुआ, जिनकी संतति अंततः उस कुंवारी और उनके पुत्र के जन्म की उद्घोषणा करने वाली थी। आदम के पतन को पहले ही देख लिया गया था, और उपचार के रूप में यह निर्धारित किया गया कि वह परम पावन मानवता दुःख सहने में सक्षम होनी चाहिए।

इन दिव्य दर्शनों ने मरियम को ऐसी समझ से परे प्रज्ञा प्रदान की, जो समस्त मनुष्यों के तर्क, कला और विज्ञान के ज्ञान से कहीं श्रेष्ठ थी। हमारी राजकुमारी के हृदय और मस्तिष्क में दिव्यता का वह विशाल महासागर उमड़ पड़ा, जो पूर्व में मानव जाति के पापों और दुष्ट प्रवृत्तियों के कारण अवरुद्ध था। उन्होंने परम सर्वोच्च में अनुग्रह और आशीषों के उस अकथनीय भंडार को देखा, जो समस्त मर्त्य मनुष्यों के लिए तैयार किया गया था; और उन्होंने इन शाश्वत उपहारों में मानवता को सहभागी बनाने की ईश्वर की अनंत अभिलाषा का अनुभव किया। इस गहन बोध ने उन्हें अत्यंत उच्च कोटि की प्रार्थनाएँ, याचिकाएँ, बलिदान और वीर प्रेम के कार्य अर्पित करने के लिए प्रेरित किया, ताकि कोई भी स्वयं को नरक के दंड का भागी न बनाए, बल्कि अपने सृष्टिकर्ता को धन्यवाद दे। उन क्षणों में, मरियम को ऐसा अनुभव हुआ मानो वे सृष्टि के बिल्कुल आरंभ में स्वयं उपस्थित थीं।

नौवीं संध्या को, जैसा कि परमेश्वर द्वारा निर्धारित था, स्वर्गदूत जिब्रिएल को मरियम के पास भेजा गया। उस समय लगभग संध्या के छह बज रहे थे और सूर्य अभी भी आकाश में अपनी आभा बिखेर रहा था, जब स्वर्गदूतों के

वृंदों के साथ जिब्रिएल उनके कक्ष में प्रकट हुए। यद्यपि मरियम ईश्वरीय दर्शनों की अभ्यस्त थीं, फिर भी वे प्रार्थना में लीन रहीं, जब तक कि उन्होंने अपना सिर उठाकर जिब्रिएल के उस असाधारण वैभव को न देख लिया। उस साधारण से कक्ष में, जहाँ उनकी साधारण खाट के अतिरिक्त कुछ न था, प्रत्येक कोना अलौकिक महिमा से भर गया, और उनके विचार शीघ्र ही एक अद्‌भुत निष्कर्ष पर जा टिके।

"*क्या वह धन्य समय आ गया है, जिसमें शाश्वत पिता का वचन जन्म लेगा? ओह, उन्हें देखने और जानने के योग्य कौन होगा? ओह, किसे उनके चरणों से स्पर्श की गई पृथ्वी को चूमने का सौभाग्य प्राप्त होगा?*" मरियम ने विस्मय से काँपती आवाज़ में पूछा।

गैब्रियल ने एक गूँजदार स्वर में उत्तर दिया, "*हे मरियम, तुझे नमस्कार, अनुग्रह से परिपूर्ण, स्त्रियों में धन्य है तू।*"

व्याकुल होते हुए भी हर्षित मन से मरियम ने पूछा, "*हे परमेश्वर के दूत जिब्रिएल, आप क्या कहते हैं? मैं कौन हूँ जिसे ऐसे अभिवादन के साथ पुकारा जाए? स्त्रियों में धन्य?*"

"*डरो मत, मरियम,*" गब्रियल ने उसे सांत्वना दी, "*क्योंकि तुम पर प्रभु का अनुग्रह हुआ है। देखो, तुम उससे एक पुत्र को जन्म दोगी, और उसका नाम यीशु रखना; वह महान होगा, और उसे परमप्रधान का पुत्र कहा जाएगा।*"

"*यह कैसे होगा - कि मैं गर्भधारण करूँ और बच्चे को जन्म दूँ, जबकि मैं किसी पुरुष को नहीं जानती और न ही जान सकती हूँ?*" मरियम ने बेचैनी और आशा दोनों के साथ अपने मन से पूछा।

"*यह केवल ईश्वरीय सामर्थ्य से होगा कि तू पुरुष के सहयोग के बिना माता बनेगी,*" गैब्रियल ने स्पष्ट किया। "*पपवित्र आत्मा तेरे साथ रहेंगे, जो एक नई उपस्थिति के रूप में प्रकट होंगे, और परम प्रधान की शक्ति तुझ पर छाया करेगी, जिससे जो उत्पन्न होंगे वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। और देख, तेरी कुटुंबिनी एलिजाबेथ ने भी एक पुत्र को गर्भ में धारण किया है, जो उनके आगे-आगे चलेगा, क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।*"

इन शब्दों के साथ, हमारी धन्य माता ने हमारे उद्धार का सूत्रपात किया। अत्यंत श्रद्धा और आत्म-समर्पण से भरे स्वर में मरियम ने उच्चारण किया, "*तेरे शब्द के अनुसार मुझमें ऐसा ही हो।*"

इस प्रकार, परमेश्वर की इच्छा के प्रति अपनी उस गूंजती हुई "हाँ" के माध्यम से, मरियम ने उस अपार प्रेम को समझा जो प्रभु मानव जाति के लिए रखते थे। उस प्रेम की तीव्रता उनके द्वारा अब तक अनुभव किए गए किसी भी अनुभव से भिन्न थी। उनके शुद्ध और निष्कलंक हृदय में इतना आनंद और आवेग उमड़ पड़ा कि उससे रक्त की तीन बूंदें टपक पड़ीं, जो एक पवित्र चिन्ह था। इन्हीं बूंदों के साथ, जो समस्त मानवता के लिए प्रभु के असीम प्रेम में मिल गई थीं, ख्रीस्त का निर्माण हुआ, जो सच्चे परमेश्वर और सच्चे मनुष्य, हमारे प्रभु और मुक्तिदाता हैं। यह चमत्कारिक घटना 15 मार्च को भोर के समय घटित हुई, ठीक उसी प्रहर में जब हमारे प्रथम पिता आदम को बनाया गया था, संसार की सृष्टि के 5199 में।

अध्याय बारह
स्त्रियों में आप धन्य हैं

कुछ दिनों बाद, मरियम ने यूसुफ से उसे अपनी चचेरी बहन से मिलने ले जाने के लिए कहा। वे ज़कारियास और एलिज़ाबेथ के घर जाने के लिए, जुदा की सड़क पर एक खच्चर पर चार दिन तक यात्रा करते रहे। जब मरियम खच्चर पर सवार थी, तो उसने टिप्पणी की, "*कितना उदार और दयालु तुम, मेरे पति, कितने उदार और दयालु हो कि मुझे अपनी चचेरी बहन के पास ले जा रहे हो। तुम खच्चर की पीठ पर आराम करो, और मुझे कुछ दूरी तक पैदल चलने की अनुमति क्यों नहीं देते?*"

यूसुफ ने उत्तर दिया, "*हालाँकि मैं आपकी सबसे छोटी सी भी मांग को अस्वीकार नहीं कर सकता, मेरी सबसे प्रिय जीवनसाथी, परन्तु मुझे यह अस्वीकार करना होगा।*
हालाँकि, यदि आप इस मुद्रा से थक जाएँ, तो मैं खुशी-खुशी कुछ दूरी तक आपके साथ चलने के लिए तैयार हूँ।"

उसने मरियम को खच्चर से उतरने में मदद की, और वे दोनों पैदल ही अपनी यात्रा जारी रखने लगे। कुछ देर बाद, यूसुफ ने पूछा, "*यह कैसे हो सकता है कि तुम्हारी चचेरी बहन, इतनी उम्र में, गर्भवती हो?*"

मरियम ने शांति से उत्तर दिया, "*शायद इस बच्चे की योजना यही है कि वह अब, और एलिजाबेथ के गर्भ से ही जन्म ले। मैं हमारे प्रभु के कार्य पर प्रश्न नहीं उठाती*।"

यूसुफ ने एक आह भरते हुए कहा, "*मेरे हृदय की अपूर्णता ही मेरे विचारों और वचनों की अपूर्णता का कारण बनती है। देखिए, मुझे आगे ग्राम की सीमा दिखाई दे रही है। शीघ्र ही आप विश्राम कर सकेंगी और अपनी चचेरी बहनसे भेंट कर पाएंगी।*"

जैसे ही वे यहूदा के ग्राम के निकट पहुँचे, वहाँ का दृश्य विस्तृत हो गया और ग्राम की रूपरेखा स्पष्ट दिखाई देने लगी। वे यात्री शीघ्र ही एलिजाबेथ के निवास पर पहुँचे। द्वार खुला, और मरियम का उसकी चचेरी बहन ने गर्मजोशी से स्वागत किया। साधारण से घर के अंदर, मरियम ने कहा, "*प्रभु तुम्हारे साथ हो, मेरी प्रिय चचेरी* बहन।" एलिजाबेथ ने उत्तर दिया, "*और तुम्हारे साथ भी, मेरी बहन।*"

वे दोनों स्त्रियाँ एक लघु कक्ष में चली गईं, जहाँ एक साधारण खाट और एक तिपाई रखी थी, और वे एक-दूसरे के सान्निध्य में अत्यंत हर्षित हो उठीं। मरियम ने कोमलता से अपना हाथ एलिजाबेथ के उभरे हुए उदर पर रखा और धीरे से कहा, "*परमेश्वर आपका कल्याण करें, मेरी प्रिय कुटुंबिनी, और उनकी ईश्वरीय ज्योति आपको अनुग्रह और जीवन प्रदान करे।*"

उन शब्दों के साथ ही, एलिजाबेथ एक देदीप्यमान प्रकाश से भर गईं और उन्हें अपनी बहन की अवस्था के विषय में ईश्वरीय बोध प्राप्त हुआ। विस्मय से भरे स्वर में एलिजाबेथ ने घोषणा की, "*स्त्रियों में आप धन्य हैं और धन्य है आपके गर्भ का फल। और यह मुझ पर कैसी कृपा है कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई हैं? क्योंकि जो ज्ञान हमें दिया गया है, उसके आनंद में मेरा शिशु मेरे गर्भ में उछल पड़ा है। जो कुछ पहले ही कह दिया गया था, वह शीघ्र ही आपके माध्यम से पूर्ण होगा।*"

मरियम ने आगे कहा, "*आपका पुत्र, जो योहन के नाम से जाना जाएगा, उनके आगे-आगे आएगा। वह उनकी भलाई की उद्घोषणा करेगा। क्योंकि मेरी आत्मा प्रभु की महिमा का गान करती है, और मेरा मन मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर में आनंदित होता है। उनकी सामर्थ्य ने मेरे लिए महान कार्य किए हैं, उनका नाम पवित्र है, और उनकी दया पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रहती है।*"

तत्पश्चात्, जब यूसुफ ने यहूदा से विदा लेने की तैयारी की, तो उन्होंने और जकरियास ने मौन रहकर एक-दूसरे का अभिवादन किया, क्योंकि जकरियास अपने अविश्वास के दंड स्वरूप अभी भी मूक थे। संकेतों के माध्यम से जकरियास ने दर्शाया कि उनके बालक के जन्म में अभी तीन चंद्रमाओं का समय शेष है; यह देखकर एलिजाबेथ ने एक कोमल मुस्कान के साथ विचार किया, "*ओह जकरियास, पुरुषों को भला शिशुओं के मन की बात कब से ज्ञात होने लगी? यह बालक तभी आएगा जब वह तैयार होगा, एक क्षण भी पूर्व नहीं।*"

यूसुफ ने दयालुता से अपनी बात जोड़ी, "*और उस समय तक मरियम आपकी परिचारिका बनी रहेंगी। एलिजाबेथ, आपकी सहायता के लिए इनसे अधिक कोमल हाथ और कोई नहीं हो सकते।*"

एलिजाबेथ ने सिर हिलाया, "*यह मैं जानती हूँ यूसुफ, यह मैं भली-भांति जानती हूँ। मित्र, आपकी यात्रा मंगलमय हो।*"

समय एक शांत सरिता की भाँति बहता रहा, और एलिजाबेथ के उस धुंधले, मोमबत्तियों की ऊष्मा से भरे कक्ष में वह चमत्कार घटित हुआ।

प्रसव की घंटों की पीड़ा के पश्चात, एक रुदन ने उस नीरवता को चीर दिया, एक नवजात की जीवन की प्रथम श्वास। एलिजाबेथ का पुत्र आ चुका था, जिसका नन्हा स्वरूप अस्तित्व की जीवंत शक्ति से कांप रहा था।

मरियम ने, अपने स्थिर और कोमल हाथों से, उस शिशु को इस प्रकार गोद में लिया मानो वह संसार का सबसे बहुमूल्य कोष हो। उन्होंने उसे नरम वस्त्र में लपेट दिया, जहाँ प्रत्येक तह उनकी भक्ति का एक भाव थी, और फिर अत्यंत सावधानी से उसे एलिजाबेथ की प्रतीक्षा करती भुजाओं में सौंप दिया। उस समय वायु एक पवित्र नीरवता के साथ झिलमिलाने लगी, मानो वह कक्ष स्वयं उस क्षण के विस्मय में अपनी श्वास रोके खड़ा हो। उन दोनों स्त्रियों के मध्य शुद्ध और असीम प्रेम प्रसारित हो रहा था, जो उन्हें नए जीवन के शांत आनंद में एक साथ बांध रहा था। कुछ समय पश्चात, एक बुजुर्ग के घर में, नवजात के खतना और नामकरण का समय आ गया। जकरियास के मूक होने के कारण, एलिजाबेथ ने उस समारोह की अध्यक्षता की। एक बुजुर्ग ने पूछा, "*बालक का क्या नाम होगा?*"

दूसरे ने जिज्ञासा की, "*हम उसे किस नाम से पुकारेंगे?*"

तब एलिजाबेथ ने घोषित किया, "*जकरियास, अब समय आ गया है कि तुम हमारे पुत्र का नामकरण करो। तुम उसे क्या नाम देते हो?*"

उसने (एलिजाबेथ ने) उनको एक पटिया और लिखने का उपकरण दिया। जैसे ही उन्होंने ये शब्द अंकित किए, "*उसका नाम योहन है,*" मरियम ने, जो अब ईश्वरीय सामर्थ्य से परिपूर्ण थीं, उन्हें उनके कष्ट से मुक्त कर दिया। अपनी आँखें क्षण भर के लिए मूंदकर, उन्होंने अपने भीतर ही धीरे से कहा, "*बोलने के लिए स्वतंत्र हो जाओ। अविश्वास के लिए मिला तुम्हारा दंड हटा लिया गया है।*"

तब जकरियास ने एक स्पष्ट स्वर में उद्घोषणा की, "*उसका नाम योहन है। धन्य है इस्राएल का प्रभु परमेश्वर; क्योंकि उन्होंने अपने लोगों की सुधि ली है और उनका उद्धार किया है, ताकि वे उन पर प्रकाश चमकाएँ जो अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं, और हमारे चरणों को शांति के मार्ग पर निर्देशित करें।*"

वहाँ एकत्रित जनसमूह में एक सन्नाटा छा गया। कुछ लोग अपने घुटनों के बल गिर पड़े और पुकार उठे, "*चमत्कार!*" एलिजाबेथ और जकरियास

ने मरियम के साथ एक अर्थपूर्ण और प्रेमपूर्ण दृष्टि साझा की। प्रत्युत्तर में, मरियम ने भी उनकी ओर देखा और फिर एक नम्र एवं शांतिपूर्ण भाव के साथ अपना सिर झुका लिया।

अध्याय तेरह
यूसुफ को प्रकटवाणी

सड़क के किनारे, मरियम एक बार फिर खच्चर की पीठ पर सवार थीं, जिनका मार्गदर्शन यूसुफ कर रहे थे। वसंत के नव-पल्लवित वृक्षों के बीच से होकर जाते हुए, उन्होंने कोमलता से अपना हाथ अपने उदर पर रखा; उनके मुखमंडल पर एक मंद मुस्कान सुशोभित थी, जो उनके भीतर पनप रहे जीवन का एक मौन प्रमाण थी। तत्पश्चात्, जब ऋतु बदल कर उत्तर-ग्रीष्म में परिवर्तित हुई, तो मरियम की आकृति प्रातः काल की कोमल आभा में उभर कर आई, जिसमें अब उनके गर्भवती होने के प्रथम सुस्पष्ट लक्षण दिखाई दे रहे थे। यूसुफ ने शांत चिंतन के साथ उन्हें देखा जब वे अपना स्तुतिगान समाप्त कर रही थीं, और उनके चेहरे पर व्याकुलता और शोक की रेखाएं अंकित थीं।

उस दिन के उत्तरार्ध में, अपने कक्ष के शांत एकांत में, यूसुफ प्रार्थना में घुटने टेके हुए थे और उनका हृदय द्वंद्व के बोझ से भारी था। वे फुसफुसाए, "*हे मेरे प्रभु, मेरा हृदय व्याकुलता से भरा है। क्योंकि आप जानते हैं कि मैंने अपने कौमार्य के व्रत का पालन किया है। इसका क्या अर्थ हो सकता है कि मेरी पत्नी, जो हृदयों में सबसे शुद्ध और स्वभाव में सबसे विश्वसनीय है, गर्भवती दिखाई देती हैं? यह कैसे संभव है? मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे इस भार से मुक्त करें, क्योंकि यह सोचकर ही मेरा अस्तित्व छिन्न-भिन्न हो रहा है कि हमारा धर्मशास्त्र मुझसे क्या मांग कर सकता है। मैं अपने निर्णय को रोककर विलंबित करता हूँ। मुझे विश्वास नहीं होता कि मरियम ने आपको रुष्ट किया है; तथापि मैं यह भी कल्पना नहीं कर सकता कि ऐसा कोई रहस्य हो सकता है जिससे मैं, उनका पति होने के नाते, अनभिज्ञ रखा जाऊँ। मेरी बुद्धि का मार्गदर्शन करें और वही पूर्ण करें जो आपको सर्वाधिक प्रिय हो।*"

यूसुफ से अनभिज्ञ, मरियम ने, ईश्वरीय अनुग्रह द्वारा उनके आंतरिक विचारों के उस मौन प्रवाह को सुना। उनकी प्रार्थना में स्पष्ट शोक और व्याकुलता को देखकर उनकी आँखें अश्रुओं से भर गईं, यद्यपि वे अपनी अवस्था के छिपे हुए सत्य को प्रकट नहीं कर सकती थीं। दिन बीतते गए, और जैसे-जैसे वे प्रेमपूर्ण कोमलता के साथ उनकी सेवा करती रहीं, उनका रहस्य और भी प्रत्यक्ष होता गया। यूसुफ, अपने संघर्ष में एकाकी रहते हुए, एक पीड़ादायक निर्णय से जूझ

रहे थे। धर्मशास्त्र उन्हें आज्ञा देता था कि वे उन्हें त्याग दें और दंड के लिए अधिकारियों को सौंप दें। एक सुबह, अपने शोक को और अधिक रोकने में असमर्थ होकर, उन्होंने भोजन कक्ष में ऊँचे स्वर में बात की, जब मरियम उन्हें परोस रही थीं।

"क्या तुम नहीं समझतीं कि तुम्हारे लिए कुछ क्षण बैठना ही उत्तम होगा? वैसे भी मेरा मन भोजन करने का नहीं है। यह भोजन उन्हें जाने दो जिन्हें इसकी अभिलाषा है। क्या तुम जानती हो कि आज ग्राम में क्या होने वाला है? व्यापारी याकूब की पत्नी को उसके व्यभिचार के अपराध के लिए पत्थरों से मार दिया जाएगा। इतना ही नहीं, अभागे याकूब को ही उसे अधिकारियों को सौंपना पड़ा, और अब उसे ही पहला पत्थर मारने के लिए विवश किया जाएगा।"

इन कठोर शब्दों के साथ, वह अचानक उठा और कक्ष से बाहर चला गया, जिससे मरियम उस मेज पर अकेली रह गईं और उनके मुखमंडल पर मौन अश्रुओं की धारा बहने लगी। अपनी उस गहरी व्यथा में, उन्होंने अपनी दृष्टि स्वर्ग की ओर उठाई और प्रार्थना की, *"हे धन्य आत्माओं और परम प्रधान के सेवकों, जो उनके विश्वासयोग्य दासों और रक्षकों के रूप में मेरे साथ रहते हो, मैं तुमसे विनती करती हूँ कि तुम परमेश्वर के सम्मुख मेरी यह प्रार्थना प्रस्तुत करो कि वे मेरे पति यूसुफ के कष्टों को कम करें। प्रभु से अनुनय करो कि वे एक सच्चे पिता के समान उन्हें देखें और सांत्वना दें। इसके अतिरिक्त, तुम, जो मेरे सदैव के विश्वासपात्र साथी हो, मेरे इस समर्पित पार्थिव मित्र के हृदय तक पहुँचो और उनके मन से मुझे त्यागने के निश्चय को दूर करो। उन्हें परमेश्वर के उन बोध से परे कार्यों का आश्वासन दो, जिनमें से अधिकांश सभी से गुप्त रहते हैं।"*

उसी दिन के उत्तरार्ध में, अपनी कार्यशाला के एकांत में, यूसुफ स्वयं से ही बातें करते हुए फूट-फूट कर रोने लगे, और अपनी निराशा में बोले, *"मैं रात्रि में गुप्त रूप से यरूशलेम के मंदिर के लिए निकल जाऊँगा, और वहाँ धन अर्पित करूँगा ताकि परमेश्वर मरियम की सहायता करें, उन्हें मनुष्यों के कोप से बचाएं और उन्हें प्रत्येक दुर्भाग्य से मुक्त रखें।"*

मानो उनके इस विलाप के उत्तर में, अचानक प्रकाश की किरणें उस अंधकार को चीरती हुई प्रकट हुईं, जिससे उनके चेहरे पर अंकित शोक की रेखाएं कोमल हो गईं और उन्हें क्षणिक शांति प्राप्त हुई। उस रात्रि, अपने कक्ष की नीरवता में, मरियम भावपूर्ण प्रार्थना में घुटने टेके हुए थीं और दिव्यता के साथ मिलन की खोज कर रही थीं। उनका स्वर स्थिर था और संकल्प से भरा

था जब उन्होंने घोषणा की, "*उस पति की सहायता करने में प्रमाद न करना मेरा कर्तव्य है, जिसे मैंने आपके हाथों से प्राप्त किया है। यदि मैंने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है, तो उन्हें भी उस अनुग्रह में सहभागी होना चाहिए। क्योंकि मैं अपने गर्भ में आपके पुत्र को धारण किए हुए हूँ, जो मनुष्य का रूप धारण करेंगे। इन महान कार्यों की पूर्णता में मुझे आपके सेवक यूसुफ की सहायता की आवश्यकता होगी।*"

उसके हृदय में एक कोमल किंतु आज्ञाकारी उत्तर प्रतिध्वनित हुआ, मानो स्वयं सर्वशक्तिमान ने ही कहा हो: "*मेरी परम प्रिय, मैं शीघ्र ही अपने सेवक यूसुफ के पास जाऊँगा और अपने स्वर्गदूत के द्वारा उस पर वह सब प्रकट कर दूँगा जो अभी उससे अज्ञात है। मैं उसे अपनी आत्मा से भर दूँगा और उसे इन रहस्यों में अपनी भूमिका निभाने के योग्य बना दूँगा।*"

मरियम ने विनम्र कृतज्ञता के साथ उत्तर दिया, "*मैं आपकी अनंत प्रज्ञा पर भरोसा रखती हूँ, क्योंकि मेरा विश्वास है कि यूसुफ को अपनी परीक्षाओं से गुज़रना ही चाहिए ताकि वे उस धैर्य को प्राप्त कर सकें जो उस यात्रा के लिए आवश्यक है जिसे आपने हमारे लिए निर्धारित किया है। आपकी करुणा और दया के लिए, मैं आपको कोटि-कोटि धन्यवाद देती हूँ।*"

कुछ रातों के पश्चात, यूसुफ अपने कक्ष में व्याकुल होकर करवटें बदलते रहे, जब तक कि अंततः वे गहरी निद्रा के वशीभूत नहीं हो गए। उस निद्रा में, एक स्वर्गदूत उनके ऊपर से होकर गुज़रा और उन्हें वह सब प्रदान किया जिसका प्रभु ने विधान किया था।

सूर्योदय के समय, जैसे ही उन्होंने खिड़कियाँ खोलीं और नए दिन का स्वागत किया, उनकी आत्मा एक आकस्मिक और गहन बोध से भर गई कि उनकी प्रिय मरियम वास्तव में परमेश्वर की सच्ची माता बनने वाली थीं। अभिभूत होकर, वे प्रार्थना में अपने घुटनों के बल गिर पड़े और पुकार उठे, "*ओह, मेरे परम प्रधान, उनके निवास-स्थान और उनकी माता के विषय में: मुझ जैसे अयोग्य दास ने आपकी सत्यनिष्ठा पर संदेह करने का दुस्साहस कैसे किया? मैंने घुटनों के बल आपकी सेवा करने को अपना सबसे गंभीर कर्तव्य क्यों नहीं बनाया? हे प्रिय प्रभु, मुझे वह अनुग्रह और शक्ति प्रदान करें कि मैं उनसे क्षमा मांग सकूँ; और उनके हृदय को दया से भर दें ताकि वे इस शोकाकुल सेवक का तिरस्कार न करें।*"

इससे पूर्व कि मरियम जागतीं, यूसुफ ने भोर के शांत घंटों में अपनी तैयार की हुई एक छोटी सी गठरी खोली और अश्रुपूरित नेत्रों के साथ घर में घूम-घूम कर कमरों को व्यवस्थित करने लगे, फर्श रगड़ने लगे और उन कार्यों को सँभालने लगे जो कभी केवल मरियम के थे। अंततः जब मरियम उठीं, तो यूसुफ ने कोमलता से उनके द्वार पर दस्तक दी और भीतर प्रवेश कर उनके चरणों में घुटने टेक दिए। पश्चाताप से भरे भारी स्वर में उन्होंने कहा,

"मेरी स्वामिनी और वधू, शाश्वत 'शब्द' की सच्ची माता, परमेश्वर और हमारे प्रभु के निमित्त, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे क्षमा करें। मुझे तनिक भी संदेह नहीं कि आपको मेरे सभी विचारों का ज्ञान है, और यह बात मुझे और भी अधिक लज्जित कर देती है। जब तक आप मुझे अपने अनुग्रह, क्षमा, सद्भावना और आशीष का आश्वासन नहीं दे देतीं, मैं इन घुटनों से नहीं उठूँगा।"

मरियम ने, करुणा से भरी कोमल आँखों के साथ उत्तर दिया, "*हे मेरे स्वामी और साथी, मुझे भी आपसे उस पीड़ा और शोक के लिए क्षमा माँगनी चाहिए जो आपने मेरे कारण सहन किया है। मैंने आपके दुख की गहराई को देखा और अनुभव किया है। यद्यपि मैं इस गुप्त संस्कार के कारण को प्रकट करने के लिए लालायित थी, तथापि यह मेरे अधिकार में नहीं था कि मैं इसे तब तक साझा करूँ जब तक कि उनकी पवित्र और सिद्ध इच्छा का कार्य पूर्ण न हो जाए। यह कभी संभव नहीं था कि मैंने आपको अपने स्वामी और पति के रूप में सम्मान न दिया हो, जिसके कारण मैं मौन रही।*"

उनके वचनों से द्रवित होकर यूसुफ धीरे से बोले, "*समस्त स्त्रियों में आप धन्य हैं। उन्होंने अपनी महिमा को किसी अन्य में वैसा महान नहीं बनाया जैसा आपकी नम्रता में बनाया है, और मुझ जैसे जीवित प्राणियों में सबसे तुच्छ व्यक्ति को, उन्होंने अपनी दिव्य कृपा में, आपकी सेवा के लिए चुना है।*"

उसी क्षण, जैसे ही मरियम ने '*मैग्निफ़िकैट*' (मरियम का स्तुतिगान) का पाठ करना आरंभ किया, वही स्तोत्र जिसे उन्होंने एलिजाबेथ से भेंट के समय प्रायः गाया था, एक चमत्कारिक रूपांतरण ने उन्हें घेर लिया। वे एक अलौकिक परमानंद से प्रज्वलित हो उठीं, और प्रकाश के एक देदीप्यमान पुंज ने उन्हें अपने आगोश में ले लिया, जिससे वे महिमा के वरदानों से

रूपांतरित हो गईं। यूसुफ ने इस दिव्य वैभव का साक्षी बनते हुए, घुटनों के बल रहकर अपनी महारानी के प्रति उल्लास में हाथ उठाए। अंत में, एक अत्यंत विस्मयकारी दर्शन में, उन्होंने मरियम के उदर में देखा और ख्रीस्त बालक को उसी भव्य प्रकाश से प्रज्वलित पाया, जो समस्त ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं की पूर्णता का एक पवित्र चिन्ह था।

अध्याय चौदह
बेथलहम की यात्रा

नाज़रेथ के हृदय में, गलियाँ जीवन के स्पंदन से भरी थीं, जहाँ ठेलों की खड़खड़ाहट, व्यापारियों का शोर और अनगिनत पैरों की लयबद्ध आहट का एक कोलाहलपूर्ण संगीत गूँज रहा था। वातावरण मसालों की सुगंध, पसीने की गंध और निरंतर आवागमन से उड़ने वाली धूल के तीखेपन से भारी था। इसी कोलाहल के बीच, सम्राट औगुस्तुस की एक नई राजाज्ञा की घोषणा करते हुए एक उद्घोषक का स्वर अत्यंत तीखा और प्रभावशाली होकर उभरा। वे शब्द जनसमूह में किसी प्रघाती लहर के समान फैल गए: एक जनगणना की जानी थी, जिसके अनुसार विशाल रोमी साम्राज्य के भीतर प्रत्येक जन की गणना होना अनिवार्य था। यह समाचार शीघ्र ही चारों ओर फैल गया, जिससे लोगों के मध्य कानाफूसी, कराह और जल्दबाजी में फुसफुसाहट होने लगी। परिवारों ने अपनी दैनिक चर्या को बीच में ही रोक दिया; उनके चेहरों पर चिंता और गणना की रेखाएँ स्पष्ट थीं। अब यात्राओं की योजना बनानी थी, जीवन को अपनी जड़ों से उखाड़ना था और लंबी सड़कों की दूरी तय करनी थी, ताकि उस साम्राज्य की इच्छा को पूर्ण किया जा सके जिसका हाथ उनके जीवन के हर कोने तक फैला हुआ था। उस राजाज्ञा का भार वायु में भारी होकर व्याप्त था, जो उस दूरस्थ शक्ति का स्मरण करा रहा था जो उनके भाग्य को आकार दे रही थी।

मरियम ने अत्यंत कोमलता से संवाद किया; उनके स्वर में एक शांत समझ भरी थी। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सम्राट द्वारा आदेशित यह जनगणना एक महान योजना का अंश थी, जो स्वयं परमेश्वर द्वारा निर्धारित की गई थी। यूसुफ, इस गहरे अर्थ से अनभिज्ञ रहते हुए, अकेले ही बेथलेहेम जाने की तैयारी करने लगे, जो वह नगर था जहाँ नाज़रेथ के सभी निवासियों को अपना पंजीकरण कराना अनिवार्य था। परंतु मरियम सत्य जानती थीं। बहुत पहले यह भविष्यवाणी की गई थी कि परमेश्वर के पुत्र, उन इकलौते जन्में का जन्म बेथलेहेम में होगा। वे इस पवित्र ज्ञान को अपने भीतर संजोए

हुए थीं, और इस बात से भली-भांति परिचित थीं कि उनका बालक इस संसार में किसी राजसी वैभव में नहीं, अपितु सादगी और नम्रता के साथ प्रवेश करेगा, जो शक्तिशाली लोगों की आँखों से ओझल होगा। यद्यपि उनका आगमन शांत होगा, तथापि वह बहुत पहले किए गए वादों को पूर्ण करेगा, जो एक असाधारण युग के आरंभ का प्रतीक होगा।

तत्पश्चात्, घर पर जब वे दोनों साथ बैठे थे, तब यूसुफ ने अत्यंत कोमल चिंता के साथ कहा, "*मैं आपको इतनी लंबी यात्रा पर ले जाने का साहस नहीं कर पा रहा हूँ, परंतु आपको अकेला छोड़ने का दुस्साहस भी मुझमें नहीं है। मैं आपके बिना जीवित नहीं रह पाऊँगा और आपसे दूर एक क्षण भी विश्राम नहीं कर पाऊँगा।*" मरियम ने, विनीत आदर के साथ, उन्हें अपने परिवार के नेतृत्व का उत्तरदायित्व स्वीकार करने दिया, यह एक ऐसा निर्णय था जो बहुत पहले लिया जा चुका था, यद्यपि उनके ज्ञान से गुप्त था।

प्रस्थान के दिन, नगर उन लोगों से भरा हुआ था जो राजकीय आज्ञा का पालन कर रहे थे। यूसुफ उन व्यस्त गलियों में भटकते रहे, और अपनी गर्भवती पत्नी के भार को कम करने के लिए बड़ी व्याकुलता से एक खच्चर की खोज करने लगे। अंततः, उन्हें एक ऐसा व्यक्ति मिला जो सहायता करने के लिए सहमत हुआ। यूसुफ ने विनती की, "*महोदय, कृपया सहायता करें, मेरी पत्नी गर्भवती हैं और उनके लिए पैदल चलना बहुत कठिन है। इसके बदले में मैं आपके बैलों के लिए एक नया जूआ बना दूँगा।*" उस व्यक्ति ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "*एक नया जूआ और साथ ही पानी लाने के लिए एक नया पात्र भी! जाओ, इसे ले जाओ। यह बूढ़ा है, आशा करता हूँ कि यह मार्ग में ही न मर जाए!*"

दृढ़ आशावाद के साथ यूसुफ ने उसे आश्वस्त किया, "*विश्वास रखें कि आपको इस कार्य के लिए प्रतिफल मिलेगा! और वह भी बहुत उत्तम प्रतिफल,*" और वे खच्चर को लेकर मरियम से मिलने के लिए उत्सुकतापूर्वक निकल पड़े।

शीघ्र ही, वह युगल बेथलेहेम के मार्ग पर चल पड़ा। प्रारंभ में ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे अकेले ही यात्रा कर रहे हों, परंतु जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, एक अद्भुत दृश्य प्रकट हुआ: परमेश्वर द्वारा भेजे गए हजारों स्वर्गदूत उनकी

इस यात्रा में उनके साथ थे। उनमें से कुछ ने मानवीय रूप धारण कर लिया था और वे केवल मरियम को ही दिखाई दे रहे थे, जो खच्चर पर सवार न होने के समय उन प्रकाशमय प्राणियों के मध्य चलती थीं, मानो उनकी अपनी आंतरिक ज्योति उस स्वर्गीय आभा के साथ एकाकार हो रही हो। वे विश्राम की खोज में कई छोटे गाँवों से होकर गुज़रे, तथापि एक के बाद एक द्वार उनके लिए बंद कर दिए गए। एक सराय में, सराय के स्वामी ने बड़बड़ाते हुए कहा, "*तुम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि मैं तुम जैसों को यहाँ भीतर आने दूँ।*" परंतु उसकी पत्नी ने कोमलता से बीच-बचाव किया, "*स्वामी, इन्हें देखिए। वे अभी बहुत युवा हैं और उनका प्रसव का समय निकट है। उन्हें कम से कम दीवार के सहारे विश्राम तो करने दीजिए। वे फर्श पर बैठ सकती हैं और ये बाहर धूल में विश्राम कर सकते हैं।*"

उस स्त्री के शांत मार्गदर्शन का अनुसरण करते हुए, यूसुफ मरियम को एक संकरी गलियारे में ले गए, जहाँ उन्होंने उन्हें ठंडे पत्थर के फर्श पर बैठने में सहायता की। अभी उनका सिर दीवार के सहारे झुका ही था और आँखें बंद ही हुई थीं कि सराय का स्वामी गरज उठा, "*चलो हटो, तुमने मेरी मालकिन की बात सुनी, बाहर निकलो! बाहर! अन्यथा मैं इसे भी बाहर फेंक दूँगा।*" यूसुफ को विवश होकर उन्हें पीछे छोड़ना पड़ा, परंतु मरियम अकेली नहीं थीं, उनके स्वर्गदूत रक्षकों ने उन्हें कोमलता से ऊपर उठा लिया और उनके सिर के नीचे सहारा दिया ताकि कठोर पत्थर उन्हें न चुभे, और वे निरंतर उनकी देखरेख करते रहे।

तीसरे दिन तक मौसम अत्यंत विकराल हो गया। भयंकर आँधी और मूसलाधार वर्षा ने मार्ग को झकझोर दिया, और मरियम, जो स्पष्ट रूप से थकी हुई थीं, खच्चर पर बैठे रहने के लिए संघर्ष कर रही थीं। तूफान के वेग में वे नीचे फिसल गईं और कीचड़ में लड़खड़ा गईं, जबकि वह पशु उनकी पहुँच से दूर भाग गया। त्वरित दृढ़ निश्चय के साथ, यूसुफ दौड़कर उनके समीप पहुँचे, उन्हें अपनी भुजाओं में उठा लिया और पास के एक वृक्ष की ओट में ले गए। कोमलता से उन्होंने उन्हें भूमि पर लेटाया और गिरती हुई शाखाओं को एकत्रित किया ताकि उन्हें इस निर्दयी प्रकृति के प्रकोप से बचाया जा सके। अपने घुटनों के बल गिरकर उन्होंने भावपूर्ण प्रार्थना की, "*सर्वशक्तिमान परमेश्वर, क्या उन्हें, जिन्हें आपने मनुष्य के उद्धार के द्वार के रूप में चुना है, ऐसे कष्ट और असुविधा से मुक्त नहीं होना चाहिए? मैं आपसे*

विनती करता हूँ, इस समय उन्हें इससे बचा लें। मुझे भले ही इस मूसलाधार वर्षा में चलने दें, परंतु सूर्य को निकलने दें ताकि इनके भीगे हुए वस्त्र सूख सकें।"

चमत्कारिक रूप से, मानो प्रार्थना के उत्तर में, तूफान थम गया; हवा शांत हो गई, वर्षा रुक गई और सूर्य अपनी प्रखर स्पष्टता के साथ निकल आया। यूसुफ ने मरियम के ऊपर से उन शाखाओं को हटाया, और उनकी आँखों के सामने ही उनके वस्त्र सूख गए। यहाँ तक कि वह खच्चर भी पानी झाड़ते हुए वापस लौट आया, और उस क्षणिक समय के लिए, उन दोनों ने एक मधुर मुस्कान साझा की।

"*मेरी थकी हुई और धैर्यवान जीवनसाथी, क्या आप थोड़ा और आगे चलने का साहस जुटा पाएंगी? फिर कल प्रातः हम जल्दी निकलेंगे और ढलते दिन तक अपने गंतव्य पर पहुँच जाएंगे,* यूसुफ ने कहा।" *मरियम ने अपना हाथ बढ़ाया और स्नेह के साथ उत्तर दिया, "मुझे उठकर चलने की स्थिति में आने के लिए केवल आपके हाथ के सहारे की आवश्यकता है। बेथलेहेम का यह छोटा सा नगर हमें किसी भव्य नगर के समान प्रतीत होगा जब हमारी आँखें उसे देखेंगी। यूसुफ, क्या आप कुछ समय के लिए सवारी नहीं करेंगे? आप पूरी यात्रा में पैदल चले हैं; आप अवश्य ही थक गए होंगे।*

यूसुफ ने स्वीकार करते हुए कहा, "*हम इस पशु को थोड़ा विश्राम देंगे; यह अभी भी उस तूफान से डरा हुआ प्रतीत होता है। आइए, हम साथ-साथ चलेंगे। क्या चलते समय मैं आपसे कुछ कह सकता हूँ?*" मरियम ने सिर हिलाकर अनुमति दी, "*मेरे समर्पित जीवनसाथी, आपके हृदय और मन में जो कुछ भी है, उसे निसंकोच कहें।*" एक गहरी आह भरकर यूसुफ ने स्वीकार किया, "*मैं ही क्यों? मुझ जैसा तुच्छ, अयोग्य और दोषों से भरा प्राणी ही क्यों, जबकि अन्य कई लोग मुझसे अधिक उपयुक्त थे?*"

मरियम ने, अपने स्वर में एक शांत आश्वासन भरते हुए उत्तर दिया, "*क्या आपको लगता है कि हमारे प्रभु यह नहीं जानते कि उन्होंने किसे चुना है? क्या वे यह नहीं जानते कि आपका हृदय और मन, जो उनके अपने हाथों से गढ़ा गया है, उनके पुत्र की सेवा करने के लिए सर्वोच्च कुलीनता रखता*

है?"

फिर, थोड़े दुःख के साथ, उन्होंने जोड़ा, *"लेकिन आपकी सेवा का क्या? आप अपने गर्भ में बच्चे का पालन-पोषण कर रही हैं। आप ही उसकी जीवन-दात्री शक्ति हैं। आप, जिन्हें हमारे ईश्वर की इतनी उच्च सम्मान में रखा गया है - मैं आपकी सेवा कैसे करूँ? मैं आपके लिए यात्रा हेतु एक पशु तक का उचित प्रबंध करने में कठिनाई अनुभव कर रहा हूँ, जबकि यह स्पष्ट है कि आपका प्रसव समय निकट है। मैंने आपको अत्यंत निराश किया है, क्या ऐसा नहीं है?"*

मरियम ने उनका हाथ थाम लिया और कोमलता से उत्तर दिया, *"इस यात्रा का कौन सा भाग आपको लगता है कि सर्वशक्तिमान से अज्ञात है? यूसुफ, आपकी झोली में रखे सिक्कों या संपत्तियों की संख्या आपको योग्य नहीं बनाती। कोई भी अन्य साथी आपसे अधिक सचेत नहीं हो सकता था। कोई भी अन्य आपसे बेहतर और अधिक प्रेमपूर्ण संगी नहीं हो सकता था।"*

जैसे ही भोर की प्रथम किरणें आकाश में बिखरीं और क्षितिज को स्वर्ण एवं अंबर के रंगों से सराबोर कर दिया, मरियम और यूसुफ एक बार फिर निकल पड़े; उनके थके हुए कदम उन्हें बेथलेहेम के और निकट ले जा रहे थे। सूर्य निरंतर ऊपर चढ़ता गया और जैसे-जैसे समय बीतता गया, उसकी उष्णता धूल भरी सड़क पर और अधिक महसूस होने लगी। पाँचवें दिन दोपहर के समय, अंततः बेथलेहेम की आकृति दूर से दिखाई देने लगी, जो लहरदार पहाड़ियों के बीच बसे निचले पत्थर के भवनों का एक समूह था। वह ग्राम जीवन की हलचल से गूँज रहा था और उन यात्रियों के कोलाहल से जीवंत था जो दूर-दराज से आए थे। सामान के भार से गाड़ियाँ चरमरा रही थीं, खच्चर अधीरता से हिनहिना रहे थे, और बच्चे उन संकरी गलियों में दौड़ रहे थे, जिनका उल्लास संगीत के समान प्रतिध्वनित हो रहा था।

माता-पिता एक-दूसरे को पुकार रहे थे; और उनके स्वरों में व्याकुलता थी क्योंकि वे उन भीड़भरी सरायों में आश्रय खोज रहे थे। बेथलेहेम, यद्यपि लघु था, तथापि एक अशांत ऊर्जा से स्पंदित हो रहा था, मानो वह किसी असाधारण घटना के लिए तैयार किया गया एक विनीत मंच हो।

मरियम और यूसुफ आगे बढ़ते रहे, उनके हृदय थकान से बोझिल थे परंतु उनमें एक शांत दृढ़ निश्चय भरा था, क्योंकि उस नगर की प्रतिज्ञा और उसकी चुनौतियाँ उन्हें अपने भीतर खींच रही थीं।

यूसुफ ने आशापूर्ण दृढ़ता के साथ कहा, "*यहाँ कई निवास स्थान हैं। मुझे विश्वास है कि हमें कोई न कोई दयालु हृदय अवश्य मिलेगा जो हमें रात्रि के लिए आश्रय प्रदान करेगा। आइए, हम आरंभ करें। मुझे अपना मुख प्रक्षालन कर लेना चाहिए ताकि मैं कुछ सुव्यवस्थित दिख सकूँ, है न? चलिए, यहाँ आइए।*" खच्चर को एक सार्वजनिक जलस्रोत की ओर ले जाते हुए, यूसुफ ने अपने मुख पर जल के छीटें मारे।

समीप ही खड़ी एक भीड़ ठहाकों के साथ हंस पड़ी। एक व्यक्ति ने उपहास करते हुए कहा, "*यह उसी जल से मुख धो रहा है जो हमारे पशुओं के लिए है। मुझे लगता है कि इन जैसों के लिए यही उचित है।*" एक स्त्री ने व्यंग्य किया, "*कदाचित इन्हें अपने जल के साथ कुछ अनाज भी चाहिए?*" एक अन्य पुरुष चिल्लाया, "*अरे ओ मनुष्य, कम से कम उस चार पैर वाले प्राणी को तो घूँट भर पी लेने दो!*"

इस उपहास के मध्य, मरियम ने अपनी ओढ़नी के एक छोर से कोमलतापूर्वक यूसुफ का मुख पोंछा और धीरे से आग्रह किया, "*आइए; इससे पहले कि अंधकार हो जाए, हम अपने ठहरने का स्थान खोज लें।*" वे पूरे नगर में द्वार-द्वार भटकते रहे, परंतु प्रत्येक प्रयास के उत्तर में उन्हें केवल तिरस्कार ही प्राप्त हुआ। कुछ द्वार उनके मुख पर ही धड़ाम से बंद कर दिए गए, और वे कई अन्य लोगों के पास से गुजरे जो उन्हीं के समान दुर्दशा में थे, अवांछित और आश्रयहीन।

जब संध्या ढली और सूर्य का स्थान चंद्रमा ने ले लिया, तब वे ग्राम के उस अंतिम छोर पर पहुँचे जहाँ एक अंतिम सराय स्थित थी। यूसुफ ने घोषणा की, "*निश्चित ही, वे दया दिखाएंगे। मैं जाता हूँ और आपके लिए एक कक्ष सुरक्षित करता हूँ।*"

वे कुछ कदम दूर चले गए, और मरियम को सराय के ठीक बाहर खच्चर की पीठ पर विश्राम करने के लिए छोड़ दिया। परंतु कुछ ही क्षणों के पश्चात, सराय के स्वामी ने यूसुफ को सड़क पर धकेल दिया। "*मैंने तुमसे कहा न कि मेरे पास कोई स्थान नहीं है। और यदि होता भी, तो भी मैं तुम*

जैसों को यहाँ भीतर न आने देता। मैंने तुमसे कहा कि उस गुफा में जाओ, वही तुम्हारे लिए उपयुक्त है। बाहर निकलो!" वह चिल्लाया और द्वार जोर से बंद कर दिया।

दौड़कर उनके समीप पहुँचते हुए, मरियम ने यूसुफ को घुटनों के बल बैठा पाया; वे अपने कांपते हुए हाथों में अपना मुख छिपाकर विलाप कर रहे थे। उन्होंने अत्यंत पीड़ा के साथ कहा, "*मेरी प्रिय वधू, मेरा हृदय इस शोक से टूट गया है कि मैं इस रात्रि के लिए आपको किसी सुरक्षित और उष्ण निवास में आश्रय न दिला सका।*" मरियम ने, एक शांत दृढ़ निश्चय के साथ उत्तर दिया, "*अपने इन शोक के अश्रुओं को हर्ष के अश्रुओं में बदल दीजिए। आइए, हम प्रेमपूर्वक इस निर्धनता को अंगीकार करें, जो मेरे परम पावन पुत्र का अमूल्य और बहुमूल्य कोष है। अब, उस गुफा के विषय में क्या विचार है जिसका सराय के स्वामी ने उल्लेख किया था? क्या वह एक निवास स्थान नहीं है? वह बढ़ती हुई शीत से हमारी रक्षा करेगी। आइए, हम प्रसन्नतापूर्वक वहीं चलें जहाँ प्रभु हमारा मार्गदर्शन करते हैं।*"

दृष्टि से ओझल शक्तियों द्वारा निर्देशित होकर, मरियम और यूसुफ एक शांत वन की ओर बढ़ चले, जहाँ की वायु एक मूक और पवित्र ऊर्जा से स्पंदित होती प्रतीत होती थी। उनके ऊपर, वृक्षों की शाखाएँ मानो किसी उद्देश्य से स्वयं ही हटती गईं, जिससे एक ऐसा मार्ग प्रकट हुआ जो कोमल और देदीप्यमान आभा से प्रकाशित था। स्वर्गीय प्राणी, जिनका स्वरूप नक्षत्रों के समान झिलमिला रहा था, बड़ी शालीनता से उनके आगे-आगे चले और अपनी दिव्य ऊष्मा से मार्ग को आलोकित करने लगे।

स्वर्गदूतों ने उन्हें एक एकांत गुफा तक पहुँचाया, जिसका प्रवेश द्वार उस अलौकिक ज्योति से चमक रहा था जो वन की भूमि पर बिखर रही थी। भीतर, वे स्वर्गीय सेनाएं एक पावन उद्देश्य के साथ सक्रिय थीं; उनकी उपस्थिति उस स्थान को श्रद्धा और प्रतीक्षा के भाव से भर रही थी। वे उस विनीत गुफा को तैयार कर रहे थे, ताकि उसे अपनी महारानी के आगमन के योग्य एक पावन देवालय में परिवर्तित कर सकें। ऐसा प्रतीत होता था मानो वायु ने स्वयं अपनी श्वास रोक ली हो, जैसे पृथ्वी और स्वर्ग दोनों उस

क्षण के लिए व्याकुल हों जब दिव्यता अत्यंत साधारण को असाधारण रूप से स्पर्श करने वाली थी।
शहर के बाकी सभी लोग इस जगह को अयोग्य समझते थे। ऐसे उद्देश्य के लिए इसका उपयोग करने के लिए कोई भी स्वयं को इतना नीचा नहीं समझता था, सिवाय विनम्रता और गरीबी के शिक्षकों - हमारे उद्धारकर्ता मसीह और उनकी पवित्रतम माता के। क्योंकि शाश्वत पिता की बुद्धि ने इसे उनके लिए आरक्षित कर रखा था। उन्होंने इसकी सारी निर्धनता, एकांत और गरीबी में इसे प्रकाश के प्रथम मंदिर के रूप में, और न्याय के सच्चे सूर्य के घर के रूप में पवित्र किया, जिसका उदय उस देदीप्यमान 'भोर' स्वरूप मरियम से निष्कपट हृदयों के लिए होना था, जिससे पाप की रात्रि अनुग्रह के प्रकाश में परिवर्तित हो सके।

और इस प्रकार, उस विनीत गुफा में - जो ईश्वरीय हाथों द्वारा तैयार किया गया एक अनूठा देवालय था, उन थके हुए यात्रियों ने आश्रय पाया, जो प्राचीन भविष्यवाणियों की पूर्णता में एक महत्वपूर्ण क्षण और आशा की पवित्र गाथा के एक नए अध्याय का आरंभ था।

अध्याय पंद्रह

मसीह का जन्म

मरियम और यूसुफ ने शांत श्रद्धा के साथ उस गुफा में प्रवेश किया और उन पर बरसाए गए आशीषों के लिए धन्यवाद देने हेतु घुटनों के बल झुक गए। उस अग्नि की मंद आभा में जिसे यूसुफ ने ऊष्मा के लिए प्रज्वलित किया था, मरियम ने अपने उन स्वर्गदूत रक्षकों की कोमल उपस्थिति में, जो शीघ्र ही होने वाले चमत्कार को समझ रहे थे, अपने हाथों से उस विनीत परिवेश को व्यवस्थित करना आरंभ किया। जन्म के सन्निकट होने का अनुभव करते हुए, उन्होंने यूसुफ से विश्राम करने का आग्रह किया। उन्होंने स्नेहपूर्वक कहा, "*रात्रि बहुत बीत चुकी है, और आपको विश्राम की आवश्यकता होगी। यूसुफ, अब आप सो जाएँ।*"

उनकी विनती स्वीकार करने से पूर्व, यूसुफ ने पहले मरियम की सुविधा का ध्यान रखा। चरवाहों द्वारा अपने पशुओं के लिए छोड़ी गई एक छोटी चरनी का उपयोग करते हुए, उन्होंने गुफा के भीतर उसे बड़े यत्न से सजाया ताकि उनकी प्रिय पत्नी को सुख प्राप्त हो सके। अपना कार्य पूर्ण होने के पश्चात, उन्होंने मरियम को गुफा के उस शांत कोने में छोड़ा और स्वयं प्रवेश द्वार के समीप एक सुरक्षित ओट में चले गए। वहाँ, वे प्रार्थना में घुटने टेक कर बैठ गए, और जैसे ही उन्होंने प्रार्थना आरंभ की, एक दिव्य आत्मा उन पर उतरी, जिससे वे एक उच्च और धन्य निद्रा की अवस्था में चले गए।

मरियम भी प्रार्थना में लीन रहीं। उस पावन स्थान की नीरवता में, उनके चारों ओर परमेश्वर की वाणी प्रतिध्वनित हुई: "*हमारे पुत्र के आगमन का समय अब निकट है। मैं आपमें इस हमारे बालक की दिव्यता और मानवता के उस संपूर्ण ज्ञान का नवीनीकरण करता हूँ, जो परमेश्वर का वह मेमना है जो संसार के पाप हर लेगा। मैं धन्य हूँ कि मैंने आपको पुकारा और आपने 'हाँ' में उत्तर दिया, क्योंकि मेरी प्रिय, आपने मुझे अतुलनीय रूप से प्रसन्न किया है।*"

प्रत्युत्तर में, मरियम ने अपना सिर झुकाया और फुसफुसाते हुए कहा, "मैं अपने प्रभु परमेश्वर से नए प्रकाश और अनुग्रह की याचना करती हूँ, ताकि मैं उस 'वचन' का, जो देहधारी हुआ है और जिसे मैं जन्म देने और पालने वाली हूँ, योग्य रीति से पालन-पोषण कर सकूँ।" तब वह वाणी कोमल अधिकार के साथ पुनः गूँजी, "उठिए, मरियम, क्योंकि आप परमेश्वर की माता हैं।" मरियम ईश्वरीय प्रबोधन की इस अवस्था में तब तक मंत्रमुग्ध रहीं, जब तक कि उन्होंने अपने गर्भ के भीतर उस बालक की उपस्थिति का अनुभव नहीं कर लिया।

उन कोमल हलचलों ने प्रसव के सन्निकट होने का संकेत दिया, एक ऐसी हलचल जिसने कोई पीड़ा तो उत्पन्न नहीं की, परंतु उन्हें एक अगाध विस्मय से भर दिया।

उसके चारों ओर फैले दिव्य प्रकाश के वृत्त के बाहर, महादूत गैब्रियल और माइकल ने मानव रूप धारण कर लिया था, और वे अपने पवित्र कार्य को प्रकट करने के क्षण की मौन प्रतीक्षा कर रहे थे। मरियम शांत विस्मय में घुटने टेके हुए थीं, उनके हाथ उनके वक्ष पर परस्पर जुड़े हुए थे और उनका मुखमंडल एक उज्ज्वल, अलौकिक आभा से दमक रहा था। उनका हृदय विस्मय से प्रफुल्लित हो उठा जब उनके भीतर से एक प्रखर और शुद्ध ज्योति चमकने लगी, एक ऐसा प्रकाश जो मानो उनकी अपनी आत्मा से ही फूट रहा हो। वह ज्योति और भी अधिक दीप्तिमान होती गई, यहाँ तक कि वह इतनी तीव्र हो गई कि मानवीय नेत्रों की सहनशक्ति से परे थी। तब, उस झिलमिलाती आभा के मध्य से, प्रधान दूत मिखाएल और जिब्रिएल आगे बढ़े, जिनके महिमामय स्वरूप से श्रद्धा और अनुग्रह की किरणें फूट रही थीं।

वे उनके सम्मुख घुटने टेक कर बैठ गए, उनकी प्रत्येक गति अत्यंत सौम्य और सुविचारित थी, और अपनी भुजाएँ फैलाकर उन्होंने प्रकाश और वायु की एक पालकी सी बना ली। उस विस्मयकारी क्षण में, मरियम के गर्भ से वह प्रकाशमय आभा प्रवाहित होकर उनके द्वारा बनाई गई उस पालकी में समा गई। और वहाँ, स्वर्गदूतों की गोद में, उस प्रकाश ने एक रूप धारण कर लिया, जो एक नवजात शिशु के स्वरूप में परिवर्तित हो गया। ख्रीस्त बालक, जो जगत की ज्योति हैं, प्रकट हो चुके थे; उनकी उपस्थिति ने उस विनीत गुफा को एक ऐसी शांति और महिमा से भर दिया जो समस्त समझ से परे थी। उसी

क्षण, स्वर्गदूतों के वृंदों ने अब तक के सबसे भव्य स्तुतिगान गाए। प्रधान दूतों की फैली हुई भुजाओं से, उस नवजात शिशु को अत्यंत कोमलता के साथ उनकी माता की गोद में रख दिया गया। जैसे ही मरियम और उनके बालक ने एक-दूसरे को देखा, उनके मध्य इतना गहरा और रूपांतरकारी प्रेम प्रवाहित हुआ जिसने उनकी आत्माओं को ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया। उनके हृदयों के उस शांत मिलन में, उस शिशु ने संवाद किया: "*माता, मेरे समान बन जाइए, क्योंकि आज के दिन आपने मानव जाति को सबसे महान उपहार दिया है। मैं आपको एक उच्च अनुग्रह प्रदान करता हूँ, जो आपके अस्तित्व को रूपांतरित कर देगा, ताकि आप ईश्वर और मनुष्य दोनों के रूप में मेरी समानता में सहभागी हो सकें।*"

मरियम ने, एक विनीत मुस्कान और अटल भक्ति के साथ उत्तर दिया, "*हे प्रभु, मुझे ऊँचा उठाएँ, और मैं आपके पीछे चलूँगी।*" *तब उस बालक ने कहना जारी रखा, "देख, मेरी प्रिय, तू अत्यंत रूपवती है।*"

और उस पावन क्षण की पूर्णता में, परमेश्वर की वाणी गूँजी, "*मरियम, अपने इकलौते पुत्र को स्वीकार करें, उनका अनुकरण करें और उनका पालन-पोषण करें; और स्मरण रहे, जब मैं मांग करूँगा, तब आपको उनका बलिदान करना होगा।*"

प्रेम से अभिभूत होकर, मरियम ने बालक को अपने हृदय से लगा लिया और उनके कोमल मुखमंडल को उस ममता के साथ चूमा जो केवल एक माता का हृदय ही जान सकता है। उन्हें अपनी भुजाओं में थामकर, वे स्वयं वह प्रथम वेदी बन गईं जिस पर उन्हें विराजमान किया गया था। उस चमत्कारिक क्षण में, मानो स्वर्ग के द्वार खुल गए हों, और दूर-दराज से लोग इस नए जीवन के रूप में मानव जाति के उद्धार के साक्षी बनने के लिए आने लगे।

यूसुफ, जो दिव्य आनंद की तरंगों से अपनी उस धन्य निद्रा से जाग गए थे, उठे और अपनी आँखों में आराधना के अश्रु लिए उस नवजात के दर्शन किए। मरियम के विनम्र निवेदन पर, उन्होंने वे लपेटने वाले वस्त्र और पट्टियाँ उन्हें थमा दीं जिन्हें वे साथ लाए थे। अत्यंत सावधानी के साथ, उन्होंने अपने पुत्र को वस्त्र पहनाए, एक समतल पत्थर पर पुआल और सूखी घास बिछाई और उन्हें वहाँ लेटा दिया। तत्पश्चात्, कोमल अधिकार के साथ, उन्होंने बैलों

और खच्चर को चरनी के दोनों ओर लेटने की आज्ञा दी, ताकि वे बालक को उष्ण रख सकें और रात्रि की शीत से उनकी रक्षा कर सकें। बाहर, रात्रि का आकाश झिलमिलाते तारों से जीवंत था, जहाँ ध्रुव तारा समस्त पृथ्वी पर अपनी प्रखर आभा बिखेर रहा था।

उस क्षण के विस्मय से द्रवित होकर, मरियम ने अपने स्वर्गीय साथियों से मृदु स्वर में कहा, "मेरे दिव्य मित्रों, हमें उनके जन्म की घोषणा करनी चाहिए। जाओ, और उन्हें बताओ जिन्हें परमेश्वर ने सूचित करने का आदेश दिया है।" उस आज्ञा के साथ, प्रधान दूत मिखाएल उन पवित्र लोकों की ओर तीव्र गति से बढ़ चले जहाँ धर्मपिता - हनोक और एलियास, तथा आदरणीय पूर्वज योआकिम और अन्ना प्रतीक्षा कर रहे थे; जबकि एक अन्य स्वर्गदूत एलिजाबेथ और उनके पुत्र योहन को यह शुभ समाचार देने के लिए निकल पड़ा। इसी बीच, जिब्रिएल को एक चरवाहे के मैदान में उस अद्भुत घटना की घोषणा करने हेतु भेजा गया, जहाँ शीघ्र ही वे चरवाहे स्वयं को स्वर्गदूत की देदीप्यमान ज्योति से घिरा हुआ पाने लगे।

"हे धर्मात्मा लोग, डरो मत," गैब्रियल ने उद्घोष किया, उसकी आवाज़ शांत रात में गूँज उठी। *"क्योंकि मैं तुम्हें बड़े आनंद का शुभ समाचार सुनाता हूँ: आज दाऊद के नगर में मुक्तिदाता का जन्म हुआ है, जो हमारे प्रभु ख्रीस्त हैं। इस सत्य के चिन्ह के रूप में, तुम उस बालक को कपड़ों में लिपटा हुआ और चरनी में लेटा हुआ पाओगे।" प्रत्युत्तर में, स्वर्गदूतों का एक भव्य वृंद गान कर उठा, "परम प्रधान आकाश में परमेश्वर की महिमा हो, और पृथ्वी पर उनके कृपापात्र मनुष्यों को शांति मिले!"*

जैसे-जैसे रात धीरे-धीरे दिन में बदल रही थी, आगंतुक उस नम्र गुफा में आने-जाने लगे। आठवें दिन, मरियम ने यूसुफ़ को बुलाया, *"यद्यपि हम जानते हैं कि वह पाप से रहित गर्भ में आए, फिर भी वह इस संसार में एक मनुष्य के रूप में पैदा हुए हैं। और इस संसार में, मनुष्य को खतना की रीति द्वारा शुद्ध किया जाना आवश्यक है।"*

यूसुफ ने उत्तर दिया, "*मैं जाता हूँ और एक पुरोहित के साथ लौटूंगा। सर्वप्रथम, उनका नाम ज्ञात होना चाहिए। जब पवित्र स्वर्गदूत ने मुझे इस महान घटना की सूचना दी थी, तब उन्होंने मुझे यह भी बताया था कि इन पावन पुत्र का नाम 'यीशु' रखा जाना चाहिए।*" मरियम ने सहमति में सिर

हिलाया और धीरे से कहा, "*यही वह नाम था जो मुझ पर तब प्रकट किया गया था जब उन्होंने मेरे गर्भ में देह धारण की थी।*"

जब ये दोनों पवित्र माता-पिता संवाद कर रहे थे, तब स्वर्ग से अनगिनत स्वर्गदूत मानवीय रूप धारण कर नीचे उतरे, जो श्वेत देदीप्यमान वस्त्रों से सुसज्जित थे जिन पर लाल रंग की जटिल नक्काशी की गई थी। उनके हाथों में खजूर की डालियाँ थीं और उनके शीश मुकुटों से सुशोभित थे, जिससे ऐसा वैभव उत्सर्जित हो रहा था जो सूर्य की प्रखरता को भी लज्जित कर दे। उनके अग्रभाग में प्रधान दूत मिखाएल और जिब्रिएल विराजमान थे, जिन्होंने मिलकर एक अत्यंत सुंदर चिन्ह प्रस्तुत किया। वह एक ऐसा चिन्ह था जिस पर 'यीशु' का पवित्र नाम अत्यंत तेजस्वी अक्षरों में अंकित था।

मिखाएल ने कोमल अधिकार के साथ कहा, "*मेरी स्वामिनी, यह आपके पुत्र का नाम है, जो अनादि काल से परमेश्वर के मन में अंकित है। धन्य त्रित्व ने इसे अपने इकलौते पुत्र, हमारे प्रभु को संपूर्ण मानव जाति के उद्धार के संकेत के रूप में प्रदान किया है। उन्हें तुरंत दाऊद के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करें।*"

गेब्रियल ने आगे कहा, "*क्योंकि वे उस पर राज्य करेंगे, अपने शत्रुओं को दंडित करेंगे, उन पर विजय प्राप्त करेंगे और उन्हें अपने चरणों की चौकी बनाएंगे, तथा उन पर न्याय करेंगे। वे अपने मित्रों को अपने दाहिने हाथ की महिमा तक उठाएंगे। परंतु यह सब पीड़ा और रक्त की कीमत पर होगा, वे अपने इस नाम को प्राप्त करते समय इसे बहाने के लिए नियत हैं, क्योंकि यह उनके शाश्वत पिता की इच्छा के पालन में उनके कष्टों के आरंभ का प्रतीक है। इसके पश्चात, वे विजयी होकर स्वर्गीय यरूशलेम में आरोहण करेंगे और स्वर्ग के द्वारों को खोल देंगे।*"

इस प्रकार, उस गुफा की पवित्र नीरवता में, ईश्वरीय प्रकाश और स्वर्गदूतों के वैभव के मध्य, मुक्तिदाता के उस विनीत जन्म का उत्सव मनाया गया, एक ऐसा चमत्कार जिसने सदैव के लिए मानव जाति के भाग्य को बदल दिया।

अध्याय सोलह

प्रस्तुति

यूसुफ ने, मरियम की भुजाओं में विश्राम कर रहे उस बालक के सम्मुख घुटने टेककर वंदना की और अत्यंत विनम्र आराधना की अवस्था में गुफा से बाहर निकले। वे उस शीतल संध्या में बाहर आए और हलचल से भरे ग्राम की ओर चल पड़े। शीघ्र ही वे एक पुरोहित के साथ लौटे, और एक लघु एवं विनीत समारोह में, उस बालक के खतना की रीति संपन्न की गई। संपूर्ण विधि के विधान के दौरान, मरियम ने अपने पुत्र को अपने हृदय से लगाए रखा; और जैसे-जैसे वह पवित्र अनुष्ठान आगे बढ़ा, उनकी आँखें एक शांत दृढ़ निश्चय से भरी रहीं।

मरियम के पुत्र ने शाश्वत पिता के सम्मुख अतुलनीय मूल्य के तीन बलिदान अर्पित किए। **प्रथम**, यद्यपि वे निष्कलंक और सच्चे परमेश्वर के पुत्र थे, तथापि उन्होंने उस रीति को स्वीकार कर स्वयं को एक पापी की स्थिति में रख दिया जो मूल पाप के उपचार के रूप में बनाई गई थी, एक ऐसा नियम जो उन पर बाध्यकारी नहीं था। **द्वितीय**, उन्होंने स्वेच्छा से खतना की पीड़ा को सहन किया, और एक सच्चे एवं पूर्ण मनुष्य के रूप में उसका अनुभव किया। **तृतीय**, उन्होंने संपूर्ण मानव जाति के लिए अपना रक्त बहाना आरंभ कर सबसे प्रखर प्रेम का प्रदर्शन किया, और साथ ही शाश्वत पिता को धन्यवाद दिया कि उन्होंने उन्हें एक ऐसी मानवीय प्रकृति प्रदान की जो उनकी महिमा और गौरव के निमित्त कष्ट सहने में समर्थ थी।

जब पुरोहित ने पूछा, *"आप बच्चे का क्या नाम रखती हैं?"* तो मरियम और यूसुफ दोनों ने एक स्वर में उत्तर दिया, *"उसका नाम **यीशु** है।"* पुरोहित ने सावधानी से एक पट्टी पर नाम लिख दिया और कहा, *"मुझे विश्वास है कि यह बच्चा प्रभु का एक महान नबी बनेगा। इनके पालन-पोषण का ध्यान रखना।"* उस गंभीर दायित्व के साथ, और

शुभचिंतकों से मोमबत्तियों और अन्य मामूली उपहारों को स्वीकार करने के बाद, पुरोहित चले गए, और पवित्र परिवार को उनकी शांत भक्ति में छोड़ दिया।

जैसे ही सूरज ढलने लगा, आसमान को नारंगी और बैंगनी रंगों की गहरी छटाओं से रंगते हुए, क्षितिज पर एक कारवाँ की छायादार रूपरेखा दिखाई दी, जो लगातार पूर्व की ओर बढ़ रही थी।

वे एक ही, दमकते तारे के मार्गदर्शन का अनुसरण कर रहे थे, एक ऐसा तारा जो सभी अन्य तारों से अधिक चमकीला था, और उस स्थान के ऊपर अडिग रूप से टिका हुआ था जहाँ बच्चा पैदा हुआ था।
अगले दिन, तीन प्रज्ञावान राजा, जिनमें से प्रत्येक की कीर्ति महान थी, अपने सेवकों के दल के साथ उस गुफा में पहुँचे। उनके सेवक चकित होकर अपने सामने के उस विचित्र और पवित्र दृश्य को देख रहे थे और आपस में चर्चा कर रहे थे, परंतु वे राजा अत्यंत शांत श्रद्धा के साथ आगे बढ़े। वे अपनी राजसी पोशाकें सँभालते हुए गंभीर गरिमा के साथ गुफा के भीतर प्रविष्ट हुए। बिना किसी संकोच के, वे मरियम के सम्मुख घुटने टेककर बैठ गए और विनम्रतापूर्वक अपना सिर झुका लिया। गहरे सम्मान के भाव के साथ, एक-एक करके वे उनका हाथ चूमने के लिए आगे बढ़े। परंतु मरियम ने, एक कोमल किंतु दृढ़ संकेत के साथ, अपना हाथ पीछे खींच लिया और उसके स्थान पर अपने नवजात पुत्र का नन्हा हाथ आगे बढ़ा दिया। इस साधारण से कार्य द्वारा, उन्होंने उन्हें स्वयं का सम्मान नहीं, अपितु ख्रीस्त बालक का वह पवित्र उपहार प्रदान किया जिसकी आराधना करने हेतु उन्होंने इतनी लंबी यात्रा की थी। मरियम ने मृदु स्वर में कहा, "*मेरा मन प्रभु में आनंदित होता है, और मेरी आत्मा उनकी स्तुति और महिमा करती है। क्योंकि समस्त राष्ट्रों में से, उन्होंने आपको उस सत्य के दर्शन करने हेतु पुकारा और चुना है, जिसे देखने की लालसा अनेक राजाओं और नबियों ने की, परंतु वे इसे न देख सके।*" उन ज्योतिषियों ने विदा लेने से पूर्व प्रशंसा के शब्दों के साथ उन्हें बधाई दी; उनके चेहरे विस्मय से दमक रहे थे, जो उनके सेवकों की व्याकुलता के बिल्कुल विपरीत था, जिन्होंने उस चमत्कारिक दृश्य को नहीं देखा था। इसके पश्चात वे नगर में विश्राम करने चले गए, और जो कुछ उन्होंने देखा था, उससे उनके हृदय उद्वेलित थे।

उसी दिन के उत्तरार्ध में, एक सराय के विनीत कक्ष में मेज के चारों ओर एकत्र होकर, उन तीनों राजाओं ने अपने विचार साझा किए। एक ने चिंतन करते हुए कहा, "*यह कैसी अनुभूति है? एक ऐसे राजा के प्रति इतना गहरा प्रेम जिसे मैं पहले कभी नहीं जानता था, वह क्या है जो हमें इतना गहराई से प्रभावित कर रहा है?*" दूसरे ने उत्तर दिया, "*उनकी महानता निर्धनता और नम्रता के आवरण में छिपी हुई है, यह एक ऐसा रहस्य है जो नश्वर मनुष्यों की समझ से परे है।*" तीसरे ने अपनी बात जोड़ी, "*ओह, काश! सभी लोग इस आनंद में इतनी सहजता से सहभागी हो पाते!*" प्रथम राजा ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा, "*वे अभाव में हैं और उन्हें सुख-सुविधा की आवश्यकता है; आइए, हम अपने सेवकों को उपहारों के साथ वापस भेजें जो उनके कष्टों को कम कर सकें।*"

बाहर, गुफा के समीप, उन ज्योतिषियों के सेवकों ने यूसुफ को रसद सामग्री प्रदान की, जिसे उन्होंने शांत कृतज्ञता के साथ स्वीकार किया। अगले दिन, वे प्रज्ञावान राजा उस नए राजा से विदा लेने हेतु पुनः पधारे। उन्होंने स्वर्ण, लोबान और गंधरस की पारंपरिक भेंटें प्रस्तुत कीं और यहाँ तक कि एक राजकुमारी के योग्य बहुमूल्य रत्न भी अर्पित किए।

तथापि, मरियम ने अत्यंत कोमल दृढ़ता के साथ उन रत्नों को अस्वीकार कर दिया, और इसके स्थान पर उनमें से प्रत्येक को वह सबसे मूल्यवान उपहार प्रदान किया जो वे दे सकती थीं, एक छोटा सा वस्त्र जिसने उनके नवजात पुत्र की कोमल त्वचा को स्पर्श किया था।

उन्होंने कहा, "*आप में से प्रत्येक को मैं यह वस्त्र देती हूँ, जो एक ऐसा कोष है जिसने बालक परमेश्वर की देह को स्पर्श किया है।*" एक राजा ने विस्मय से कहा, "*स्वर्ण या रजत से भी अधिक बहुमूल्य, यह वस्त्र मुझे मेरे जीवन के शेष दिनों के लिए उनकी राजसत्ता की सेवा में बांधे रखेगा।*" दूसरे राजा ने सुझाव दिया, "*हमें आपको ऐसी संपत्ति प्रदान करने दें जो आपके रहने के लिए अधिक उपयुक्त हो।*" तीसरे राजा ने अपनी बात जोड़ी, "*या कदाचित हमें आपके पवित्र परिवार के योग्य एक निवास स्थान का निर्माण करना चाहिए।*" मरियम ने आत्मीयता से मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "*आप जैसे दयालु और उदार पुरुषों का धन्यवाद, परंतु हमारी आवश्यकताएं बहुत अल्प हैं और वे हमारे प्रभु द्वारा पूर्ण की जाती हैं। इससे अधिक की लालसा*

करना उनकी प्रज्ञा को चुनौती देने के समान होगा। आपके सत्कर्मों की अनदेखी नहीं की जाएगी।" यूसुफ ने आगे कहा, *"यह दुखद है कि आप और अधिक समय नहीं रुक सकते; हमें परसों मंदिर में बालक को प्रस्तुत करना है। आपकी वापसी की यात्रा सुरक्षित हो, और आपके मार्गों को उत्तम प्रतिफल प्राप्त हो।"*

मंदिर में बालक के प्रस्तुतीकरण की पूर्व संध्या पर, मरियम भावपूर्ण प्रार्थना में घुटने टेके हुए थीं। उन्होंने धीरे से कहा, *"हे मेरे प्रभु, कल स्वर्ग और पृथ्वी दोनों के लिए उत्सव का दिन होगा। आपने इन्हें मुझे परमेश्वर के रूप में दिया है, और मैं इन्हें आपको ईश्वर और मनुष्य दोनों के रूप में लौटाती हूँ। संपूर्ण मानवता पर अपनी दया उंडेल दें, पापियों को क्षमा करें, पीड़ितों को सांत्वना दें, अभावग्रस्तों की सहायता करें, निर्धनों को समृद्ध करें, निर्बलों को सहारा दें, अंधों को प्रकाश दिखाएं, और भटके हुए लोगों को गले लगाएं। मैं यह आपके इकलौते पुत्र की ओर से मांगती हूँ, जो आपकी इच्छा से मेरे पुत्र भी हैं।"* जब वे संपूर्ण मानव जाति की ओर से परमेश्वर से विनती कर रही थीं, तब उस युवा माता के चारों ओर प्रकाश का एक तेजोमंडल व्याप्त हो गया।

अगले दिन, जब पवित्र परिवार और स्वर्गदूतों के वृंद मंदिर के द्वारों के समीप पहुँचे, तो मरियम भक्त स्त्रियों की संगति में सम्मिलित हो गईं, जबकि यूसुफ वहाँ एकत्र पुरुषों के साथ चलने लगे। उनकी ओर पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित प्रधान पुरोहित सिमयोन आ रहे थे, जिनके साथ मरियम की पूजनीय शिक्षिका अन्ना भी थीं। वे उस युगल की ओर बढ़े, और मरियम ने बड़ी कोमलता से उस शिशु को सिमयोन के हाथों में सौंप दिया। बालक को ऊपर उठाते हुए, सिमयोन ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और उद्घोषणा की, *"हे प्रभु, अब आपने समस्त मरणशील मनुष्यों के सम्मुख अपनी दिव्य ज्योति तैयार कर स्थापित कर दी है, ताकि वह संसार पर आलोकित हो सके और उन सभी का मार्गदर्शन एवं उद्धार कर सके जो इसकी खोज करते हैं।"*

यह वह ज्योति है जो अन्यजातियों पर भी प्रकट हुई है, ताकि आपकी चुनी हुई प्रजा, इस्राएल की महिमा हो सके! देखिये, यह बालक इस्राएल में बहुतों के पतन और पुनरुत्थान के लिए नियुक्त है, और उनकी उपस्थिति

एक ऐसा चिन्ह है जिसका विरोध किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त, हे मरियम, एक तलवार आपकी आत्मा के पार हो जाएगी, ताकि बहुतों के हृदयों के विचार प्रकट हो जाएँ।

उसी क्षण, मरियम की आँखें शोक से भर गईं क्योंकि उनके सम्मुख अपने पुत्र के जीवन के दर्शन प्रकट हो रहे थे, शैशवावस्था से लेकर युवावस्था तक, और वे सभी कष्ट एवं अपमान जो उन्हें सहने थे, और अंततः, क्रूस पर उनकी मृत्यु। मूक अश्रु उनके गालों पर ढलक आए, तथापि जब सिमयोन ने बालक को उन्हें वापस लौटाया, तो उनके मुख पर स्वीकृति की एक मंद मुस्कान थिरक उठी। उनके भीतर ही भीतर, उस शिशु ने एक आंतरिक संवाद में उनसे कहा:

"*परम प्रिय माता, यद्यपि आपको मेरे निमित्त बहुत कष्ट सहना होगा, तथापि साहस रखें; मेरा प्रेम, आपके प्रति परमेश्वर का प्रेम, इस ब्रह्मांड से भी महान है। हम मिलकर मानवता के पापों का प्रायश्चित करेंगे, और मिलकर उन लोगों का मार्गदर्शन करेंगे जो हमारे पिता की खुली भुजाओं में शरण खोजते हैं।*" *अनुष्ठान के पश्चात, नबिया अन्ना ने एकत्र जनसमूह को संबोधित करते हुए घोषित किया, "इस बालक को देखो, क्योंकि यही जगत की ज्योति है, वह प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह जो उद्धार के ईश्वरीय वादे को पूर्ण करने आया है।*"

तत्पश्चात्, गुफा की शांति में, मरियम ने यूसुफ से मृदु स्वर में बात की, जो यीशु को अपनी भुजाओं में थामे हुए थे। उन्होंने कहा, "*मेरी इच्छा है कि मैं अगले नौ दिनों तक मंदिर में एक 'नवेना' (नौ-दिवसीय प्रार्थना) अर्पित करूँ।*" यूसुफ ने, सदैव की भांति व्यावहारिक होते हुए उत्तर दिया, "*उसके पश्चात, हमें नाज़रेथ में अपने घर लौट जाना चाहिए। मेरी परम पावन वधू, मैं विचार कर रहा हूँ कि क्या मुझे इन्हें अपना बढ़ईगिरी का व्यवसाय सिखाना चाहिए? ऐसे कोमल हाथ खुरदरी लकड़ी और तीखे औजारों को कैसे थाम सकेंगे?*" मरियम ने कोमलता से मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "*वे सीख जाएंगे, मेरे प्रिय। वे खुरदरी लकड़ी को पहचान लेंगे, ठीक वैसे ही जैसे आपने पहचाना है।*"

पाँचवें दिन की प्रातः, मंदिर में मरियम, बालक और अन्ना प्रार्थना में लीन थीं। सहसा, मरियम के मुखमंडल पर भय की एक रेखा खिंच गई।

"वह क्या है जो आपको व्याकुल कर रहा है?" अन्ना ने पूछा। मरियम ने फुसफुसाते हुए उत्तर दिया, *"हम अपने इस नवेना का पाँचवाँ दिन पूर्ण नहीं कर सकते। हमें तुरंत प्रस्थान करना होगा।"*

अन्ना ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, "*जाएँ, अपने निवास पर लौट जाएँ। मैं आपकी यात्रा के लिए रसद सामग्री तैयार कर दूँगी। मुझे यह पूछने की आवश्यकता नहीं है कि आप कहाँ और कब प्रस्थान करेंगी, क्योंकि आपकी आँखों का संदेश स्पष्ट और अत्यंत विचलित करने वाला है।*" अपने बालक को हृदय से लगाए हुए, मरियम ने शीघ्रता से मंदिर त्याग दिया।

बाहर रास्ते पर, जैसे ही मरियम बालक को कसकर थामे हुए तेजी से बढ़ रही थीं, एक चिंतित यूसुफ ने उन्हें बीच में ही रोक लिया और अपने वचनों से उन्हें प्रेरित करते हुए कहा, "*हमें तुरंत जाने की तैयारी करनी होगी। एक स्वर्गदूत ने मुझे एक भयावह संदेश के साथ दर्शन दिए हैं: हेरोदेस को यीशु के जन्म का पता चल गया है और अपनी राजसत्ता के भय से उसने आज्ञा दी है कि दो वर्ष से कम आयु के सभी नर बालकों का वध कर दिया जाए।*" मरियम ने उत्तर दिया, उनका स्वर शोक से भरा था, "*मुझे भी यही संदेश प्राप्त हुआ है। कितने ही निर्दोषों का प्राण जाएगा! वे परमेश्वर के पुत्र से डरते हैं, यह नहीं जानते कि वे मनुष्य के पुत्र भी हैं।*"

यूसुफ ने अपनी बात जारी रखी, "*हमें मिस्र पलायन करना होगा और तब तक वहीं रहना होगा जब तक लौटना सुरक्षित न हो जाए। हम आज रात ही प्रस्थान करेंगे, मेरे प्रिय, यह एक लंबी यात्रा होगी। मुझे बताएं, मैं आपके बोझ को कम करने के लिए क्या कर सकता हूँ?*"

मरियम ने शांत दृढ़ निश्चय के साथ कहा, "*यूसुफ, हमारी यात्रा सांत्वना के बिना नहीं होगी, क्योंकि आप मुझे बहुत ढाढ़स देते हैं। हम जिस भी असुविधा का सामना करेंगे, उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे, क्योंकि हम उन माताओं के शोक में सहभागी हैं जो बहुत कष्ट सहेंगी।*"

इस प्रकार, बोझिल किंतु अडिग हृदयों के साथ, उन्होंने ईश्वरीय मार्गदर्शन और सुरक्षा पर भरोसा रखते हुए एक लंबी और अनिश्चित यात्रा पर निकलने की तैयारी की।

अध्याय सत्रह

मिस्र की यात्रा

अंधकारपूर्ण आकाश में वर्धमान चंद्रमा के मंद प्रकाश के नीचे, पवित्र परिवार की आकृतियों को बड़ी कठिनाई से पहचाना जा सकता था, जब उन्होंने अपनी लंबी यात्रा का आरंभ किया। मरियम, एक खच्चर पर सवार होकर बालक को अपनी भुजाओं में कोमलता से थामे हुए थीं, और यूसुफ, दृढ़तापूर्वक उन्हें गुफा के उस आश्रय से दूर ले जा रहे थे। जैसे ही उन्होंने आगे की कठिन पदयात्रा प्रारंभ की, उनकी परछाइयाँ शांत रात्रि के साथ एकाकार हो गईं।

मार्ग पर कई दिनों तक चलने के पश्चात, उनकी यात्रा उन्हें गाज़ा की सीमा पर ले आई। वहाँ, धूल भरी गलियों और यात्रा के थकाऊ कोलाहल के मध्य, मरियम ने देखा कि यूसुफ अत्यधिक थकान के कारण लड़खड़ा रहे थे। वह खच्चर भी थक चुका था और उसने हठपूर्वक आगे बढ़ने से मना कर दिया। मरियम ने कोमलता से उन्हें संबोधित किया, "*यूसुफ, आपको विश्राम की आवश्यकता है, और यह बेचारा भारवाही पशु भी बिना विश्राम के एक और दिन नहीं चल पाएगा। आइए, हम यहाँ गाज़ा में एक या दो दिन रुकें। मेरी चचेरी बहन एलिजाबेथ की पुरानी सहेली मेरता के घर हमारा स्वागत होगा। वह अब अकेली है क्योंकि उसके पति उसे विधवा छोड़ गए हैं; वह गाँव में बीमारों की सेवा करती है, और जब आप विश्राम करेंगे, तब मैं उसकी सहायता कर सकूँगी।*"

उनका यह अस्थायी प्रवास उन्हें मेरता के विनीत निवास पर ले आया, जो एक वृद्ध स्त्री थी और जिसके दयालु हाथों ने लंबे समय तक रोगियों की देखभाल की थी। उसके एक तंग कक्ष में, दो बहुत बीमार बच्चे एक संकरी खाट पर लेटे थे, उनके चेहरे मृत्यु के समान पीले पड़ गए थे और उनकी कठिन श्वासें बड़ी मुश्किल से सुनाई दे रही थीं। मेरता ने व्याकुल माता-पिता को सांत्वना देते हुए कहा, "*अब इससे अधिक कुछ नहीं किया जा सकता। इस जड़ी-बूटी से उन्हें आराम दें, यह उनकी खाँसी कम करेगी और उन्हें बिना पीड़ा के साँस लेने में सहायता करेगी।*" जब मेरता बोल रही थी, तब मरियम उन अस्वस्थ बच्चों के बिस्तर के पास घुटने टेक कर बैठ गईं। अपने वस्त्र के

पटके से एक कपड़ा निकालकर, उन्होंने उसे पास के जल के पात्र में डुबोया। अत्यंत कोमल ममता के साथ, उन्होंने प्रत्येक बालक के होंठों और माथे को पोंछा, फिर उनके नन्हे हाथों को लेकर धीरे से अपने गालों से छुआया और मौन प्रार्थनाएँ करने लगीं।

धीरे-धीरे, उनके गालों पर लाली लौटने लगी और उनकी उखड़ी हुई श्वासें शांत हो गईं। उनकी राहत के बीच, पिता हताशा में चिल्ला उठा, "*वे अब श्वास नहीं ले रहे!*" जबकि माता विलाप करने लगी, "*मेरे बच्चों, मेरे बच्चों!*" मरियम ने उन्हें कोमलता से आश्वस्त किया, "*नहीं, आइए, देखिए। वे आपको छोड़कर नहीं गए हैं। उन्होंने इस उपचार पर अच्छी प्रतिक्रिया दी है। बच्चों, अपनी आँखें खोलो, अपने चिंतित माता-पिता को दिखाओ कि तुम अब स्वस्थ अनुभव कर रहे हो।*" फिर, मेरता को संकेत देते हुए उन्होंने जोड़ा, "*आइए, हम इस सुखद क्षण को यहीं छोड़ दें क्योंकि हमें अभी और भी बहुत कुछ देखना है।*" मेरता ने, जिसके मुख पर प्रसन्नता और असमंजस का मिश्रण था, उत्तर दिया, "*हाँ, अभी और देखना शेष है।*" दवाई की बोतल को वापस अपनी अंगरखी की जेब में रखते हुए मेरता ने प्रस्ताव दिया, "*कदाचित अब आपको इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आइए मरियम, मेरे पास एक ऐसी स्त्री है जो चलने के लिए अपने अंगों को हिला भी नहीं सकती। आप उन पर कुछ मरहम लगा सकती हैं।*" और इसी के साथ, वे दोनों दिन के शेष कार्यों को पूर्ण करने के लिए निकल पड़ीं।

शीघ्र ही, मरियम और मेरता एक अन्य रोगी के घर पहुँचे, हेलेन नाम की एक प्रौढ़ महिला, जो जन्म से ही अपाहिज थी और जिसके पैर सूख चुके थे एवं निष्प्राण थे। एक छोटी, अस्त-व्यस्त और अस्वच्छ झोपड़ी में, हेलेन एक फटी-पुरानी चटाई पर लेटी थी। मेरता ने सचेत किया, "*ध्यान रहे; यहाँ गहरी श्वास न लें, क्योंकि मैं नहीं जानती कि यहाँ कौन से रोग व्याप्त हैं। मैं सप्ताह में एक बार यहाँ यह देखने आती हूँ कि कम से कम उसके पास स्वच्छ वस्त्र तो हों।*"

अपने थैले से ताजे धुले हुए वस्त्रों की एक गठरी निकालते हुए, मेरता हेलेन की सहायता करने लगी। मरियम भी उस स्त्री के पास जा पहुँचीं। मरियम ने अपनी अंगरखी से एक छोटी बोतल निकाली, उसका ढक्कन हटाया और अपनी अंजलि में मापा हुआ तरल पदार्थ उँडेला। कोमल स्पर्श के साथ, उन्होंने उस स्त्री के मुख को सहलाया और फिर उस तरल से हेलेन के सूखे हुए पैरों की मालिश की। चमत्कारिक रूप से, मानो ईश्वरीय अनुग्रह

का स्पर्श पाकर, उन अंगों ने धीरे-धीरे अपना आकार और शक्ति पुनः प्राप्त कर ली।

विस्मय से अभिभूत होकर मेरता अपने घुटनों के बल गिर पड़ी और पुकार उठी, "*हे धन्य नारी, आप कौन हैं? ईश्वर ने आपको कैसी शक्तियाँ प्रदान की हैं!*" मरियम ने मृदु स्वर में उत्तर दिया, "*कैसा विश्वास उन्होंने आपको प्रदान किया है, कि आपको वह देखने की अनुमति मिली जो गुप्त है। प्रिय मेरता, शांत रहें, क्योंकि मेरा परिवार यहाँ केवल एक दिन के लिए है। इन चमत्कारों को बहुत व्यापक रूप से फैलाना उचित न होगा।*"

मेरता ने वचन दिया, "*मैं यहीं रुकूँगी और इस स्त्री की झोपड़ी स्वच्छ करने में इसकी सहायता करूँगी। अब जबकि यह चल सकती है, तो यह अन्यों की सेवा करने में भी मेरा हाथ बँटा सकेगी। आपको अब अपने परिवार के पास लौट जाना चाहिए।*" हृदय से निकली कृतज्ञता के साथ मरियम ने विदा ली, और जैसे ही वे जाने लगीं, स्वस्थ हुई उस स्त्री ने घुटने टेक दिए और बार-बार मरियम के हाथों को चूमने लगी।

कुछ ही समय पश्चात, मरियम की पदयात्रा उन्हें समीप के एक मंदिर की सीढ़ियों तक ले आई। बाहर, एक ढहती हुई दीवार के समीप, कई बेघर लोग भोजन की व्याकुल याचना में एकत्र थे। उनकी दुर्दशा से तनिक भी विचलित हुए बिना, मरियम स्वयं को उन निर्धनों और क्षुधितों के मध्य घिरा हुआ पाया। एक भिक्षुक ने गिड़गिड़ाते हुए विनती की, "*दया करें, मेरे बालक ने दो दिनों से अन्न का एक दाना भी नहीं चखा है, क्या आपके पास देने के लिए कुछ शेष है?*" एक नन्हा, अश्रुपूरित स्वर भी उसमें सम्मिलित हो गया: "*भोजन, पिताजी, भोजन।*" समीप ही एक स्त्री ने विलाप किया, "*हमारे पड़ोसी उन चूहों के समान हैं जो अनाज के पीपों से जूठन बटोरते हैं। कृपा कर इन नन्हों के लिए कुछ दान कर दें।*"

वहाँ देख रहे पुरुषों में से एक ने सचेत किया, "*सावधान रहना; ये लोग आपका हाथ भी काट सकते हैं!*" वह समूह हंस पड़ा, और एक छोटे बालक ने निडर होकर आगे बढ़कर उस पुरुष को गले लगाना चाहा, परंतु उसे एक कांपते पैर से झटक कर दूर कर दिया गया। मरियम उस बालक के पास नीचे घुटनों के बल बैठ गईं, उसे अपनी गोद में उठा लिया और कोमलता से उसे सांत्वना दी। उस बालक को उन पुरुषों की ओर मोड़ते हुए, उन्होंने शांत किंतु प्रभावशाली स्वर में कहा, "*इसकी आँखों में देखें, वहाँ व्याप्त भूख को पहचानें। अपना हाथ इस पर रखें, इसके नन्हे शरीर*

की कोमलता और दुर्बलता का अनुभव करें। यदि आपका अपना पुत्र इतना भूखा होता और आप उसे खिलाने में असमर्थ होते, तो क्या आप किसी अन्य की दयालुता के लिए प्रार्थना न करते?"

"प्रत्येक भोजन के समय जो अन्न आप त्याग देते हैं, वह उस भोजन से कहीं अधिक है जो इस बालक ने पूरे सप्ताह में भी नहीं देखा है। ऐसी कौन सी बाधा है जो इसे आपकी मेज तक आने से रोकती है? मैं आपकी आँखों में करुणा देख सकती हूँ। भला मनुष्य, यही वह समय है, यही वह समय है।" उनके वचनों से द्रवित होकर, एक पुरुष ने अपनी थैली से कुछ सिक्के निकाले, और दूसरे ने एक बेसहारा पिता के कंधे पर हाथ रखा और उन्हें अपने साथ चलने का आग्रह किया। इसके पश्चात, मरियम ने उस बालक को नीचे उतारा, उन माता-पिता के सम्मुख घुटने टेके और कृतज्ञता में उनके हाथों को आशीष दिया।

कई दिनों के उपचार और विनम्र सेवा के पश्चात, पवित्र परिवार ने अपनी यात्रा पुनः आरंभ करने की तैयारी की। मेरता के विनीत निवास पर, मरियम एक बार फिर खच्चर पर सवार हुईं और यूसुफ ने उन्हें बालक सौंपते हुए कृतज्ञतापूर्वक कहा, "*मेरता, तुम्हारी दयालुता के लिए पुनः धन्यवाद। यद्यपि इन पिछले कुछ दिनों में मैं अधिकांश समय सोता ही रहा, परंतु मैं आभारी हूँ कि मेरी प्रिय पत्नी को एक प्रज्ञावान और देखभाल करने वाली संगिनी प्राप्त हुई।*"

मेरता ने आत्मीयता से मुस्कुराते हुए कहा, "*ओह, वह तो मैं हूँ जो सबसे अधिक आभारी हूँ। अब, इस मरुस्थल में सुरक्षित रहिएगा। आपने क्या कहा था, आप कहाँ जा रहे हैं?*" मरियम ने उत्तर दिया, "*मेरता, बहुत दूर नहीं, और यूसुफ सत्य कह रहे थे, तुम्हारी प्रज्ञा इस लघु प्रवास में एक वास्तविक आशीष सिद्ध हुई है। परमेश्वर तुम्हारे साथ रहें।*" मेरता ने उत्तर दिया, "और आपके साथ भी, मेरी धन्य मित्र," और इसी के साथ उन्होंने एक-दूसरे से विदा ली।

पवित्र परिवार फिलिस्तीन के बेर्साबे मरुस्थल के उस विशाल और कठोर विस्तार में आगे बढ़ चला। फरवरी की शीत वायु में व्याप्त थी, और वह मरुस्थल उनके सम्मुख अनंत तक फैला हुआ था, बांझ रेत का एक ऐसा सागर जहाँ न कोई शरण थी, न कोई सांत्वना। पवन किसी जंगली पशु के समान गर्जना कर रही थी, जिसके प्रचंड झोंके उस शून्यता में लहरा रहे थे और यूसुफ तथा मरियम के बोलने के

प्रयासों को भी अपने शोर में डुबो रहे थे। वह तूफान जीवंत प्रतीत होता था, मानो उसकी सरसराहट उस शून्य के डरावने भार को वहन कर रही हो। तभी, उस घूमते हुए कोलाहल के मध्य, दूर एक छोटी पहाड़ी उभरी, जो आश्रय की एक क्षीण आशा के समान थी। यूसुफ का स्वर उस अंधड़ को चीरता हुआ निकला, जो व्याकुल और दृढ़ था: *"वहाँ! उधर देखिए! हमें वहाँ ओट मिल जाएगी!"*

शिशु के रोने का स्वर वायु को चीर रहा था, जो अत्यंत कोमल होते हुए भी हठपूर्ण था, जबकि मरियम अपने बालक को उन निरंतर चुभने वाली हवाओं से बचाने के लिए संघर्ष कर रही थीं। वे खच्चर से नीचे उतर आईं, जिसके थके हुए कदम यूसुफ के नेतृत्व में लड़खड़ा रहे थे, और वे पैदल ही आगे बढ़ने लगीं। एक हाथ से उन्होंने अपने नवजात को सीने से लगा रखा था, और दूसरा हाथ आगे की ओर फैला हुआ था, जिसकी उंगलियाँ तूफान को चीर रही थीं, मानो उसके प्रकोप को दो भागों में विभक्त कर देना चाहती हों।
डग-डग भरते हुए, वे उस पहाड़ी की ओर बढ़ते गए; जैसे-जैसे वे आश्रय के निकट पहुँचते गए, पवन की दहाड़ धीमी होती गई। अंततः, वे पहाड़ी की ओट में पहुँच गए, जहाँ तूफान का क्रोध शांत होकर एक मंद फुसफुसाहट में बदल गया।

मरियम भूमि पर बैठ गईं, उनका शरीर कांप रहा था किंतु उनके हाथ स्थिर थे जब वे अपने बालक को शांत कर रही थीं। "*अब चुप हो जाओ, मेरे नन्हे प्रिय,*" वे फुसफुसायीं, उनका स्वर उस कोलाहल के विरुद्ध एक कोमल मरहम के समान था। शिशु का रोना बंद हो गया, और उसका स्थान स्तनपान की मृदु ध्वनियों ने ले लिया। मरियम के अधरों पर एक मंद मुस्कान थिरक उठी जब उन्होंने नीचे उसकी ओर देखा। "*तुम कितने क्षुधित थे, मेरे नन्हे मेमने,*" वे बड़बड़ायीं। फिर वे यूसुफ की ओर मुड़ीं, उनका स्वर कोमल किंतु दृढ़ था, "*यूसुफ, आप सो जाएं। मैं पहरा दूँगी।*"

यूसुफ ने, जिनकी शक्ति पूर्णतः क्षीण हो चुकी थी, दुर्बलता से सिर हिलाया और उस पहाड़ी की ओट में ढह गए। उनका सिर उनकी वस्तुओं की उस छोटी सी पोटली पर टिक गया, और उनकी श्वासें धीमी एवं भारी हो गईं। मरियम ने कुछ क्षण उन्हें देखा, फिर अपनी दृष्टि पुनः अपने बालक की ओर मोड़ ली, जो अब शांति से निद्रा में लीन था। उनकी यात्रा के भार से उनका हृदय व्यथित था, तथापि वह एक शांत

और अडिग आशा से प्रफुल्लित भी हो उठा। मरुस्थल उनके चारों ओर अनंत तक फैला हुआ था, परंतु उस क्षण में, उस पहाड़ी की शरण में, एक कोमल शांति व्याप्त थी। जैसे-जैसे पवित्र परिवार मिस्र की अपनी यात्रा में गहराई तक बढ़ता गया, वे बेर्साबे के निर्दयी मरुस्थल के सौ मील से भी अधिक के अत्यंत कठिन मार्ग को पार करते रहे। प्रत्येक दिन अंतहीन सा प्रतीत होता था, जब ऊपर सूर्य प्रचंडता से तपता था और रातें बहुत कम विश्राम प्रदान करती थीं। मरियम और यूसुफ घंटों की थकाऊ यात्रा के पश्चात देर रात को लिए गए केवल एक विनीत भोजन मात्र से स्वयं को जीवित रखे हुए थे। प्राकृतिक तत्वों ने कोई दया नहीं दिखाई, और एक रात्रि, एक भीषण तूफान उन पर अत्यंत क्रोध के साथ टूट पड़ा। मूसलाधार वर्षा चादरों के समान बरस रही थी, और पवन किसी प्रतिशोधी आत्मा के समान गर्जना कर रही थी, जो उनकी पहले से ही जर्जर आत्माओं को झकझोर रही थी।

मरियम ने, यद्यपि वे अपने विश्वास में अटल थीं, दिव्य शक्ति का आह्वान किए बिना अपने बालक को तूफान के कोप से नहीं बचा सकीं। वर्षा ने उनके वस्त्रों को पूरी तरह भिगो दिया था, जो उनकी त्वचा से किसी ठंडी परत के समान चिपक गए थे। उनकी भुजाएं कांप रही थीं जब उन्होंने उस शिशु को थाम रखा था, जिसका नन्हा शरीर भीगे हुए वस्त्रों में लिपटा था। वह बालक प्रचंड रूप से कांप रहा था और उसका रुदन रात्रि को चीर रहा था; जो पहले तो तीव्र और व्याकुल था, किंतु फिर मंद पड़ता गया, मानो उसकी शक्ति क्षीण हो रही हो। मरियम का हृदय आतंक से भर गया जब उन्होंने उस शीत को उसके कोमल शरीर के भीतर समाते हुए अनुभव किया। उन्होंने उसके पीले पड़े मुख को देखा, उनके अपने अश्रु वर्षा के जल के साथ मिल रहे थे, और उनके भीतर एक तीव्र, ममतामयी दृढ़ता उमड़ पड़ी।

क्रोधित आकाश की ओर अपनी दृष्टि उठाते हुए, उनका स्वर उस प्रचंड तूफान के कोपरव से भी ऊँचा उठ गया, जो अत्यंत मर्मस्पर्शी एवं आदेशात्मक था: *"हे पवन और वर्षा, मैं तुम्हें आज्ञा देती हूँ! मेरे बालक को, जो परमेश्वर के इकलौते पुत्र हैं, पीड़ित न करो! यदि तुम्हें अपना क्रोध प्रकट ही करना है, तो उसे मुझ पर मोड़ दो, क्योंकि मैं उनके सम्मुख सर्वथा अयोग्य हूँ!"* उनके ये शब्द एक माता के प्रेम के अधिकार में लिपटी हुई एक व्याकुल पुकार बनकर गूँज उठे। ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह तूफान ठिठक गया हो, उसकी उग्रता क्षण भर

के लिए थम गई, मानो स्वयं प्रकृति के तत्व उनकी उस पुकार को सुनने के लिए रुक गए हों। मरियम ने अपने बालक को और भी कसकर हृदय से लगा लिया, उनका शरीर अब शीत से नहीं, अपितु उनके बलिदान के भार से कांप रहा था। उस क्षण में, वे कोमल और अडिग दोनों थीं, प्रकृति के प्रकोप के सम्मुख भक्ति की एक प्रकाश-स्तंभ के समान। उनकी विनती के उत्तर में, प्रकाश के एक देदीप्यमान मंडल ने उनकी भुजाओं में विराजे उस बालक को चारों ओर से घेर लिया। अपनी माता के प्रेम से अत्यंत द्रवित होकर, बालक यीशु ने अपने साथ चल रहे स्वर्गदूतों की सेना से निवेदन किया कि वे उस प्रकाश के मंडल को और अधिक विस्तृत कर दें ताकि वह मरियम और यूसुफ दोनों को अपने भीतर सुरक्षित कर ले। इसी चमत्कार ने मिस्र की उस लंबी और संकटपूर्ण यात्रा के दौरान अनेक परीक्षाओं में पवित्र परिवार को संबल प्रदान किया।

अंततः, वह पवित्र परिवार मिस्र पहुँचा; उनके थके हुए कदम उन्हें एक ऐसी भूमि पर ले आए जो अंधकार की छाया से ढकी हुई थी। वहाँ के अनेक लोग जाल में फंसे हुए थे, और उनकी आत्माएँ लुसिफ़र तथा उसके दुष्ट मंत्रियों की कुटिल पकड़ में जकड़ी हुई थीं। तथापि, जैसे ही मरियम और यूसुफ ने उन नगरों में प्रवेश किया, उनके मध्य एक शांत किंतु अगाध शक्ति जाग्रत हो उठी। अपनी माता की गोद में विराजे हुए शिशु यीशु ने अपनी नन्ही आँखें और हाथ स्वर्ग की ओर उठाए, और उनकी दृष्टि अपने स्वर्गीय पिता पर टिकी हुई थी। यद्यपि उनके अधरों से कोई शब्द नहीं निकला, तथापि उनकी मौन विनती दिव्य तत्परता के साथ गूँज उठी, जो उन लोगों के लिए दया, छुटकारे और उद्धार की पुकार थी जो निराशा में फंसे थे। मरियम, जो सदैव अपने पुत्र के पावन मिशन के प्रति सचेत रहती थीं, उनके साथ इस मूक प्रार्थना में सम्मिलित हो गईं। करुणा से भरा उनका हृदय अपने पुत्र के हृदय के साथ मिलकर धड़क रहा था, जब उन्होंने अपनी विनती अर्पित की।

मिलकर, उनकी वह मौन पुकार प्रकाश के एक स्तंभ के समान ऊपर उठी, जिसने उस अंधकार के आवरण को भेद दिया जो उस भूमि पर छाया हुआ था। उस क्षण में, वायु भी उनकी भक्ति के भार से कांपती हुई प्रतीत होती थी, मानो स्वर्ग स्वयं उनकी विनती सुनने के लिए नीचे झुक आया हो। शिशु के वे नन्हे हाथ, जो निर्दोषता और

सामर्थ्य में ऊपर उठे थे, आशा का एक प्रतीक बन गए, एक ऐसी प्रतिज्ञा कि अत्यंत अंधकारमय स्थानों में भी उद्धार की ज्योति को बुझाया नहीं जा सकता। शीघ्र ही मिस्र के काले आकाश में तूफानी बादल उमड़ने लगे, बिजली कड़कने लगी और पीड़ितों के शरीरों से दुष्ट आत्माएँ बाहर निकाली जाने लगीं। जैसे ही ईश्वरीय शक्ति उस भूमि पर फैली, झूठी मूर्तियाँ चकनाचूर हो गईं, वेदियाँ ढह गईं और मंदिर खंडहर बन गए। इन अकथनीय घटनाओं से चकित होकर मिस्र के लोग अपने नगरों का पुनर्निर्माण करने लगे।

उस उथल-पुथल के मध्य, वे अजनबी, अर्थात् वह पवित्र परिवार, सहायता के लिए आगे बढ़े। जब वे स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर परिश्रम कर रहे थे, तब मरियम ने यसायाह नबी की भविष्यवाणियों के विषय में बताना आरंभ किया: "*क्या यह पहले ही नहीं बताया गया था कि यहूदियों का राजा, वह मसीह आएगा, और मूर्तियों के मंदिर नष्ट कर दिए जाएंगे? केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है, जो जीवन के समस्त रहस्यों का सृजनहार है। अपने पुत्र को देखिए, क्या आप उसकी पूर्णता पर चकित नहीं होते? इतना छोटा, फिर भी बुद्धि और शक्ति से परिपूर्ण। और आप, देवी, जब आप नदी में अपने वस्त्र धोती हैं, तो क्या आप उस जीवनदायी प्रवाह पर विस्मय नहीं करतीं जो आपके परिवार का पोषण करता है? उन्होंने, जो स्वर्ग और पृथ्वी के एकमात्र सृजनहार हैं, आप सभी के प्रति अपने प्रेम के कारण, सुंदरता और उद्देश्य के साथ इस सब की रचना की है।*"

उनकी बातें सुनने और चमत्कारों का साक्षी बनने के लिए भीड़ एकत्र होने लगी, मूर्तियों और ग्रसित शरीरों से दुष्ट आत्माओं का शुद्धिकरण, गंभीर रोगों का उपचार, यह सब उनके पुत्र की भावपूर्ण प्रार्थनाओं की सहायता से संभव हुआ। अंततः, उनकी कठिन यात्रा तब समाप्त हुई जब वह परिवार हेलियोपोलिस नगर में बस गया। उन्होंने एक विनीत तीन कमरों वाले निवास में अपना घर बनाया: एक कमरा मरियम की देखरेख में बालक यीशु के लिए एक पावन स्थल बन गया, दूसरा कमरा यूसुफ के शयन कक्ष के रूप में सुरक्षित रखा गया, और अंतिम कमरा उनकी साधारण बढ़ईगिरी की कार्यशाला के रूप में काम आया।

इन कठिन समयों में, यूसुफ के लिए काम मिलना दुर्लभ था और उन्हें अक्सर तिरस्कार का सामना करना पड़ता था, जबकि मरियम ने, जो एक कुशल दर्जी थीं, घर-घर जाकर सिलाई का काम जुटाया। अपने छोटे से घर में, भोर से लेकर रात ढलने तक, मरियम न केवल अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए श्रम करती थीं, बल्कि कोमलता से यीशु की सेवा भी करती थीं और यूसुफ को संबल प्रदान करती थीं। उस छोटे से पालना-गृह के शांत क्षणों में, मरियम प्रार्थना में घुटने टेकती थीं, और उनके तथा उनके पुत्र के हृदय से एक मंद प्रकाश प्रस्फुटित होता था, एक ऐसा पवित्र मिलन जिसमें शीघ्र ही ऊपर से एक तीसरा प्रकाश भी सम्मिलित हो जाता था, जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर उनसे वार्तालाप करते थे।

इस प्रकार, कठिनाइयों और ईश्वरीय चमत्कारों के मध्य, पवित्र परिवार की यात्रा निरंतर चलती रही, जो विश्वास, सहनशीलता और प्रेम की उस रूपांतरकारी शक्ति का प्रमाण थी जिसने सदैव के लिए मानवीय नियति का मार्ग बदल दिया।

अध्याय अठारह

बालक यीशु

उनके निवास के एक शांत कार्यकक्ष में, जैतून के समान कोमल त्वचा, घुंघराले काले केश और गहरी भूरी आँखों वाले नन्हे बालक यीशु, मरियम की प्रेममयी भुजाओं में विराजे थे। वहीं उन्होंने पहली बार यूसुफ से वार्तालाप किया। उनका छोटा किंतु स्पष्ट स्वर स्वर्गीय उद्देश्य के भार को वहन कर रहा था, जब उन्होंने अपने सांसारिक पिता को संबोधित किया:

"मेरे पिता, मैं स्वर्ग से जगत की ज्योति बनने और इसे अंधकार से छुड़ाने के लिए आया हूँ। मैं एक अच्छा चरवाहा बनने आया हूँ, ताकि उन्हें स्वर्ग का मार्ग सिखा सकूँ और उसके उन द्वारों को खोल सकूँ, जो उनके पापों के कारण बंद हो गए हैं। मेरी इच्छा है कि आप उस ज्योति की संतान बनें, जो आपके इतने निकट है।"

इन दिव्य वचनों और अपने पुत्र के कोमल अधिकार से अभिभूत होकर, यूसुफ अपने घुटनों के बल गिर पड़े, और उनका हृदय अपार नम्रता से भर गया। कांपते हुए विस्मय के साथ उन्होंने उत्तर दिया, "*कि आपने, मेरे प्रभु और मुक्तिदाता, मुझे अपना विनम्र सेवक पुकारा है, यह मेरे हृदय को ऐसी ऊँचाइयों तक ले जाता है जहाँ मेरी जिह्वा अपनी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं खोज पाती।*"

तत्पश्चात्, बालक के कक्ष के उस शांत पावन स्थल में, यीशु ने अपनी माता को खोजा। मरियम, जो मूक प्रार्थना में घुटने टेके बैठी थीं, उन्होंने उनके नन्हे हाथ के कोमल स्पर्श को अनुभव किया जब वे प्यार से उनके मुख को सहला रहे थे। एक अत्यंत प्रिय किंतु दृढ़ स्वर में, उन्होंने कहा:

"मेरी माता, मेरे भीतर प्रवेश करें और सदैव मेरे साथ रहें, ताकि आप मेरे सभी कार्यों में मेरा अनुकरण कर सकें। मैं चाहता हूँ कि आप उस उच्च पूर्णता को धारण करें और प्रदर्शित करें जिसकी मैं समस्त आत्माओं में अभिलाषा करता हूँ। मैंने आपको समस्त पूर्णता के पात्र के रूप में चुना है और आपको अपने दाहिने हाथ के वे कोष प्रदान करता हूँ, वे कोष जिन्हें शेष मानवता ने खो दिया है या जिनका दुरुपयोग किया है।"

इन पवित्र वचनों को सुनकर, मरियम ने अगाध प्रेम और श्रद्धा से भर कर, कोमलता से अपने बालक के हाथ को चूमा; यह एक ऐसा भाव था जिसने उनके मध्य के उस घनिष्ठ संबंध को मुहरबंद कर दिया और दिव्य अनुग्रह के चुने हुए पात्र के रूप में उनकी भूमिका की पुष्टि की।

एक कोमल और घुमावदार नदी के तट पर, दोपहर के सूर्य ने लहराते जल और मृदु रेतीले किनारे पर अपनी सुनहरी आभा बिखेरी थी। वहाँ, बहते जल की कलकल ध्वनि और दूर गाँव के कोलाहल के मध्य, विभिन्न आयु के बालकों का एक छोटा समूह खेल में मग्न होकर एकत्र था। उनकी खिलखिलाहट उन माताओं की लयबद्ध थाप के साथ मिल रही थी जो अपने काम में व्यस्त थीं, शीतल और स्वच्छ जल में वस्त्र धोती हुई उनके हाथों की गति एक अभ्यस्त नृत्य के समान थी, जो परंपरा और कर्तव्यनिष्ठा का बोध कराती थी।

इन बालकों के बीच, तीन वर्ष के बालक यीशु अपनी सहज शांति के कारण सबसे अलग दिखाई दे रहे थे। जब चारों ओर जल की बौछारें और हर्षोल्लास की ध्वनियाँ गूँज रही थीं, तब क्रीड़ा के उस वेग के मध्य उन्होंने अचानक अपने खेल को विराम दिया। अपनी कोमल आयु से कहीं अधिक गंभीर और शांत धैर्य के साथ, वे जल के किनारे एक चिकने और धूप से तपते हुए पत्थर की ओर बढ़े और वहाँ विराजमान हो गए।

एक-एक करके, अन्य बालकों ने अपने खेल छोड़ दिए और उनके चारों ओर एकत्रित हो गए, और उनके चरणों में एक घेरा बनाकर बैठ गए। उनकी चमकती आँखों में जिज्ञासा और प्रशंसा का भाव था, जब वे अपने नन्हे शिक्षक के मुख से निकलने वाले कोमल और मधुर वचनों को एकाग्र होकर सुनने लगे।

यीशु ने सरल शब्दों में बात की, किंतु उनके स्वर में वह गंभीरता थी जो उनकी आयु के विपरीत प्रतीत होती थी, आशा, प्रेम और विस्मय का एक ऐसा संदेश जो उनके नन्हे श्रोताओं के हृदयों में गहराई तक उतर गया। उन्होंने अत्यंत सरल किंतु अगाध भाषा में अपने चारों ओर के संसार के सौंदर्य, दयालुता की शक्ति और छोटी-छोटी चेष्टाओं में भी आनंद साझा करने के रहस्य का वर्णन किया। उनके शब्द, जो अत्यंत प्रिय और सच्चे थे, समझ का एक ऐसा ताना-बाना बुन रहे थे जो प्रत्येक उत्सुक कान तक पहुँच रहा था, उनके मित्रों की कल्पना को मोहित कर रहा था और उन्हें एक उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न देखने के लिए प्रेरित कर रहा था।

कुछ ही दूरी से, मरियम इस दृश्य को निहार रही थीं। पास के एक वृक्ष का सहारा लिए हुए, उनकी आँखें प्रेम से सजल थीं और उनके मुख पर एक बोधमयी मुस्कान थिरक रही थी। उस शांत क्षण में, उन्होंने आनंद और विस्मय के एक अकथनीय मिश्रण का अनुभव किया, एक गहरा, ममतामयी गर्व उस सौम्य प्रज्ञा पर जो उनके बालक से प्रस्फुटित हो रही थी। अन्य बालकों के साथ उनके संवाद की सादगी और पवित्रता को देखते हुए, मरियम का हृदय कृतज्ञता से भर गया।

उन्होंने उनमें दिव्य ज्योति की उस चिंगारी को पहचान लिया, जिसने भविष्य में संसार के अंधकारमय कोनों को आलोकित करने की प्रतिज्ञा की थी। उनके वे शब्द, जो अत्यंत प्रिय और सच्चे थे, समझ का एक ऐसा ताना-बाना बुन रहे थे जो प्रत्येक उत्सुक कान तक पहुँच रहा था, उनके मित्रों की कल्पना को मोहित कर रहा था और उन्हें एक उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न देखने के लिए प्रेरित कर रहा था।

कुछ ही दूरी से, मरियम इस दृश्य को निहार रही थीं। पास के एक वृक्ष का सहारा लिए हुए, उनकी आँखें प्रेम से सजल थीं और उनके मुख पर एक बोधमयी मुस्कान थिरक रही थी। उस शांत क्षण में, उन्होंने आनंद और विस्मय के एक अकथनीय मिश्रण का अनुभव किया, एक गहरा, ममतामयी गर्व उस सौम्य प्रज्ञा पर जो उनके बालक से प्रस्फुटित हो रही थी। अन्य बालकों के साथ उनके संवाद की सादगी और पवित्रता को देखते हुए, मरियम का हृदय कृतज्ञता से भर गया। उन्होंने उनमें दिव्य ज्योति की उस चिंगारी को पहचान लिया, जिसने भविष्य में संसार के अंधकारमय कोनों को आलोकित करने की प्रतिज्ञा की थी।
नदी की वह मंद कलकल ध्वनि और ऊपर पत्तों की कोमल सरसराहट, बचपन के विस्मय से भरे इस आत्मीय दृश्य को एक शांत पृष्ठभूमि प्रदान कर रही थी। उस प्रशांत स्थान में, मानो समय की गति धीमी हो गई हो, और प्रत्येक विवरण, बालकों की आँखों की चमक, यीशु के शब्दों का वह सुमधुर उतार-चढ़ाव, और मरियम के मुख पर वह करुणामयी मुस्कान, पूर्ण सामंजस्य के उस क्षण में अपना योगदान दे रहे थे। नदी के तट पर वह एक साधारण सा मिलन था, तथापि वह प्रतिज्ञा और आशा के भार को वहन किए हुए था, जो परमेश्वर के उस बालक के सम्मुख आने वाली गहन नियति का संकेत दे रहा था।

यह दृश्य आने वाले वर्षों में कई बार दोहराया जाता, जब मरियम परिवार के वस्त्र धोने के लिए नदी पर जाया करती थीं, ठीक वैसे ही

जैसे उनके घर में प्रार्थना की निरंतर रीतियाँ चलती रहती थीं।

उनके घर की उस शांति में, वायु शोक और पवित्र प्रतीक्षा, दोनों के भार से बोझिल थी। एक छोटे से सूर्यप्रकाशित कक्ष में, अब पाँच वर्ष के हो चुके यीशु भूमि पर उस मुद्रा में लेटे थे, जो क्रूस के प्रतीक का स्मरण कराती थी। उनका नन्हा शरीर पीला पड़ गया था, और उनके माथे से रक्त की बूंदें धीरे-धीरे उनके मुख पर टपक रही थीं, एक ऐसा दृश्य जिसने उस कक्ष को एक अगाध और अकथनीय शोक से भर दिया था।

उनके समीप, मरियम, जो अपने शोक में भी देदीप्यमान थीं, प्रार्थनापूर्ण परमानंद की अवस्था में निमग्न थीं। अपने बालक की पीड़ा के उस दर्शन से विह्वल होकर, वे अपने घुटनों के बल गिर पड़ीं और कोमलता से उनके माथे से उन लाल रेखाओं को पोंछा। उनके गालों से अश्रु मौन रूप से बह रहे थे जब वे अपने हृदय की उस मर्मांतक पीड़ा को थामे हुए थीं, और उनके प्रति मरियम का वह प्रेम, उस उभरते हुए शोक के विरुद्ध एक प्रिय मरहम के समान था।

अगले वर्ष, छह वर्ष के बालक यीशु अपने पिता यूसुफ के साथ उनके कार्यकक्ष में सम्मिलित हुए। शांत दृढ़ संकल्प के साथ, यीशु ने एक छोटा औजार थाम लिया, और यूसुफ ने, जो सदैव धैर्यवान और प्रेममयी थे, उनके हाथों का मार्गदर्शन किया जब वे दोनों मिलकर लकड़ी के एक टुकड़े पर कार्य कर रहे थे। उनके श्रम की वह लयबद्ध ध्वनि शिक्षा और प्रोत्साहन के मृदु शब्दों के साथ मिल रही थी, जिससे पिता और पुत्र के मध्य आत्मीय मिलन का वह क्षण निर्मित हो रहा था, जो कौशल, सावधानी और सृजन के सौंदर्य का एक मौन पाठ था।

उस विनीत निवास के एक अन्य भाग में, मरियम रसोई के कार्यों में व्यस्त थीं। बड़ी शालीनता और तत्परता के साथ, उन्होंने दोपहर के भोजन के लिए पात्र सजाए। उनकी प्रत्येक चेष्टा कर्तव्यनिष्ठा और स्नेह के गहरे बोध से ओत-प्रोत थी, जो एक ऐसी निरंतर और ममतामयी उपस्थिति थी जो उस परिवार को एक साथ बाँधने वाले प्रेम और समर्पण की साक्षी देती थी।

जैसे ही संध्या ढली, वह परिवार गोधूलि बेला की शीतलता में बाहर आया। जीवंत गलियों में वे एक साथ मंदिर की ओर चले, जहाँ उनके हास्य की ध्वनि दैनिक जीवन के शोर के साथ मिल रही थी। एक साथ होने का वह आनंद प्रत्यक्ष था, जो दिन भर के संघर्षों से एक सुखद विश्राम के समान था, जब वे अपने हृदयों में उल्लास और आशा लिए

टहल रहे थे।

यीशु के उस छोटे और साधारण कक्ष में, अब जब वे सात वर्ष के हो चुके थे, एक दिव्य संदेश प्राप्त हुआ। मरियम और बालक यीशु ने एकाग्र होकर सुना जब एक कोमल और अदृश्य वाणी ने यह सूचित किया कि अब उस परिवार के लिए नाज़रेथ लौटने का समय आ गया है। वायु में एक गंभीर संकल्प व्याप्त था जब उन्होंने अपनी यात्रा के अगले चरण के लिए स्वयं को तैयार किया, एक ऐसी घर-वापसी जो नियति और प्रतिज्ञा से परिपूर्ण थी।

उस रात्रि, यूसुफ के कक्ष के शांत एकांत में, उन्हें भी वह पवित्र संदेश प्राप्त हुआ। उनकी आँखों के सम्मुख प्रकट हुए एक दर्शन में, उन्होंने देखा कि उनका परिवार अपनी कुछ अल्प वस्तुओं को समेट रहा है और एक बार फिर मरुस्थल की ओर प्रस्थान करने के लिए खच्चरों पर सवार हो रहा है। वह दर्शन, जो ईश्वरीय उद्देश्य से प्रेरित था, शीघ्र ही वास्तविकता में बदल गया, और पवित्र परिवार ने स्वयं को नाज़रेथ स्थित अपने घर में पाया। वहाँ, एक प्रिय चचेरी बहन, मार्था ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, जिसने उस पुराने घर का कार्यभार संभाल रखा था जो कभी मरियम के माता-पिता का हुआ करता था।

अध्याय उन्नीस
नाज़रेथ की वापसी

उस जीर्णोद्धार किए गए घर के भीतर, खिड़कियाँ खोल दी गईं और प्रकाश की धाराएँ भीतर प्रवाहित होने लगीं, जिससे वह निवास उष्णता और स्वागत के भाव से भर गया। मार्था ने हृदयस्पर्शी हर्ष के साथ उनका अभिनंदन किया। "*मेरे प्रिय भाई-बहनों, घर में आपका स्वागत है, और देखिए, यूसुफ, आपका पुत्र! मैंने एलिजाबेथ से सुना था कि उनका नाम यीशु रखा गया है। कितना मनमोहक मुखमंडल है, और यदि वे अपने पिता के समान ही हैं, तो निश्चित ही उनका स्वभाव भी अत्यंत मधुर होगा!*"

मरियम ने कृतज्ञतापूर्वक उत्तर दिया, "मार्था, मेरे माता-पिता के इस पुराने घर की इतनी उत्तम देखरेख करने के लिए तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद।"

यूसुफ ने भी धीरे से कहा, "*हाँ, हम तुम्हारी कृतज्ञता की गहराई को अनुभव करते हैं।*"

युवा उदारता के एक भावुक प्रदर्शन में, बालक यीशु ने उस छोटी सी पोटली को बड़ी सावधानी से खोला जिसे वे अपने साथ लाए थे। उसमें से उन्होंने लकड़ी के दो अत्यंत सूक्ष्मता से तराशे हुए पक्षी निकाले। एक संकोची मुस्कान और कांपते हाथों के साथ, उन्होंने उन्हें मार्था की ओर बढ़ाया। उन्होंने कहा, "यह आपके लिए है, मेरे माता-पिता के घर की देखभाल करने के लिए आपका धन्यवाद।" मार्था विस्मित होकर पुकार उठी, "*इसे तो देखो! यूसुफ, आप तो बहुत कुशल हो गए हैं। अरे, ये तो कपोत हैं!*" यूसुफ ने अपनी आँखों में एक चमक के साथ उत्तर दिया, "*इन्हें इन हाथों ने नहीं, बल्कि इन हाथों ने गढ़ा है।*" उसी क्षण, यूसुफ बालक यीशु के पीछे खड़े हो गए और उन्हें अपनी भुजाओं में भर लिया, तथा बालक के उन नन्हे हाथों को अपने हाथों में लेकर मार्था की ओर बढ़ाया। इस प्रेममयी चेष्टा से अत्यंत द्रवित होकर, यीशु पीछे की ओर यूसुफ का सहारा लेकर टिक गए, और उनकी आँखें परिवार एवं विश्वास के उस पवित्र और मूक बंधन से चमक रही थीं।

दोपहर के उत्तरार्ध की उस मंद आभा में, यूसुफ और बालक यीशु अपने विनीत घर के पीछे बनी लकड़ी की कार्यशाला को पुनः व्यवस्थित करने में

जुट गए। उन्होंने मिलकर उन चरमराते द्वारों को खोला और भीतर उन पुराने, घिसे हुए औजारों तथा मिस्र से लाए गए नवीन उपकरणों के सम्मिश्रण को निहारने लगे।

धैर्यपूर्ण सावधानी के साथ, उन्होंने इधर-उधर बिखरे हुए उपकरणों को व्यवस्थित किया और अपने अगले कार्य के लिए आवश्यक सामग्री एकत्र की, यीशु के सोने के लिए एक छोटी खाट। पिता और पुत्र ने कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हुए, सरल किंतु प्रेममयी सूक्ष्मता के साथ उस खाट को गढ़ा। जब उन्होंने इसे पूर्ण कर लिया, तब उन्होंने उसे घर के भीतर ले जाने का प्रयास किया। उनके साझा हास्य के मध्य, वह खाट, जो भारी और असुविधाजनक थी, द्वार के बीच में ही फंस गई; और जैसे-जैसे वे उसे भीतर ले जाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, मरियम का कोमल हास्य भी उनके साथ सम्मिलित हो गया। अंततः जब वह भीतर पहुँच गई, तब धन्य माता ने यीशु के लिए कक्ष सजाने का प्रयास किया।

यीशु के छोटे से कक्ष के भीतर, मरियम ने शांत भक्ति के साथ साज-सज्जा की व्यवस्था की। उन्होंने एक छोटी मेज, एक स्टूल और उस नवनिर्मित खाट पर करीने से तह किए हुए बिस्तरों को रखा। जब वे क्षण भर के लिए बाहर निकलीं और पुनः लौटीं, तो उन्होंने एक पछतावे भरी मुस्कान के साथ पाया कि खाट को छोड़कर शेष सभी वस्तुएं अनजाने में द्वार के बाहर ही छूट गई थीं। राजाओं के राजा ने उन कष्टों और नम्रता का अभ्यास करने में तनिक भी विलंब नहीं किया, जिन्हें परमेश्वर की संतानों में से बहुतों द्वारा अनुभव किया जाता है।

तत्पश्चात्, एक उज्ज्वल प्रातःकाल में, यूसुफ और यीशु अपने ग्राम की हलचल भरी गलियों से होते हुए एक साथ निकल पड़े। एक जुए और एक पात्र से लदी एक सुदृढ़ गाड़ी को धकेलते हुए, वे उस दयालु व्यक्ति के घर पहुँचे जिसने आठ वर्ष पूर्व यूसुफ को एक खच्चर उधार दिया था। वह व्यक्ति अपने चरमराते हुए चबूतरे पर बैठा था और उसने हँसते-हँसाते उनका अभिनंदन किया। "*अरे, यह क्या! यूसुफ, तुम अंततः उस पुराने खच्चर का मोल चुका रहे हो। मेरा दांव है कि वह बेचारी खच्चर इन सुंदर लकड़ी की वस्तुओं को बनाने में लगे समय से भी पहले मर गई होगी,*" उसने ठिठोली की। एक आत्मीय मुस्कान के साथ यूसुफ ने उत्तर दिया, "इसके विपरीत, मेरे दयालु मित्र, वह पशु लगभग चार वर्ष तक जीवित रहा।" वह व्यक्ति हँसा और फिर उनके साथ खड़े बालक के विषय में पूछा। "*और यह उत्तम बालक कौन हो सकता है?*" यीशु ने, उस गंभीर शिष्टता के साथ जो उनकी आयु में ही प्रज्ञा का संकेत दे रही थी, अपना हाथ आगे बढ़ाया और

कहा, "*मेरा नाम यीशु है; मैं इन अत्यंत कुशल बढ़ई का पुत्र हूँ। श्रीमान, मुझे और मेरी माता को अपने खच्चर पर सवारी करने देने के लिए आपका धन्यवाद। हमने कई-कई कोस की यात्रा की, और मैंने इस पात्र को बनाने में अपने पिता की सहायता भी की है। मुझे इसे आपके लिए भरने दें।*"

आज्ञाकारी भाव से, उस बालक ने पास के एक कुएं की ओर दौड़ लगाई और उस पात्र में जल भरने लगे।

वह दयालु व्यक्ति, यीशु को कार्य करते हुए देख रहा था, उसने एक लंबी श्वास लेते हुए कहा, "*यूसुफ, तुम भाग्यशाली हो कि तुम्हें ऐसा पुत्र मिला। मेरा अपना बालक बहुत बीमार है, प्रत्येक दिन उसकी दशा बिगड़ती जा रही है, और कोई भी उपचार उसे स्वस्थ नहीं कर पा रहा।*" अपना कार्य बीच में रोकते हुए, यीशु ने अपना सिर ऊपर उठाया और एक बोधमयी दृष्टि के साथ, कुएं की टोंटी के नीचे अपनी अंजलि बनाई ताकि शीतल जल उसमें से बह सके, जिससे वह पात्र निरंतर भरता गया। बड़ी सावधानी से उस पात्र को उस व्यक्ति की देहली तक ले जाते हुए, उन्होंने घोषणा की, "*मुझे इसे आपके लिए भीतर ले जाने दें। जल बहुत शीतल और उत्तम है; यह पीने के लिए अच्छा रहेगा।*" उस व्यक्ति ने मृदु परिहास के भाव में उत्तर दिया, "*यदि तुम्हारी यही इच्छा है, तो जाओ; मेरी पत्नी मेरे पुत्र की सेवा कर रही है। तुम्हें देखकर उसकी दुखी आँखों को कुछ सुख मिलेगा।*"
घर के भीतर, एक किशोर बालक दुर्बलता के साथ खाट पर लेटा था जबकि उसकी माता उसके सिरहाने बैठी पहरा दे रही थी। यीशु ने उस पात्र को नीचे रखा, मेज पर रखे लकड़ी के एक प्याले को देखा और उसे जल से भर दिया। उस बालक के समीप घुटने टेकते हुए, उन्होंने उस प्याले को किशोर के अधरों से लगाया। कुछ घूँट पीने के पश्चात, उस बालक ने यीशु का हाथ थाम लिया, अपनी आँखें खोलीं और मुस्कुरा उठा, जो आशा का एक कोमल संकेत था क्योंकि उसके पीले पड़े मुख पर धीरे-धीरे लाली लौट रही थी। जाने से पूर्व, यीशु ने बड़े स्नेह से उस किशोर के हाथ को चूमा।

जब वे वापस यूसुफ और बालक के पिता के पास लौटे और दोनों जाने की तैयारी करने लगे, तो उस व्यक्ति ने पूछा, "*क्या मेरी पत्नी ने तुम्हें अपनी बातों में उलझा लिया था? क्या उसने तुम्हें हमारे अभागे पुत्र के विषय में बताया? मैं तुम्हारे पिता से कह रहा था कि अब अधिक समय*

नहीं बचा है जब उसका कष्ट समाप्त हो जाएगा।" यीशु ने सरलता से उत्तर दिया, "*अरे, जब मैंने उन्हें जल पिलाया, तब तो वे स्वस्थ लग रहे थे। उन्होंने लगभग पूरा प्याला पी लिया।*" इतना सुनकर, वह व्यक्ति थोड़ा असमंजस में था, और शीघ्रता से भीतर की ओर भागा, जबकि यीशु ने अपने पिता की ओर देखकर मुस्कान बिखेरी, और वे दोनों वापस अपने घर की गली की ओर चल दिए।

घर पर, जैसे-जैसे वर्षों ने विकास और शिक्षा का अपना कोमल ताना-बाना बुना, यीशु अब दस वर्ष के हो चुके थे; वे धैर्यपूर्वक बैठे थे जब मरियम बड़े प्रेम से उनके पैरों के लिए वस्त्र के नए आवरण पहना रही थीं। उन्होंने उन्हें पहनाया, फिर निकाला, और फिर बड़ी सावधानी से उन्हें पुनः ठीक किया, और यह सब करते हुए वे यह सुनिश्चित कर रही थीं कि उनका प्रिय पुत्र उस कठोर और धूल भरी भूमि पर नंगे पैर न घूमे।

"मेरे पुत्र और मेरे प्रभु," मरियम ने कोमलता और ममता के साथ उन्हें उलाहना देते हुए कहा, "आपकी माता का हृदय इतना कठोर नहीं है कि वह आपको इतनी कोमल आयु में इस भूमि पर नंगे पैर चलने दे; मेरे प्रिय, मुझे अनुमति दें कि मैं आपके चरणों की रक्षा के लिए किसी प्रकार का आवरण प्रदान करूँ।"

युवावस्था की शांत प्रज्ञा के साथ, यीशु ने उत्तर दिया, "*माता, मैं अपने चरणों के लिए एक साधारण और सामान्य आवरण की अनुमति तब तक दूँगा, जब तक मेरे सार्वजनिक उपदेश का समय नहीं आ जाता, क्योंकि उस कार्य के लिए मुझे नंगे पैर ही जाना होगा।*" तत्पश्चात्, एक संकोची मुस्कान और उनकी देह (गाल) पर प्रेममयी चुंबन के साथ, उन्होंने उन चरण-वस्त्रों को स्वीकार कर लिया; जो सुरक्षा और उस विनम्र मार्ग का एक लघु प्रतीक थे, जिस पर चलना उनके भाग्य में लिखा था।

अध्याय बीस

मंदिर में उपदेश

अब अपनी बारहवीं आयु पार कर चुके यीशु, अन्य साधारण किशोरों के समान दुबले-पतले नहीं थे। यद्यपि वे लंबे थे, तथापि अपने पिता के साथ प्रतिदिन के परिश्रम के कारण वे सुदृढ़ और बलशाली थे। वह परिवार मार्ग पर एक जीवंत जुलूस में सम्मिलित हो गया। यीशु अपने परिवार और अनेक मित्रों के साथ, पोटलियों और खींची जाने वाली गाड़ियों से लदे हुए, फसह के पर्व के लिए यरूशलेम की यात्रा पर थे। उस उत्सवपूर्ण कोलाहल और जनसमूह की हलचल के मध्य, यीशु ने पूछा, "*पिता, क्या इस वर्ष मुझे पुरुषों के साथ रहने की अनुमति मिलेगी?*" यूसुफ ने एक बोधमयी मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "*मुझे लगता है कि इसकी पूरी संभावना है। तुम्हारी भली माता क्या कहती हैं?*" अपनी आँखों में एक शरारती चमक के साथ यीशु ने उत्तर दिया, "*ओह, वे सदैव यही कहती हैं कि जो आप कहें वही उत्तम है।*" पीछे से, स्त्रियों के समूह के साथ चल रही मरियम क्षण भर के लिए रुकीं और अपने परिवार के साथ सम्मिलित हो गईं।

"आप दोनों तो हम सभी स्त्रियों से कहीं अधिक तीव्र गति से चलते हैं," उन्होंने कोमलता से परिहास किया, "और इसी कारण, क्या हमें पर्व समाप्त होने के पश्चात मिलने के लिए किसी स्थान का चयन नहीं कर लेना चाहिए, यदि हम नगर से एक साथ न निकल पाएँ? निसंदेह, मेरे प्रिय पुत्र, आप या तो अपने पिता के साथ होंगे या मेरे साथ, है न?" यूसुफ सहमत हुए, "यह उत्तम विचार है! नगर से लगभग एक दिन की पैदल दूरी पर एक विशाल वृक्ष है, जिसके दाईं ओर पत्थरों का एक समूह है। जब हम वहाँ पहुँचेंगे तब मैं उसे दिखा दूँगा। हम वहीं मिलेंगे।"

जैसे ही वे अपने मार्ग पर आगे बढ़े, अगले ही दिन, अन्य स्त्रियों के मध्य चल रही मरियम की दृष्टि उस निर्धारित मिलन स्थल पर पड़ी और उन्होंने यूसुफ की ओर हाथ हिलाया। इस बीच, अन्य बालकों के समूह के साथ टहल रहे यीशु पीछे मुड़े और उत्साहपूर्वक उस वृक्ष और पत्थर की ओर

संकेत किया, जो परिवार की योजना और साझा यात्राओं के आनंद की एक मूक पुष्टि थी। यरूशलेम नगर उनके सम्मुख फैला हुआ था, जो प्राचीन भव्यता और पवित्र भक्ति का एक लुभावना दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। ढलते सूर्य के स्वर्णिम प्रकाश ने उसकी ऊँची दीवारों और संकरी गलियों को नहला दिया था, जिससे उन सड़कों पर श्रद्धापूर्ण लंबी परछाइयाँ पड़ रही थीं, जो ईश्वरीय उद्देश्य से जीवंत थीं।

प्रत्येक पत्थर मानो नबियों और राजाओं की गाथाएँ फुसफुसाता हुआ प्रतीत होता था, और प्रत्येक द्वार भक्तिपूर्ण प्रार्थनाओं की प्रतिध्वनि से गुंजायमान था। जैसे-जैसे गोधूलि गहरी होती गई, नगर जीवन की स्पंदन से भर उठा। मंदिरों के वैभवशाली मुखमंडल संध्या के मंद प्रकाश में दमक रहे थे, और उनके ऊँचे स्तंभों को दिन के अंतिम उजालों ने स्पर्श किया था। कुछ मंदिर गंभीर, दाढ़ी वाले पुरुषों से भरे हुए थे, जिनके स्वर लयबद्ध भजनों में ऊपर-नीचे हो रहे थे, जबकि अन्य मंदिरों में घूंघट वाली स्त्रियों के समूह आश्रय लिए हुए थे, जिनकी फुसफुसाती प्रार्थनाएँ उस पवित्र वायु में एक मृदु राग की भाँति घुल रही थीं।

उस संध्या के उत्तरार्ध में, वह नगर इंद्रियों के लिए एक भोज बन गया। ताजी पकी हुई अखमीरी रोटी की गर्म सुगंध मसालों और सुगंधित तेलों की समृद्ध एवं सोंधी महक के साथ मिलकर हलचल भरे आँगनों में तैर रही थी। खुले आकाश के नीचे परिवार एकत्र हुए, और जैसे ही उस महान पर्व का शुभारंभ हुआ, उनकी हँसी और गीतों के स्वर गलियों में फैल गए, यह विश्वास और स्वतंत्रता का एक ऐसा उत्सव था जो श्रद्धा, कथा-वाचन और आनंदमयी मग्नता के साथ सात रातों तक चलता रहा।

नाज़रेथ के विनीत गाँवों से लेकर यहूदिया के सुदूर क्षेत्रों तक, तीर्थयात्री आए थे, जिनके हृदय भक्ति और उत्सव के उत्साह से प्रफुल्लित थे; वे तारों की छाँव में नृत्य कर रहे थे क्योंकि उस पावन पर्व ने उन्हें विश्वास और परंपरा के एक अटूट बंधन में बाँध दिया था।

पर्व के अंतिम दिन, जैसे ही भोर की पहली किरण फूटी और परिवारों ने अपने घर की यात्रा आरंभ की, वे गलियाँ जो कभी भीड़ से भरी थीं, धीरे-धीरे खाली होने लगीं। छँटती हुई उस भीड़ के बीच, यूसुफ

की आँखों ने उन पत्थरों के समूह और उस विशाल वृक्ष को खोजा जो उनके मिलन का निर्धारित स्थल था। वे व्याकुलता से मरियम और अपने पुत्र यीशु को खोजने लगे। अचानक, मरियम की चिंता भरी दृष्टि उनसे मिली, किंतु वे अकेली थीं और यीशु कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। गहरी चिंता में डूबे हुए, वे शेष बची भीड़ के बीच घूमने लगे, और प्रत्येक राहगीर से पूछने लगे कि क्या उन्होंने उनके पुत्र को देखा है।

"क्या तुमने यीशु को देखा है?" मरियम ने पास की एक महिला से विनम्रतापूर्वक पूछा।

"हाँ, बिल्कुल, वह बहुत सुंदर है, मरियम। क्या उसे भोज पसंद आया?" उस महिला ने स्नेहपूर्वक जवाब दिया।

"हाँ, मुझे विश्वास है कि उसने लिया होगा। मेरा तात्पर्य है कि जब से हम चले हैं, क्या आपने या आपके परिवार ने उसे देखा है?" मरियम ने आग्रह करते हुए पूछा। *उस स्त्री ने सिर हिलाकर उत्तर दिया, "नहीं, पिछले दिन के बाद से तो नहीं।"*

तब यूसुफ एक समूह से दूसरे समूह की ओर बढ़े, उनकी आँखें छँटती हुई भीड़ और फिर उस परिचित वृक्ष की ओर बार-बार जा रही थीं, वे इस हताश आशा में थे कि वह बालक अचानक प्रकट हो जाएगा। अंततः, उन्होंने मरियम को उसी स्थान पर खड़े देखा, जिनका मुख चिंता से भरा था। उनके समीप पहुँचकर उन्होंने कहा, "*वह कहीं नहीं मिल रहा है। मुझे लगा कि वह आपके साथ था। मुझे क्षमा करें, मुझे वास्तव में लगा कि वह आपके साथ था।*"

मरियम ने मृदु स्वर में उत्तर दिया, "*और मुझे लगा कि वह आपके साथ था। हमें तुरंत यरूशलेम लौटना चाहिए*।" बोझिल किंतु अडिग हृदय के साथ, वे दोनों शीघ्रता से प्रस्थान करती हुई भीड़ के बीच से नगर की ओर बढ़े।

इस बीच, यरूशलेम में, यीशु भीड़ भरी गलियों में भिक्षा माँग रहे थे। वे एक दयालु स्त्री के पास पहुँचे, जिसने उनकी विनम्र उपस्थिति से द्रवित होकर अपने पास जो कुछ था, उसमें से एक छोटा सा अंश उन्हें भेंट किया। बड़ी सावधानी से उन्होंने उस साधारण भेंट को अपने झोले में रख लिया और अन्य कई लोगों से सहायता माँगते हुए आगे बढ़ गए। तथापि,

उन्होंने न तो स्वयं कुछ खाया और न ही अर्पित की गई किसी वस्तु से अपना श्रृंगार किया। जैसे-जैसे दिन ढला और संध्या हुई, वह बालक नगर के उस भाग की ओर बढ़ गया जहाँ बेघर लोग आश्रय के लिए एकत्र होते थे। वहाँ, शांत गरिमा के साथ, उन्होंने अपनी एकत्रित की हुई भिक्षा निकाली और उसे उन सभी ज़रूरतमंदों के बीच उदारतापूर्वक बाँट दिया।

तत्पश्चात्, जब गोधूलि बेला एक गंभीर रात्रि में बदल गई, यूसुफ और मरियम नगर में लौट आए, और दोनों ही गहरी चिंता में डूबे थे। अपने खोए हुए पुत्र को खोजने की व्याकुलता में उन्होंने अलग-अलग दिशाओं में जाने का निर्णय लिया।
शांत हताशा के एक क्षण में, मरियम एक एकांत कोने में अपने घुटनों के बल गिर पड़ीं और अपना मुख आकाश की ओर उठाया। "*वे मेरे हृदय से ओझल क्यों हैं? इस क्षण तक, मैंने उन्हें सदैव अनुभव किया है, तब भी जब वे मेरी दृष्टि के सम्मुख नहीं थे। हे स्वर्गीय साथियों, मुझे उनके पास ले चलो। मुझे मार्ग दिखाओ, ताकि मैं उनकी ओर दौड़ सकूँ और इस शोक से मुक्त हो सकूँ*," उन्होंने अत्यंत भक्ति के साथ प्रार्थना की। यद्यपि उस रात्रि उन्हें कोई दर्शन प्राप्त नहीं हुआ, तथापि उनकी आँखों की पीड़ा ऊपर चमकते तारों के समान स्पष्ट थी। एक कांपती हुई आह के साथ, वे अपने घुटनों से उठीं और उसी दिशा में तीव्रता से बढ़ने लगीं जहाँ उनकी अंतरात्मा उन्हें प्रेरित कर रही थी।

अगली प्रातः काल के भोर में, जब सूर्य की प्रथम किरणों ने अंधकार को मिटाना आरंभ किया, यूसुफ और मरियम ने अपनी व्याकुल खोज पुनः आरंभ की। भीड़ भरी सड़कों पर, मरियम ने एक स्त्री को रोका और अपने खोए हुए पुत्र का विवरण दिया, जिस पर उसने शीघ्रता से उत्तर दिया, "हाँ, उस रूप-रंग का एक बालक कल मेरे पास भिक्षा माँगने आया था," और कोमलता से आगे कहा, "मैंने उसे कुछ दिया था; अपनी आवश्यकता में भी इतना विनीत बालक मेरे हृदय को छू गया।"

जैसे-जैसे यूसुफ और मरियम अपनी खोज में आगे बढ़े, लोगों ने पुष्टि की कि अनेकों ने यीशु को देखा था। पुनः, उन्हें लोगों से भिक्षा माँगते हुए देखा गया, जहाँ वे जो कुछ भी अल्प प्राप्त करते थे, उसे एकत्रित करते और एक शांत दृढ़ संकल्प के साथ दूसरों को दान कर देते थे। दोपहर

के समय, उन्हें निर्धनों के लिए बने एक साधारण चिकित्सालय के भीतर देखा गया, जहाँ वे पीड़ितों के बीच घूम रहे थे, अपना नन्हा हाथ दुखियों पर रख रहे थे, उन्हें सांत्वना दे रहे थे और सूक्ष्म चमत्कारों द्वारा रोगों का निवारण एवं मृदु स्वास्थ्य-लाभ प्रदान कर रहे थे।

तीन लंबे दिनों तक, यूसुफ और मरियम ने बिना विश्राम किए, बिना कुछ खाए या सोए, पूरे नगर को छान मारा। अपनी पीड़ा में, मरियम ने एक क्षण के लिए सोचा कि कहीं यीशु ने जन्म-स्थल की उस गुफा में शरण तो नहीं ले ली, किंतु स्वर्गदूतों ने उन्हें आश्वस्त किया कि वे दूर नहीं हैं। उन्होंने यह भी विचार किया कि कहीं वे मरुस्थल में यूहन्ना के साथ तो नहीं भटक रहे, तथापि एक बार फिर, उन स्वर्गीय दूतों ने इस विचार को नकार दिया। इस सब के मध्य, वे परम पावन रानी किसी भी माता के समान व्यथित हुईं, उनके अश्रु निरंतर बहते रहे, किंतु उन्होंने कभी भी क्रोध या कड़वाहट को अपनी आत्मा को अंधकारमय करने की अनुमति नहीं दी।

तत्पश्चात्, तीसरे दिन, एक विशाल मंदिर के गूँजते हुए कक्षों के भीतर, एक विस्मयकारी दृश्य प्रकट हुआ। यीशु उन विद्वानों के मध्य खड़े थे, जो आने वाले मसीह के विषय में नबियों की भविष्यवाणियों पर शास्त्रार्थ कर रहे थे। शांत आत्मविश्वास के साथ, वे आगे बढ़े और उनके घेरे में सम्मिलित हो गए। एक-एक करके, उन विद्वान पुरुषों और खोज में सहायता हेतु एकत्र हुए अनेक माता-पिता ने अपने जिज्ञासु मुख उनकी ओर मोड़ लिए। विस्मय में डूबे वे उनके चारों ओर बैठ गए, और उस नन्हे प्रज्ञावान बालक के अंतर्दृष्टिपूर्ण एवं सौम्य तर्कों को एकाग्र होकर सुनने लगे। मरियम और यूसुफ ने, अंततः उस सभा को खोज निकालने के पश्चात, मंदिर में प्रवेश किया और वृद्धों के साथ उनके अंतिम संवाद को निहारा। उस जनसमूह के मध्य, मरियम आगे बढ़ीं, और उनका स्वर शोक तथा प्रेम दोनों से भरा हुआ था जब उन्होंने कहा, "*पुत्र, आपने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? आपके पिता और मैं भारी मन से आपको खोज रहे थे।*"

यीशु ने, शांत किंतु दृढ़ होकर उत्तर दिया, "*आप मुझे क्यों खोज रहे थे? क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के कार्यों में लगे रहना चाहिए?*"
मरियम मृदु स्वर में बोलीं, उनका हृदय भावनाओं के भार से बोझिल

था, "*मेरे पुत्र, मुझे अपना शोक व्यक्त करने दें, ताकि जब तक मेरे पास आपकी सेवा का उद्देश्य शेष है, तब तक मेरा हृदय इस पीड़ा से टूट न जाए।*" यीशु ने अपनी माता की ओर अगाध प्रेम से देखा, और अपनी उपस्थिति से उन्हें सांत्वना प्रदान की। जब तक उनके महान पावन मिशन का समय नहीं आया, वे उनके साथ रहे, उनका मार्गदर्शन और साथ देते रहे। अपने हृदयों के पुनः मिलन के पश्चात, वह पवित्र परिवार नाज़रेथ के लिए प्रस्थान कर गया। वे युवा यीशु , जो नम्रता और आज्ञाकारिता से परिपूर्ण थे, अपने माता-पिता का इस प्रकार सम्मान करते थे कि स्वर्गदूत भी चकित रह जाते थे। मरियम, जो मापदंडों से परे धन्य थीं, इतनी शुद्ध और सद्गुणी थीं कि परमेश्वर के पुत्र ने स्वयं को स्वेच्छा से उनके संरक्षण में रखा। यूसुफ के मार्गदर्शन के साथ, उन्होंने बुद्धिमत्ता और प्रेम से उनका लालन-पालन किया। सदैव उनकी भलाई को प्रतिबिंबित करने का प्रयास करते हुए, उनकी गहन पवित्रता ने मसीह के हृदय को स्पर्श किया, जिससे वे एक अटूट प्रेम के बंधन में बंध गए।

इस प्रकार, यरूशलेम की उस प्राचीन भव्यता के मध्य, जहाँ विश्वास और उत्सव की बयार बहती थी, पवित्र परिवार ने हर्ष और शोक दोनों का अनुभव किया; जो एक ऐसी यात्रा थी जो आशा, विरह और दिव्य प्रज्ञा द्वारा चिह्नित थी। उनकी यह गाथा, जो मंदिर की उन पावन दीवारों पर अंकित हो गई थी, उन सभी के हृदयों में सदैव जीवित रहेगी जो एक दिन इसे सुनेंगे।

अध्याय इक्कीस

यीशु - किशोरावस्था से वयस्कता तक

नाज़रेथ के उस विनम्र नगर में, समय एक कोमल और सुस्पष्ट ताल के साथ बीतता गया, जो यीशु की वृद्धि और उनके चुने हुए माता-पिता के शांत रूपांतरण का साक्षी बना। उन प्रारंभिक वर्षों में, बढ़ई की वह कार्यशाला आरों और हथौड़ों की गूँज से जीवंत रहती थी, जहाँ यीशु और यूसुफ कंधे से कंधा मिलाकर लकड़ी के विभिन्न कार्यों में मग्न रहते थे। यूसुफ के सावधान मार्गदर्शन में, यीशु ने काष्ठ-कला के कौशल को सीखा; जैसे-जैसे वह अपने पिता के साथ साधारण घरेलू वस्तुओं को गढ़ने में हाथ बटाते, उनके हाथ अधिक दृढ़ और स्थिर होते गए। ऐसे भी दिन होते थे जब यीशु सार्वजनिक झरनों से जल के बड़े और भारी पात्र भरकर अपने साधारण घर तक लाते थे, यह एक ऐसा कार्य था जिसने न केवल उनकी देह को बल दिया, बल्कि उनमें सेवा के अनुशासन और कठिन परिश्रम की गरिमा को भी समाहित कर दिया।

जैसे ही प्रत्येक संध्या सूर्य ढलने लगता, मरियम और यीशु प्रायः निकट बहने वाली नदी के तट पर टहलने निकल जाते। सूर्यास्त की उस मद्धम आभा में, नदी का जल पिघले हुए स्वर्ण के समान झिलमिलाता था, और वे दोनों धीमी फुसफुसाहट में वार्तालाप करते, एक ऐसा मौन और आत्मीय मिलन जो उनके बीच उतना ही प्रवाहित होता था जितना कि उस प्रकाश की कोमल क्रीड़ा में। घर पर, वह परिवार भोजन के लिए एकत्रित होता, जहाँ उस सादे मेज़ पर प्रेम और संवाद के साथ-साथ उल्लास और शांत कृतज्ञता का संगम होता था। उन एकांत क्षणों में, जब शब्द कम पड़ जाते, तब मरियम और उनके पुत्र के मध्य एक सूक्ष्म तेज प्रवाहित होता, एक कोमल, चमकता हुआ प्रकाश जो दिव्य सहभागिता का प्रमाण था, और आशा एवं बोध का एक मौन संचार था।

अपने निजी कक्षों की नीरवता में, यीशु और मरियम दोनों ही प्रार्थना में सांत्वना खोजते थे। अपने कक्ष में, युवा यीशु कभी-कभी भूमि पर दंडवत लेट जाते, मानो उनका शरीर क्रूस की आकृति में ढल गया हो। इसी के समानांतर भक्ति में, मरियम भी अपने कक्ष में घुटनों के बल झुक जातीं, और उनकी मौन विनतियाँ मातृ-प्रेम तथा जीवन के उस प्रकट होते रहस्य के प्रति अटूट विश्वास से परिपूर्ण होतीं।

जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, यीशु एक युवक के रूप में विकसित होते गए; उनके बचपन के कोमल मुख-मंडल अब वयस्कता की शांत शक्ति में परिवर्तित हो रहे थे। यहूदिया के सूर्य की तपन से कुंदन बनी उनकी सांवली त्वचा उन दिनों की छाप थी जो उन्होंने श्रम में व्यतीत किए थे, जबकि उनके काले और घुंघराले बाल उस चेहरे को घेरे रहते थे जो अत्यंत सौम्य और दृढ़, दोनों था। उनकी आँखें गहरी और मर्मज्ञ थीं, जिनमें एक शांत प्रगाढ़ता थी जो उनकी आयु से कहीं परे के ज्ञान और प्रज्ञा को दर्शाती थी।

प्रत्येक दिन, उनके श्रमशील किंतु स्थिर हाथ पूरी निपुणता और उद्देश्य के साथ लकड़ी को आकार देते थे, जो उनके सांसारिक पिता के व्यवसाय द्वारा गढ़े गए थे। उनकी देह की शक्ति मात्र बल का प्रदर्शन नहीं थी, बल्कि वह सहनशक्ति का प्रतीक थी, जो धैर्य और सूक्ष्मता की माँग करने वाले कार्यों का स्वाभाविक परिणाम थी। यद्यपि वे एक कुशल कारीगर के शांत आत्मविश्वास के साथ चलते थे, फिर भी उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा था जो अवर्णनीय किंतु निर्विवाद था, एक ऐसी उपस्थिति जो दूसरों को अपनी ओर खींच लेती थी, एक ऐसा शांत आश्वासन जो किसी महान उद्देश्य की ओर संकेत करता था।

जैसे-जैसे ऋतुएँ बदलती गईं, उन पर दिव्य प्रज्ञा का भार स्थिर होता गया, जो किसी भव्य प्रदर्शन में नहीं बल्कि उनके कार्यों की कोमल शालीनता और उनके विचारों की गहराई में प्रकट होता था। उन्होंने परिश्रम किया, सीखा और मनन किया; और जैसे-जैसे वे आने वाले मार्ग के लिए स्वयं को तैयार करते गए, उनका आत्मिक बल और भी दृढ़ होता गया।

इस बीच, यूसुफ में उम्र के अनिवार्य लक्षण दिखने लगे। कभी जोशिला और अथक रहने वाले यूसुफ को अब उन कामों में भी संघर्ष करना पड़ता था जो लंबे समय से उनकी आदत बन चुके थे। एक दोपहर, जब वह लकड़ी का एक विशेष रूप से भारी टुकड़ा उठाने का प्रयास कर रहे थे, तो उनकी थकान से हाथ काँपने लगे। अपने पिता को लड़खड़ाता देख, यीशु तुरंत आगे आए, यूसुफ की कमजोर बाहों से बोझ उठाकर और उन्हें पास की एक कुर्सी पर बिठाकर उनका भार हल्का कर दिया। यद्यपि यूसुफ कभी-कभी अपने जीवन के परिभाषित करने वाले बढ़ई के काम में अपने बेटे के साथ शामिल होते थे, लेकिन अधिकतर समय वे बैठकर देखते रहते थे, और उनकी आँखों में गर्व की चमक होती थी क्योंकि वे यीशु

में एक पवित्र शिल्प और प्रेम की विरासत की निरंतरता देखते थे।

समय अपनी निरंतर गति से चलता रहा और यीशु पच्चीस वर्ष की आयु तक पहुँच गए, एक ऐसे युवक, जिनके व्यक्तित्व और आत्मा की गहराइयों में पूर्ण परिपक्वता बस गई थी।

इसके विपरीत, यूसुफ, जो इस परिवार का सुदृढ़ आधार और रक्षक था, अब मृत्यु के निकट था, उसका वह शरीर जो कभी सामर्थ्य से भरा था, अब निर्बल और क्षीण हो चला था, मानो बीते बरसों ने उस पर अपनी शांत छाप छोड़ दी हो। दूसरी ओर, मरियम, जो अब इकतालीस वर्ष की थीं, इस परिवार का दैदीप्यमान हृदय बनी हुई थीं। तैंतीस वर्ष की आयु में जो निखार उन पर आया था, वह अब भी वैसा ही बना हुआ था; वे एक शाश्वत सुंदरता और शालीनता के साथ जीवन व्यतीत करती थीं, जो एक माँ के प्रेम और उसकी शक्ति का जीवंत प्रमाण था।

इस प्रकार, नाज़रेथ के साधारण जीवन की उस मधुर लय में, चाहे वह कार्यशाला की वह गूँज हो, नदी के जल का कोमल स्वर हो, या एकांत में की गई हृदय की प्रार्थनाएँ, समय का प्रवाह वृद्धि, सहनशीलता और एक शांत रूपांतरण की गाथा बुनता रहा। पवित्र परिवार के वे दिन, जो कठिन परिश्रम, अगाध प्रेम और वियोग के दुखों से भरे थे, उस महान विरासत के साक्षी बने जो एक दिन उनके नगर की संकरी गलियों से निकलकर पूरे संसार में गूँजने वाली थी, और जो मानव जाति के लिए मुक्ति के वादे और विश्वास की अक्षय शक्ति का संदेश देने वाली थी।

अध्याय बाईस

यूसुफ की मृत्यु

यूसुफ के शयन-कक्ष की उस नीरव शांति में, जब संध्या गहरी होकर गंभीर रात में बदल रही थी, मरियम और यीशु पूर्वज्ञान और कोमल शोक से भरे एक पल में एक साथ खड़े थे। मरियम की आँखें, जिनमें दुख और अटूट विश्वास दोनों समाये थे, अपने प्रिय पति और यीशु के सांसारिक पिता यूसुफ पर टिकी थीं, जिनका जीवन अब अपनी अंतिम घड़ी के निकट था। प्रेम और प्रभु की इच्छा के प्रति समर्पण से भरे स्वर में, उन्होंने यीशु से धीरे से कहा:

"मैं देख रही हूँ कि यूसुफ के विदा होने का समय निकट है, जैसा कि आपने अपने इस सेवक के लिए निर्धारित किया है। उसकी मृत्यु आपके लिए उतनी ही अनमोल हो जितना उसका जीवन था, क्योंकि वह मेरे पति थे और वह सांसारिक पिता जिन्हें आपने सम्मानित करने के लिए चुना था।"

आने वाले वियोग के उन शांत क्षणों में, यीशु ने कोमल आश्वासन के साथ उत्तर दिया, *"मैंमैं स्वयं उनकी सहायता करूँगा और उन्हें अपने लोगों के राजकुमारों के मध्य ऐसा ऊँचा स्थान दूँगा कि स्वर्गदूत भी उन्हें विस्मय से देखेंगे और समस्त मानव जाति उनकी महानता का गुणगान करेगी।"* उनके शब्द शांत थे, फिर भी उनमें एक ईश्वरीय प्रतिज्ञा थी, जो मानवीय शोक और स्वर्ग की आशा के बीच एक सेतु के समान जान पड़ती थी।

कई लंबे और भावुक दिनों तक, मरियम और यीशु उनके पास बने रहे और पूरी कोमलता से उनकी सेवा की। वह कक्ष, जो एक टिमटिमाती मोमबत्ती के मद्धम प्रकाश से प्रकाशित था, उन धीमी प्रार्थनाओं और विदाई की सुबगाहटों का मौन साक्षी बना। यूसुफ ने, निर्बल होते हुए भी अपने सम्मान को बनाए रखते हुए, अपने अंतिम शब्द कहने के लिए अपनी पूरी शक्ति बटोरी:

"हे सर्व स्त्रियों में धन्य और सर्व प्राणियों में चयनिता, तेरा महिमा हो। प्रत्येक पीढ़ी के देवदूत और मनुष्य तेरी महिमा गाने और तेरी गरिमा को

ऊँचा उठाने आएँ। मैं स्वर्गीय स्वदेश में तेरा गौरवमय मुख दर्शन करने की आशा करता हूँ।"

मरियम की आँखों में आँसू झिलमिला रहे थे; उन्होंने बड़ी कोमलता से उनका हाथ थाम लिया और उसे चूम लिया, मानो वे अपने जीवनभर के उस अटूट बंधन पर प्रेम की मुहर लगा रही हों। फिर, शोक और दृढ़ता के साथ पीछे हटते हुए, उन्होंने यीशु को समीप आने दिया। यीशु ने अगाध प्रेम और पुत्र के कर्तव्य के साथ अपने दुर्बल पिता को अपनी बाँहों में भर लिया। जैसे ही यूसुफ ने अपना सिर पीछे टिकाया, उनकी आँखें एक-दूसरे से मिलीं; और उन दोनों के बीच कृतज्ञता, आशा और विदाई का एक मौन संवाद बह निकला।

यूसुफ का स्वर अत्यंत धीमा था, जिसका हर शब्द गहरी श्रद्धा से भरा था। "*अपने इस सेवक को क्षमा करें और आशीष दें, जो आपके ही हाथों की रचना है। मैं आपकी स्तुति करता हूँ और सदा सर्वदा धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे अपनी माता का पति होने के लिए चुना। आपकी महानता और महिमा ही मेरी अनंत कृतज्ञता बनी रहे।*"

उसका स्वर एक शांत आनंद से सराबोर था, जो उस छोटे से कक्ष में गूँज रहा था, मानो उसने स्वयं को प्रभु की इच्छा के प्रति पूरी तरह समर्पित कर दिया हो।

अत्यधिक भावुक होकर, यीशु ने एक ऐसी स्पष्टता के साथ कहा जिसमें मानवीय प्रेम और ईश्वरीय अधिकार दोनों समाहित थे, "*हे मेरे पिता, हमारे और मेरे परमपिता के अनुग्रह और शांति में विश्राम करें; और उन नबियों और संतों के पास, जो लिम्बो में आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, उनके उद्धार के निकट आने का आनंदमय समाचार ले जाएँ।*" इन पवित्र शब्दों के उच्चारित होते ही, यूसुफ का संपूर्ण अस्तित्व अचानक एक भव्य और दिव्य प्रकाश से भर गया। उनका चेहरा, जिस पर कभी सांसारिक परिश्रम और कोमल प्रेम की रेखाएँ अंकित थीं, अब एक ऐसे परमानंद से चमक उठा जो मृत्यु के शोक से कहीं परे था। उस अलौकिक चकाचौंध के बीच, यूसुफ की आत्मा ने देह त्याग दी, और पीछे एक ऐसी शांति छोड़ गई जो जितनी गहरी थी उतनी ही सुंदर भी।

यीशु ने कोमलता से अपने पिता की आँखें बंद कीं और उनके होंठों पर एक प्रेममयी चुंबन अंकित किया, जबकि मरियम और स्वयं उनकी आँखों से मौन और अविरल अश्रुधारा बह रही थी।

और इस प्रकार, नाज़रेथ में उनके छोटे से कक्ष की शांत पवित्रता में,

यूसुफ की विरासत का शोक मनाया गया और उसकी महिमा की गई।

उनका इस पृथ्वी से प्रस्थान कोई अंत नहीं था, बल्कि एक नए अध्याय का आरंभ था, एक ऐसा अध्याय जिसमें उनकी स्मृति, एक ध्रुव तारे के समान, उनके प्रिय परिवार के लिए विश्वास के मार्ग को सदा आलोकित करती रहेगी।

मरियम, जो शोक और अनुग्रह दोनों से दमक रही थीं, और यीशु, जो अब अपनी नियति से पूरी तरह अवगत एक पुरुष थे, अनंतकाल तक फैले उन दिनों में प्रेम के हर कार्य, प्रार्थना के हर शब्द और हर विनम्र परिश्रम के माध्यम से यूसुफ की विरासत का सम्मान करते रहे।

इस प्रकार यूसुफ का सांसारिक जीवन समाप्त हुआ, और आने वाले वर्षों में नाज़रेथ पर एक गहरा और परिवर्तनकारी बदलाव छा गया। शेष छह वर्षों तक, मरियम और यीशु अपने दैनिक जीवन की उसी शांत लय में आगे बढ़ते रहे, जहाँ हर दिन एक प्रार्थना था और हर क्षण एक पुण्य स्मरण। उनका घर, यद्यपि वियोग के दुख से अछूता नहीं था, फिर भी विश्वास की स्थायी ज्योति और ईश्वरीय वादे के सूक्ष्म आश्वासन से जगमगा रहा था।

कुछ समय पश्चात, एक साधारण कक्ष में, यीशु माता मरियम के सम्मुख अत्यंत श्रद्धा के साथ घुटनों के बल बैठ गए। अपनी भुजाओं को क्रूस की आकृति में फैलाकर, उन्होंने अपने हृदय की गहराई से यह विनती की:

"हे धन्य क्रूस! तुम्हारी भुजाएँ मुझे कब थामेंगी? मैं तुम पर कब विश्राम करूँगा, जब मेरे हाथों में कीलें ठोंकी जाएँगी और वे समस्त पापियों को गले लगाने के लिए खुले होंगे? आओ, आदम की संतानों, क्योंकि मैं तुम सबको पुकार रहा हूँ। मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ, और जो कोई मुझे खोजेगा, मैं उसे कदापि अस्वीकार नहीं करूँगा। हे मेरे अनंत पिता, ये सब आपके ही हाथों की रचना हैं; इन्हें अपने से दूर न करें। मैं स्वयं को क्रूस पर एक बलिदान के रूप में अर्पित करूँगा ताकि इन्हें पुनः न्याय और स्वतंत्रता की ओर ला सकूँ। यदि ये तत्पर हों, तो मैं इन्हें आपके स्वर्गीय राज्य की ओर ले जाऊँगा, जहाँ आपके नाम की महिमा होगी।"

जैसे-जैसे यीशु प्रार्थना कर रहे थे, माता मरियम उन्हें देख रही थीं;

उनका हृदय गर्व और पीड़ा दोनों से भरा था। उनके चेहरे पर रक्त की बूंदें एक बार फिर उभरने लगीं, जो उस महान बलिदान और आने वाले शोक की स्मृति दिला रही थीं।

इस बार, मरियम ने अपने आँसू नहीं पोंछे।
इसके विपरीत, एक माँ के हृदय की उस असीम व्यथा के साथ, वे अत्यंत कोमल और करुणामयी स्वर में बोलीं:

"ओ मानव की संतानों, क्या तुम नहीं देखते कि प्रभु तुम्हारे भीतर समाई अपनी छवि को कितना बहुमूल्य मानते हैं? काश मैं तुम्हारे हृदयों को अपने हृदय से जोड़ पाती, ताकि तुम उनसे प्रेम कर सको और उनकी आज्ञा मान सको! धन्य हैं वे जो अपने पिता के प्रति वफादार रहते हैं, जिन्हें उनके दाहिने हाथ से सम्मान मिलता है।

हे शाश्वत परमेश्वर, ये मरणशील मनुष्य ऐसे पूर्ण प्रेम से विमुख कैसे हो सकते हैं? काश मैं इन्हें इनके अंधेपन से बचाने के लिए अपना जीवन दे पाती! भले ही वे अपनी सारी क्रूरता मुझ पर उतार दें, मेरा अपमान करें और मुझे जितना चाहें कष्ट दें, किंतु मेरे प्रिय प्रभु को वह सब मिले जो न्यायपूर्वक उनका है।"

अध्याय तेईस

सार्वजनिक जीवन की ओर

लकड़ी के उस शांत गोदाम में, यीशु अकेले एक ऐसी मेज़ पर विराजमान थे जो बरसों के ईमानदार श्रम से चिकनी हो गई थी। वह स्थान ताज़ी कटी हुई लकड़ी की चिर-परिचित सुगंध और उनके पुराने औजारों की तीक्ष्ण गंध से भरा था। धूल के नन्हें कण धूप की उन तिरछी किरणों में नृत्य कर रहे थे जो एक छोटी सी खिड़की से भीतर आ रही थीं। उनके स्थिर और दृढ़ हाथ देवदार की लकड़ी के रेशों पर कोमल आकृतियाँ उकेर रहे थे; मानो वह शिल्पकारी उस लकड़ी के साथ और उनके अपने उभरते हुए भविष्य के साथ एक मौन संवाद हो।

उसी क्षण, एकाग्र कार्य की उस गहरी शांति को द्वार की हल्की सी चरचराहट ने भंग किया। माता मरियम ने प्रवेश किया, जिनका मुख-मंडल मातृ-प्रेम और शांत गर्व से दीप्तिमान था। उनके हाथ में पूरी तरह पका हुआ एक फल था, एक लाल सेब जो उस मद्धम प्रकाश में किसी रत्न की भाँति चमक रहा था। एक कोमल मुस्कान के साथ, वे अपने पुत्र के समीप आईं और उस फल को धीरे से उनकी पुरानी मेज़ पर रख दिया। "*खा लो, मेरे पुत्र,*" उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा; उनका स्वर ढलती हुई धूप के समान ही गर्म और सौम्य था। एक क्षण के लिए, उनकी नक्काशी की वह निरंतर लय रुकी और उन्होंने अपनी माता की ममतामयी आँखों में देखा; और इससे पहले कि वे उस भेंट को स्वीकार करते, उन दोनों के बीच प्रेम का एक मौन आदान-प्रदान हुआ।

दिन धीरे-धीरे ढलती हुई दोपहर की सुनहरी आभा में विलीन हो गया, और अब यीशु उस शांत बहती नदी के तट पर अकेले टहल रहे थे। उनके कदम उस झिलमिलाती धारा के किनारे एक टेढ़े-मेढ़े और सहज मार्ग पर बढ़ रहे थे। विचारों में खोए हुए, वे धीरे-धीरे घूम रहे थे और उनका हर कदम इतना नपा-तुला था मानो वे जीवन के रहस्यों पर मनन कर रहे हों। अंततः, वे एक प्राचीन वृक्ष के पास पहुँचे जो एकांत में अडिग खड़ा था। उसकी खुरदरी छाल का सहारा लेकर, उन्होंने स्वयं को आत्म-चिंतन के एक क्षण में डूबने दिया। जल की वह मद्धम कल-कल और पत्तों की सरसराहट एक शांतिपूर्ण संगीत

रच रही थी; और उस शांत ठहराव में, अपनी आँखें मूँदकर वे अपनी आंतरिक दुनिया की गहराइयों में उतर गए, आशा, कर्तव्य और उस भविष्य पर एक महान ध्यान, जो अब उनके सामने था।

इसके पश्चात, अपने साधारण घर के उस ममतामयी आँचल में, मरियम और यीशु एक छोटी सी लकड़ी की मेज़ के चारों ओर एकत्रित हुए। वह कक्ष मिट्टी के दीपकों की कोमल ज्योति से मद्धम प्रकाशित था, जिसका प्रकाश पुरानी दीवारों पर नृत्य कर रहा था और लंबी, सुकून देने वाली परछाइयाँ बना रहा था। बड़े प्रेम से एक सादा भोजन तैयार किया गया था, रोटी, ताज़ी सब्जियाँ और पकी हुई दाल का एक छोटा पात्र। जब वे साथ मिलकर भोजन कर रहे थे, तब उनके संवाद में एक शांत आत्मीयता थी। माता मरियम अत्यंत कोमलता और ध्यान से सुन रही थीं जब उनके पुत्र उस चिंतन का वर्णन कर रहे थे जो नदी के तट पर उनके मन में आया था; उनके शब्द, जो विस्मय और ईश्वरीय उद्देश्य के सूक्ष्म भार से भरे थे, माता के प्रोत्साहन और स्नेहपूर्ण स्वर के साथ घुल-मिल रहे थे।

भोजन के ग्रासों और आपसी मुस्कुराहटों के बीच, उनके मध्य एक मौन और दैदीप्यमान संबंध प्रवाहित हो रहा था, एक ऐसा अनकहा आत्मिक मिलन जो प्रेम, सीखने और उस महान ईश्वरीय योजना के प्रकट होने का साक्षी था।

उनके दिनों की यह गाथा अब उनके घर की सीमाओं से बाहर विस्तार पाने लगी थी। एक गाँव के छोटे और भीड़भाड़ वाले चिकित्सालय में, मरियम और यीशु को एक बार फिर साथ देखा गया, किंतु इस बार वे दूसरों की सेवा में लीन थे। वे बीमारों के बीच बड़ी शांति से घूम रहे थे और उन्हें कोमल देखरेख तथा करुणा भरे शब्दों का संबल दे रहे थे। माता मरियम, अपने स्पर्श की शीतलता और ममतामयी उपस्थिति से पीड़ितों को सांत्वना दे रही थीं; उसी प्रकार यीशु, जिनकी आँखों में सहानुभूति और शांत अधिकार की चमक थी, घावों को धोने और उन पर पट्टी बाँधने में सहायता कर रहे थे तथा दुखियों को धीरज बंधा रहे थे। उनके सम्मिलित प्रयासों ने उस साधारण स्थान को आशा से भर दिया, जहाँ पड़ोसियों और अजनबियों, सभी को उनकी दयालुता में परम सुख प्राप्त हो रहा था।

उनकी प्रार्थनाओं की वह धीमी गूँज और वह कोमल सेवा, उस स्थायी प्रेम और समर्पण का प्रमाण थी जिसने उनके जीवन को सदैव परिभाषित किया था।

इस प्रकार, लकड़ी के गोदाम में उस एकांत नक्काशी से लेकर नदी के किनारे की उन विचारशील यात्राओं तक, और एक साधारण भोजन साझा करने से लेकर गाँव के बीमारों की सेवा करने तक, नाज़रेथ में समय का यह प्रवाह शांत अनुग्रह और अत्यंत महत्वपूर्ण क्षणों से अंकित था।

अध्याय चौबीस

एक माँ का बलिदान

अपने निजी कक्ष के शांत एकांत में, माता मरियम अत्यंत श्रद्धा के साथ घुटनों के बल प्रार्थना में लीन थीं; उनका मुख-मंडल एक अकेली मोमबत्ती की कोमल लौ से प्रकाशित था। वह कक्ष एकदम नीरव था, जहाँ केवल उनके हृदय की स्थिर धड़कन और उनके वस्त्रों की हल्की सी सरसराहट सुनाई दे रही थी। अचानक, उनकी भक्ति के बीच, भोर की किरणों के समान स्पष्ट और प्रभावशाली एक स्वर गूँज उठा:

"हे मरियम, मेरी पुत्री और जीवन-संगिनी, अब समय आ गया है कि तुम अपने इकलौते पुत्र को मेरे सम्मुख बलिदान के रूप में अर्पित कर दो।"

उसी क्षण, माता मरियम की आँखें एक तीव्र और अचानक वेदना से फैल गईं, यह केवल देह का कष्ट नहीं, बल्कि आत्मा को झकझोर देने वाला एक गहरा शोक था। पल भर में, स्मृतियों और दर्शनों की एक बाढ़ उनके भीतर उमड़ पड़ी: उन्होंने अपनी आँखों के सामने अपने नवजात शिशु के मंदिर में उस पवित्र अर्पण को देखा; उन्होंने पुरोहित सिमोन को अपने अनमोल बालक को ऊपर उठाते हुए देखा; और अंततः उन्होंने क्रूस पर अपने पुत्र के उस मार्मिक दृश्य को भी देखा। ये स्मृतियाँ, जो जितनी सुंदर थीं उतनी ही कष्टदायक भी, उनके हृदय में एक साथ समा गईं।

कांपते स्वर और अश्रुपूरित आँखों के साथ, माता मरियम ने उत्तर दिया, "*हे परमप्रधान, मैं आपको भला क्या अर्पित कर सकती हूँ जो पहले से ही आपका नहीं है? मैं स्वीकार करती हूँ, मेरे राजा, कि आपने ही उन्हें मेरे गर्भ में रचा और मुझे उन्हें इस संसार में लाने, उन्हें दुग्धपान कराने और जीवन की कठोरताओं से उनकी रक्षा करने का गौरव प्रदान किया। उनसे मुझे अपरिमित आशीष प्राप्त हुए हैं, वे मेरे बल का बल हैं, मेरी आत्मा का सार हैं और मेरे अस्तित्व का वास्तविक आनंद हैं। अपने पुत्र को उनके क्रूर शत्रुओं की माँग पूरी करने के लिए सौंप देना सबसे बड़ा बलिदान है, एक ऐसा दुख जिसे शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। फिर भी, मेरी नहीं बल्कि आपकी इच्छा*

पूरी हो। मानव जाति का उद्धार हो, आपके असीम प्रेम का प्रकाश प्रकट हो और समस्त सृष्टि के बीच आपके नाम की महिमा हो। सब कुछ से पहले, मैं उन्हें आपके हाथों में सौंपती हूँ, ताकि वे उस ऋण को चुका सकें जो उनका स्वयं का नहीं बल्कि आदम की संतानों का है, और ताकि अपनी मृत्यु के द्वारा वे उन सभी भविष्यवाणियों को पूर्ण कर सकें जो आपके द्वारा प्रेरित पवित्र नबियों ने की थीं।"

एक गहरा सन्नाटा छा गया, मानो स्वयं वायु भी परमेश्वर के उत्तर की प्रतीक्षा कर रही हो। फिर वही स्वर पुनः सुनाई दिया, जो कोमल होते हुए भी सामर्थ्य से भरा था:

"तुम्हारा यह बलिदान सृष्टि के आरंभ से अब तक दिए गए और स्वीकार किए गए बलिदानों में सबसे महान और श्रेष्ठ है; और समय के अंत तक तुम्हारे पुत्र के बलिदान के अतिरिक्त ऐसा कोई दूसरा बलिदान नहीं जाना जाएगा। इसके लिए, मेरी प्रिय, तुम्हें पुरस्कृत किया जाएगा।"

उसी क्षण, मानो उस दिव्य घोषणा के प्रत्युत्तर में, शोक में डूबी मरियम के सम्मुख चमकते हुए प्रकाश का एक विशाल गोला प्रकट हुआ। वह आभा बढ़ती गई और माता को अपनी गर्माहट और स्पष्टता में समेट लिया; और उसके भीतर एक दर्शन उभरा, एक ऐसे भविष्य की झलक जो बहुत दूर होते हुए भी अत्यंत निश्चित थी। उनकी आँखों के सामने एक नवीन पृथ्वी थी, जिसे परमेश्वर की आज्ञा से पुनः प्राप्त और रूपांतरित किया गया था: स्फटिक जैसा स्वच्छ जल स्वतंत्र रूप से प्रवाहित हो रहा था, और वह भूमि शोक से मुक्त थी। पशु उल्लास के साथ विचरण कर रहे थे, और पक्षी नीले, निष्कलंक आकाश में उड़ान भर रहे थे। जैसे-जैसे वह दर्शन निकट आया, मरियम ने हजारों-हजारों बच्चों को देखा, हर आकार और हर वर्ण के, जो विभिन्न रंगों के हल्के और उज्ज्वल वस्त्र धारण किए हुए थे। उनके बीच युवक और वृद्ध भी थे, जो अपनी प्रसन्नता में एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। उन बच्चों की कोमल हँसी वातावरण में गूँज रही थी और वे उस स्वरूप को घेरे हुए थे जो श्वेत वस्त्रों में सुशोभित था, जिसकी उपस्थिति से ही एक पारलौकिक और दिव्य प्रकाश फूट रहा था। जीवन और एकता का एक विशाल घेरा बनाते हुए, वे शांति और प्रेम का साक्षात उदाहरण लग रहे थे। फिर, मानो उनकी दृष्टि को पहचानते हुए, उस मध्य के स्वरूप ने अपना सिर उठाया, सीधे मरियम की ओर देखा और मुस्कुरा दिए, एक ऐसी मुस्कान जो निश्चित रूप से उनके प्रिय

पुत्र, यीशु की कोमल और प्रेममयी मुस्कान थी।

वह दर्शन यद्यपि संक्षिप्त था, फिर भी उसने मरियम के हृदय को गहराई से छू लिया और उनके अपार शोक को ईश्वरीय शांति से भर दिया। उनकी व्यथित देह में थोड़ी स्फूर्ति आई और उन्होंने एक लंबे, शांत क्षण के लिए अपनी आँखें मूँद लीं, ताकि वे मुक्ति के उस वादे और भविष्य के उस आनंद को अपने भीतर आत्मसात कर सकें।

बाद में, जैसे-जैसे विदाई का समय निकट आया, दिन गंभीर होता गया। ढलती शाम के मद्धम प्रकाश में, यीशु, जो अब एक दृढ़ और सौम्य पुरुष थे, माता मरियम के सम्मुख खड़े हुए। उनकी आँखें, जो शांत संकल्प और करुणा से भरी थीं, माता की आँखों से मिलीं।

नरमी से, उन्होंने कहा: *"हमारे विश्राम का समय अब समाप्त हुआ। मुझे आपकी ममतामयी उपस्थिति से विदा लेकर मानव जाति के उद्धार का वह कार्य आरंभ करना होगा, जिसकी प्रेरणा सबसे पहले आपने ही दी थी। यद्यपि अब मैं इस मार्ग पर अकेला चलूँगा, फिर भी अपने दुखभोग और क्रूस पर अपनी मृत्यु की तैयारी में, मैं सदैव एक सहायक और संगिनी के रूप में आप पर भरोसा रखूँगा। मेरा आशीर्वाद, मेरा प्रेम और मेरा संरक्षण मेरे लौटने तक आपके साथ रहेगा।"*

इन गंभीर शब्दों के साथ, यीशु आगे बढ़े और अपनी माता को गले लगा लिया। माता मरियम, जो शोक और गर्व के भावों से ओत-प्रोत थीं, उनके सम्मुख घुटनों के बल झुक गईं। उनका स्वर कांप रहा था, फिर भी उसमें दृढ़ता थी, जब उन्होंने उस सन्नाटे को तोड़ा:

"हे मेरे प्रभु, आप वास्तव में मेरे पुत्र हैं। यदि मेरा जीवन आपके प्राण बचा सके, तो मैं इसे तुच्छ समझूँगी; मैं आपके लिए इसे बार-बार न्योछावर कर दूँगी। फिर भी, आपकी इच्छा की पूर्ति के लिए, मैं स्वेच्छा से अपने पुत्र को बलिदान के रूप में अर्पित करती हूँ। हर्ष और शोक से भरे हृदय के साथ, मैं आपसे यह विनती करती हूँ कि आप मुझे अपने कार्य और अपने क्रूस के भार में सहभागी होने की अनुमति प्रदान करें।"

उस भावुक क्षण में, मरियम ने उन्हें वह झोला भेंट किया जिसे उन्होंने बड़े प्रेम से तैयार किया था। किंतु यीशु ने, एक कोमल किंतु दृढ़ संकेत के साथ अपना सिर हिला दिया और उसे स्वीकार नहीं किया। उनका मार्ग उनके सामने था, और यद्यपि वे अपनी माता के सान्निध्य को बहुत प्रिय मानते

थे, वे जानते थे कि अब विदा लेने का समय आ गया है। एक अंतिम आलिंगन के बाद, यीशु ने उस घर से प्रस्थान किया। जैसे ही उनके पीछे द्वार धीरे से बंद हुआ, माता मरियम उससे लगकर खड़ी हो गईं; उनके मुख-मंडल पर हृदय विदारक शोक अंकित था और उनकी आँखों से अश्रुधारा मौन रूप से बह रही थी।

माता मरियम के कक्ष की उस शांत पवित्रता में, जहाँ दैवीय कृपा और मानवीय शोक का मिलन हुआ, एक माता का बलिदान अत्यंत दुख और अडिग विश्वास के साथ अर्पित किया गया।

अध्याय पच्चीस:

यीशु का बपतिस्मा

यर्दन नदी के झिलमिलाते तटों पर, भोर की पहली किरणें पानी की कोमल लहरों पर नृत्य कर रही थीं, जहाँ योहन बपतिस्ता बपतिस्मा का पवित्र अनुष्ठान संपन्न कर रहे थे। एक खुरदरा वस्त्र धारण किए हुए और एक प्रखर एवं अलौकिक अनुग्रह से ओत-प्रोत, योहन ने अपने हाथ उस शीतल और बहते हुए जल में डाले और बड़े ही आदर के साथ यीशु का अभिषेक करते हुए उन्हें पवित्र आशीष दी। जल की कल-कल ध्वनि प्रार्थनाओं के मधुर स्वर में घुल-मिल रही थी, और जैसे ही यह संस्कार अपने चरम पर पहुँचा, एक चमत्कार घटित हुआ।

उस नीरव और पावन क्षण में, स्वर्ग से प्रकाश की एक अत्यंत उज्ज्वल किरण नीचे उतरी। वह ज्योतिर्मय किरण एक कपोत का सुंदर रूप लेकर यीशु के शीश के ऊपर स्थिरता से ठहर गई, जो शांति और पवित्र आत्मा का दिव्य प्रतीक थी। उस कपोत की दिव्य उपस्थिति ने पूरे दृश्य को एक स्वर्गीय आभा से सराबोर कर दिया, जो परमेश्वर की विशेष कृपा और प्राचीन भविष्यवाणियों के पूर्ण होने का एक सुस्पष्ट संकेत था। वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने उस क्षण की दिव्यता को अनुभव किया होगा, क्योंकि स्वयं प्रकृति भी इस पवित्र घटना की गवाह बन रही थी।

वहाँ से मीलों दूर, नाज़रेथ की उन जानी-पहचानी और धूप से खिली गलियों में, माता मरियम अंतर्ध्यान थीं। ठीक उसी क्षण, उनकी अंतर्दृष्टि को उस दिव्य घटना के साक्षात दर्शन हुए, वह प्रकाश की किरण और अपने पुत्र के ऊपर उतरते हुए वह सुंदर कपोत। उनके हृदय में हर्ष का ऐसा संचार हुआ मानो कोई पुष्प खिल उठा हो। उनके मुख-मंडल पर एक विस्तृत मुस्कान फैल गई, जिसने उनके चेहरे की हर रेखा को मातृत्व के गौरव से आलोकित कर दिया। उनके अधरों से संतोष की एक गहरी आह निकली, मानो परमेश्वर की उपस्थिति के आश्वासन ने संसार का सारा भार हर लिया हो। धूल भरे उस मार्ग पर चलते हुए उनके कदम हल्के और उमंग से भर गए; उनकी भुजाओं में गाँव के झरने से भरा जल का वह पात्र था, जो जीवन के

अनिवार्य अनुग्रह का एक साधारण किंतु अनमोल प्रतीक था।

उस क्षण में, नाज़रेथ का वह संसार मानो पूरी तरह बदल गया: यर्दन नदी के तट पर उस बपतिस्मा की पावन सुंदरता और एक माता का वह कोमल एवं उल्लासपूर्ण प्रत्युत्तर, दोनों एक ही शाश्वत क्षण में एक-दूसरे में समा गए। माता मरियम की वह अंतर्दृष्टि, जो आशा और ईश्वरीय पुष्टि से परिपूर्ण थी, प्रेम और विश्वास की उस सरल एवं अनकही भाषा के साथ प्रतिध्वनित हो रही थी। ऐसा जान पड़ता था मानो उस पल स्वयं स्वर्ग ने उन्हें देखकर अपनी मुस्कान बिखेरी हो और उनकी इस यात्रा को आशीष दी हो, उन्हें यह आश्वासन देते हुए कि परमेश्वर की ज्योति सदैव उनका और उनके पुत्र का मार्गदर्शन करेगी।

अध्याय छब्बीस
यीशु का प्रलोभन

तपती हुई धूप के नीचे, उस अंतहीन और निर्जन मरुस्थल में, यीशु अकेले चल रहे थे; सुनहरी रेत के बीच उनकी आकृति अत्यंत स्पष्ट और प्रभावशाली लग रही थी। उनका प्रत्येक कदम एक शांत संकल्प के साथ धरती पर पड़ता था, मानो उनके कंधों पर उनके महान उद्देश्य का संपूर्ण भार टिका हो। वह मरुस्थल चारों दिशाओं में अनंत तक फैला हुआ था, जिसकी विशाल और अडिग शांति उन्हें किसी गंभीर आवरण की भाँति घेरे हुए थी। केवल उनके पैरों के नीचे खिसकते रेत के कणों की हल्की ध्वनि और हवा की धीमी आह ही उस सन्नाटे को भंग कर रही थी।

प्रखर सूर्य की किरणें उनके मुख-मंडल पर एक तीव्र आभा बिखेर रही थीं, जिससे उनकी आँखों की वह शांत शक्ति और भी उभर कर आ रही थी, एक ऐसी अग्नि जो पीड़ा की नहीं, बल्कि उनके अटूट संकल्प की थी। यद्यपि भूख उनके शरीर को व्याकुल कर रही थी, फिर भी उनकी आत्मा अडिग रही। यहाँ, जंगल के उस एकांत में, जहाँ धरती और आकाश एक कच्चे और अखंड विस्तार में मिलते थे, उन्होंने आने वाली परीक्षा के लिए स्वयं को तैयार किया; और उस मौन तथा संघर्ष को एक ऐसे विश्वास के साथ अपनाया जो कभी डगमगा नहीं सकता था।

इसी बीच, माता मरियम के प्रार्थना-कक्ष की शीतल शरण में, जो एक छोटा और साधारण कमरा था और लोबान की सुगंध तथा प्रार्थना के मधुर स्वर से भरा रहता था, उन्होंने उसी श्रद्धा और गंभीरता के साथ प्रवेश किया जो सदैव उनकी भक्ति की पहचान रही थी। जैसे ही उन्होंने उस पुराने पत्थर के फर्श पर कदम रखा, उनकी अंतर्दृष्टि ने अपने पुत्र की दृष्टि से मिलन किया; और वे दोनों प्रार्थना की मुद्रा में एक ऐसी सामंजस्यपूर्ण एकता के साथ लीन हो गए, मानो किसी एक ही दिव्य आत्मा द्वारा निर्देशित हों। बाहर, मरुस्थल के आकाश ने समय के बीतने का साक्षी दिया: सूर्य पैंतीस बार उगा और अस्त हुआ, और हर चक्र उनके इस साझा जागरण का एक मौन प्रमाण था।

फिर, उनके उपवास के उस शांत और अनुशासित वातावरण के

बिल्कुल विपरीत, आकाश में एक अशुभ उपस्थिति के कारण अंधेरा छा गया। उस विशाल विस्तार के ऊपर से, लूसिफ़ेर एक मनुष्य का छद्म रूप धरकर मसीह के सम्मुख प्रकट हुआ, एक अंधकारमय और मोहक स्वरूप, जो अपने साथ संसार के सुख-विलास के झूठे वादे लेकर आया था।

एक उपहासपूर्ण मुस्कान के साथ, लूसिफ़ेर ने चिढ़ाते हुए कहा, "*यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो आज्ञा दे कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।*" उसके स्वर में तिरस्कार भरा था, जब उसने भोजन और जल का लोभ देते हुए यीशु को अपनी आध्यात्मिक भूख त्यागने के लिए उकसाया।

यीशु ने, अपने संकल्प में अडिग रहते हुए, शांत भाव से उत्तर दिया, "*मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित न रहेगा...*" उनके शब्द अभी पूर्ण भी नहीं हुए थे कि माता मरियम के प्रार्थना-कक्ष की नीरवता में, उनके कोमल स्वर ने उस विचार को पूरी श्रद्धा के साथ पूर्ण किया, "*... बल्कि हर उस शब्द से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।*" उस क्षण में, माता और पुत्र दोनों ने दिव्य सत्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया, और उनके संयुक्त स्वरों ने उस अंधकार को पीछे धकेल दिया।

जैसे-जैसे समय बीता, मरियम को एक शक्तिशाली दर्शन प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने अपने पुत्र और अंधकार की शक्तियों के बीच होने वाले अगले युद्ध की एक झलक देखी। उस दर्शन में उन्होंने देखा कि यीशु ने स्वयं को लूसिफ़ेर और उसके दुष्टात्माओं द्वारा यरूशलेम ले जाने की अनुमति दे दी है। वहाँ, उन्होंने उन्हें मंदिर के सबसे ऊँचे शिखर पर खड़ा कर दिया, मानो एक महान आध्यात्मिक टकराव की पृष्ठभूमि तैयार हो रही हो।

उस उथल-पुथल के बीच, यीशु और मरियम के स्वर एक साथ गूँज उठे: "*हे पिता, मैं उन आत्माओं के लिए जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, शत्रु का सामना कर रहा हूँ ताकि उसकी शक्ति को नष्ट कर सकूँ और उसके अहंकार को धूल में मिला सकूँ।*" उनके ये शब्द, जो शक्ति और प्रेम से ओत-प्रोत थे, एक पवित्र विजय-गीत के समान गूँजने लगे, जो उस युद्ध की घोषणा कर रहे थे जो अब आरम्भ होने वाला था।

मरुस्थल की उस प्रखर धूप में, जितनी शीघ्रता से यीशु को मंदिर ले जाया गया था, उतनी ही तेज़ी से लूसिफ़ेर और उसके दुष्टात्मा उन्हें एक ऊँचे पर्वत की चोटी पर ले आए। वह संघर्ष प्रत्यक्ष था, अंधकार की

शक्तियाँ अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए छटपटा रही थीं, और उसी कोलाहल के बीच लूसिफ़ेर फुसफुसाया, "*यदि तू झुककर मेरी आराधना करे, तो मैं ये सारे राज्य तुझे दे दूँगा।*" उस क्षण, माता मरियम का स्वर उठा, जो अत्यंत स्पष्ट और अडिग था: "*तुम वह नहीं दे सकते जिसे केवल परमेश्वर ने रचा है।*" उनकी इस घोषणा ने लूसिफ़ेर को चौंका दिया और उन दुष्ट शक्तियों के शोर को चीर दिया।

तब पूर्ण अधिकार और स्पष्टता के साथ, यीशु ने घोषणा की, "*दूर हो जा, शैतान! क्योंकि लिखा है...*" और तुरंत, एक ही स्वर में, मरियम और यीशु ने उद्घोष किया, "*तू प्रभु अपने परमेश्वर को दंडवत करना, और केवल उसी की सेवा करना!*" उनके ये स्वर संकल्प और महान विजय से परिपूर्ण थे।

उस क्षण में, उनके विश्वास की शक्ति अपराजेय सिद्ध हुई। लूसिफ़ेर और उसके दुष्टात्मा नरक की सबसे गहरी खाई में जा गिरे; उनके अंधकारमय स्वरूप उन कठोर गुफाओं में कुचलकर दफन हो गए, जहाँ वे तीन लंबे और मौन दिनों तक जड़वत पड़े रहे।

जैसे ही युद्ध का कोलाहल शांत हुआ, वह दृश्य माता मरियम के प्रार्थना-कक्ष के गर्म और शांतिपूर्ण प्रकाश में विलीन हो गया। वहाँ, विजय के पश्चात की उस नीरवता में, माता मरियम ने स्तुति और महिमा के गीतों की रचना आरम्भ की; उनका लेखनी कागज़ पर तेजी से चलने लगी, मानो वे अंधकार की शक्तियों पर अपने पुत्र की इस महान विजय को सदैव के लिए अंकित कर रही हों। वहीं निकट ही एक अन्य पावन स्थान पर, यीशु स्वर्गदूतों की सेना के साथ सम्मिलित होकर विजय के गीत गाने लगे, आशा और मुक्ति की वे मधुर तानें स्वर्ग की ओर उठने लगीं, जो उस शाश्वत वादे को प्रतिध्वनित कर रही थीं जिसे केवल ईश्वर ही प्रदान कर सकते हैं।

इस प्रकार, मरुस्थल के उस कठोर एकांत और प्रार्थना की पवित्र आत्मीयता के बीच, प्रकाश और अंधकार का यह युद्ध लड़ा गया और जीता गया। अपने हृदयों की एकता और अपने विश्वास की शक्ति के द्वारा, मरियम

और यीशु ने यह प्रमाणित कर दिया कि परमेश्वर के उस अक्षय प्रेम के विरुद्ध कोई भी शक्ति विजयी नहीं हो सकती, एक ऐसा सत्य जो अनंत काल तक गूँजता रहेगा।

अध्याय सत्ताईस

मसीह के शिष्य

शिष्यों के एकत्र होने का आरम्भ यर्दन नदी के तट पर एक उज्ज्वल भोर में हुआ, जहाँ यीशु वापस लौटे और योहन बपतिस्ता से उनकी भेंट हुई। जल के किनारे खड़े होकर, योहन विश्वासी आत्माओं की भीड़ को बपतिस्मा देने में मग्न थे, कि तभी उनकी दृष्टि ऊपर उठी और उन्होंने दूर से यीशु को अपनी ओर आते देखा।

अत्यंत श्रद्धा और भक्ति के साथ योहन ने उद्घोष किया, *"देखो, यह परमेश्वर का मेमना है; देखो, यह वह है जो संसार के पाप हर लेता है।"* जैसे ही यीशु समीप आए और उनके पास से होकर गुज़रे, पुरुषों का एक छोटा समूह, जो उनके व्यक्तित्व के आकर्षण से खिंचा चला आ रहा था, उनके पीछे चलने लगा; वे अपने नए गुरु के पीछे और साथ-साथ एक शांत और दृढ़ पंक्ति बनाकर बढ़ रहे थे।

इसकी शुरुआत योहन और उनके भाई अन्द्रियास से हुई, जिसके बाद पतरस, फिलिप्पुस और फिर नतनएल तथा अन्य साथी जुड़ते गए। ये प्रारंभिक अनुयायी, जिनके हृदय एक गहरी तड़प से भरे थे, प्रभु से उनकी माता से मिलने के सौभाग्य की विनती करने लगे। अपने पावन हृदय में, धन्य माता पहले से ही इस नियत मिलन से अवगत थीं; अतः उन्होंने आने वाले अतिथियों के लिए अपने घर को संवारना आरम्भ कर दिया, स्थानों को व्यवस्थित किया और अतिथि-सत्कार के लिए वह सब जुटाया जो उनके पास उपलब्ध था।

अपने उस साधारण घर के भीतर, मरियम तैयारियों में व्यस्त थीं। उन्होंने बड़े प्रेम से भोजन तैयार किया और उन अतिथियों के लिए सादी खाटें बिछाईं जो शीघ्र ही वहाँ पहुँचने वाले थे। जब अंततः वह समूह घर के निकट आया, तब मरियम ने एक कोमल मुस्कान और शांत गरिमा के साथ द्वार खोला। जैसे ही वे पुरुष भीतर आए, उनके स्वर श्रद्धा के कारण धीमे थे; मरियम ने यीशु के सम्मुख घुटने टेके और उनके हाथ को चूमा, जो उनकी अगाध विनम्रता और प्रेम का प्रतीक था। बदले में, यीशु ने उनका हाथ थामा और उन्हें उठने में सहायता की, मानो वे उन्हें स्मरण करा रहे हों कि अपनी इस सेवा में भी वे उनकी निरंतर संगिनी और शक्ति थीं। क्योंकि

जब वह विनम्र और धन्य महारानी अपने पुत्र की सेवा करती थीं, तब वे अपनी परम श्रद्धा प्रदर्शित करती थीं; जिससे वहाँ एकत्रित प्रेरितों को उनके गुरु और मुक्तिदाता की महिमा का बोध होता था, और वे उन्हें मसीही विश्वास के महान सिद्धांतों की शिक्षा देती थीं।

अध्याय अठ्ठाइस
मसीह के सार्वजनिक चमत्कार

सार्वजनिक चमत्कारों का यह मार्ग, जो पूर्व-निर्धारित था, हमारे प्रिय मसीह के भौतिक अंत का कारण बनने वाला था; क्योंकि इन्हीं घटनाओं ने उन लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा जो आगे चलकर उनकी मृत्यु की मांग करेंगे।

काना में विवाह एक आनंदमय अवसर था, प्रेम और एकता का उत्सव, जिसमें परिवार, मित्र और गाँव के लोग शामिल थे। मेहमानों में यीशु, उनकी माता मरियम और उनके शिष्य शामिल थे।

उत्सव के दौरान एक ऐसी समस्या उत्पन्न हुई जिससे मेज़बानों को लज्जित होना पड़ सकता था, दाखरस (शराब) समाप्त हो गया था। इस विकट परिस्थिति को भांपते हुए, मरियम ने यीशु के समीप जाकर अत्यंत शांत किंतु गंभीर स्वर में विनती की, "*उनके पास और दाखरस नहीं रहा।*" यीशु ने उत्तर दिया, "*हे नारी, मेरा इससे क्या संबंध? मेरा समय अभी नहीं आया है।*" फिर भी, मरियम ने अपने पुत्र पर अटूट विश्वास रखते हुए सेवकों की ओर मुड़कर उन्हें निर्देश दिया, "*वे जो कुछ भी तुमसे कहें, वही करना।*"

तब यीशु ने सेवकों को पत्थर के छह मटकों को जल से भरने का आदेश दिया, जिनमें से प्रत्येक में लगभग अस्सी से एक सौ बीस लीटर जल समा सकता था। जब उन्होंने ऐसा कर लिया, तब उन्होंने उनसे कहा, "*अब इसे निकालो और भोज के प्रधान के पास ले जाओ।*" सेवकों ने आज्ञा का पालन किया, और जैसे ही भोज के प्रधान ने उस जल को चखा, वह चकित रह गया, क्योंकि वह जल उत्तम दाखरस में बदल चुका था।

उस चमत्कार से अनजान जो अभी-अभी घटित हुआ था, भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाया और कहा, "*हर कोई पहले बढ़िया दाखरस परोसता है और जब मेहमान अधिक पी लेते हैं, तब घटिया, परंतु आपने तो उत्तम दाखरस अब तक बचा कर रखा है।*"

काना के विवाह का यह प्रसंग मसीह के असीम अनुग्रह और उनके प्रावधान का प्रमाण है, जो यह दर्शाता है कि वे अपनी दिव्य उपस्थिति से साधारण को असाधारण में रूपांतरित कर देते हैं।

एक दिन, जब यीशु एक नगर से यात्रा कर रहे थे, तो उनके जाते समय एक विशाल जनसमूह उनके पीछे हो लिया। उन्होंने उन्हें बीमारों को चंगा करते हुए देखा था और उनके सत्य तथा अनुग्रह से भरे वचनों को सुना था, और वे और अधिक सुनना चाहते थे। उनकी शिक्षाओं के प्रति उस तड़प ने उन्हें गलील के सागर के निकट एक एकांत स्थान पर पहुँचा दिया। जैसे ही सूर्य ढलने लगा, पाँच हज़ार से अधिक पुरुषों, और उनके साथ स्त्रियों तथा बच्चों ने यह अनुभव किया कि उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है।

यह देखकर, करुणा से भरे यीशु ने अपने प्रेरित फिलिप्पुस की ओर मुड़कर पूछा, "*हम इन लोगों के लिए रोटी कहाँ से मोल ले सकते हैं?*" फिलिप्पुस ने उस विशाल भीड़ को देखा और व्याकुल होकर उत्तर दिया, "*आठ महीने की मजदूरी भी इतनी पर्याप्त न होगी कि हर व्यक्ति को थोड़ा सा भी अंश मिल सके।*" तब एक अन्य प्रेरित, अन्द्रियास ने संकोच के साथ कहा, "*यहाँ एक बालक है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो छोटी मछलियाँ हैं, परंतु इतने सारे लोगों के लिए वे क्या हैं?*"

यीशु मुस्कुराए और बोले, "*लोगों को बैठा दो।*" प्रेरितों ने उस घास वाली पहाड़ी पर भीड़ को पंक्तियों में बैठा दिया। तब यीशु ने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और धन्यवाद दिया। उन्होंने रोटियों और मछलियों को तोड़ा और बाँटने के लिए अपने प्रेरितों को सौंप दिया।

जैसे-जैसे भोजन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाया जाने लगा, एक चमत्कार घटित हुआ, वे रोटियाँ और मछलियाँ कभी समाप्त नहीं हुईं। चाहे कितने ही हाथ आगे क्यों न बढ़े हों, देने के लिए सदैव पर्याप्त भोजन शेष था। लोगों ने पेट भरकर भोजन किया। जब सब खा चुके, तब यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा, "*बचे हुए टुकड़ों को बटोर लो, जिससे कि कुछ भी व्यर्थ न जाए।*" उन्होंने बची हुई रोटियों और मछलियों से भरी बारह टोकरियाँ एकत्रित कीं।

वह जनसमूह विस्मित था और आपस में फुसफुसाने लगा, "*निश्चित ही यह वही नबी है जिसके आने की प्रतिज्ञा की गई थी!*"

यह चमत्कार केवल भूखों को भोजन कराने से कहीं बढ़कर था; यह

यीशु की प्रदान करने, बढ़ाने और पोषण देने की शक्ति का एक संकेत था। उन्होंने एक तुच्छ सी भेंट ली और उसे एक प्रचुर भोज में बदल दिया, ठीक वैसे ही जैसे वे बाद में स्वयं को उन सभी के लिए 'जीवन की रोटी' के रूप में अर्पित करने वाले थे जो उनमें विश्वास रखते हैं। पाँच हज़ार लोगों को भोजन कराने की इस घटना ने ईश्वर की उस असीम उदारता को दर्शाया, जो शरीर और आत्मा दोनों को तृप्त करते हैं।

दोपहर की धूप में बेथानी का नगर शांत था, वहाँ के लोग इस बात से अनभिज्ञ थे कि एक महान चमत्कार घटित होने वाला है। मरियम और मारथा का भाई लाज़रस चार दिनों से मृत था, और उसका शव एक भारी पत्थर से बंद एक कब्र में रखा गया था। उन बहनों ने यीशु को संदेश भेजा था, इस आशा में कि वे उसे बचाने के लिए समय पर आ जाएँगे, परंतु यीशु ने अपनी यात्रा आरम्भ करने से पहले दो दिन और प्रतीक्षा की। उनके प्रेरित इस विलंब से व्याकुल थे। उन्होंने पूछा, *"हे प्रभु, यदि वह बीमार है, तो क्या हमें उसके पास नहीं जाना चाहिए?"*

यीशु ने उत्तर दिया, *"यह बीमारी मृत्यु पर समाप्त नहीं होगी, बल्कि इससे परमेश्वर की महिमा होगी। लाज़रस सो गया है, और मुझे उसे जगाना होगा।"*

फिर भी बात न समझते हुए प्रेरित हिचकिचा रहे थे, तब यीशु ने स्पष्ट शब्दों में कहा, *"लाज़रस मर चुका है। और तुम्हारे कारण मैं प्रसन्न हूँ कि मैं वहाँ नहीं था, जिससे कि तुम विश्वास कर सको। आओ, हम उसके पास चलें।"*

जब वे बेथानी पहुँचे, तब पूरा नगर शोक में डूबा था। मित्र और संबंधी मरियम और मारथा को सांत्वना देने के लिए एकत्रित हुए थे, जो अत्यंत शोक-संतप्त थीं। जब मारथा ने सुना कि यीशु आ गए हैं, तो वह दौड़कर उनसे मिलने गई, और उसकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी।

"हे प्रभु, यदि आप यहाँ होते, तो मेरा भाई न मरता। परंतु अब भी मैं जानती हूँ कि आप जो कुछ भी परमेश्वर से मांगेंगे, वे आपको प्रदान करेंगे।"

यीशु ने उसकी ओर अगाध करुणा से देखा। *"तुम्हारा भाई पुनः जी उठेगा।"*

मारथा ने सोचा कि उनका तात्पर्य समय के अंत में होने वाले पुनरुत्थान

से है, और उसने सिर हिलाकर कहा। *"मैं जानती हूँ कि वह पुनरुत्थान के दिन जी उठेगा।"*

तब यीशु ने वे शब्द कहे जो युगों-युगों तक प्रतिध्वनित होने वाले थे: *"पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो मुझमें विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तो भी जीवित रहेगा। क्या तुम इस पर विश्वास करती हो?"*

अपने दुख के बीच भी मारथा ने घोषणा की, *"हाँ, प्रभु, मेरा विश्वास है कि आप ही मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र।"*

शीघ्र ही उसकी बहन मरियम भी यीशु के निकट आई और उनके चरणों में गिर पड़ी। उसका स्वर शोक से कांप रहा था। *"हे प्रभु, यदि आप यहाँ होते, तो मेरा भाई न मरता।"*

जब यीशु ने मरियम और उसके आसपास के लोगों का विलाप देखा, तो वे रो पड़े।

वे लाज़रस की कब्र की ओर बढ़े, जहाँ उस क्षण की गंभीरता वातावरण में स्पष्ट रूप से व्याप्त थी। उन्होंने आज्ञा दी, *"पत्थर को हटा दो।"*

मारथा हिचकिचाई। *"हे प्रभु, उसे मरे हुए चार दिन हो चुके हैं। अब तो उसमें से दुर्गंध आती होगी।"* यीशु ने कोमलता से उसे स्मरण कराया, *"क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यदि तुम विश्वास करोगी, तो परमेश्वर की महिमा देखोगी?"*

उनके वचन पर, पत्थर को लुढ़का कर हटा दिया गया। जनसमूह शांत खड़ा था, और उत्सुकता के कारण उनके हृदय जोर-से धड़क रहे थे। यीशु ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं।

"हे पिता, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने मेरी सुन ली है। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ ताकि यहाँ खड़े लोग विश्वास कर सकें कि आपने ही मुझे भेजा है।"

तब, ईश्वरीय अधिकार से भरे स्वर में, उन्होंने पुकारा:
"लाज़रस, बाहर आ जा!"

भीड़ में सन्नाटा छा गया। तभी, कब्र के उस अंधकार से लाज़रस बाहर निकला, जो अभी भी कफन के वस्त्रों में लिपटा हुआ था, किंतु जीवित था।

विस्मय के स्वर पूरे जनसमूह में गूँज उठे। कुछ लोग घुटनों के बल गिर पड़े, तो कुछ श्रद्धा से फुसफुसाने लगे।

यीशु ने उनकी ओर मुड़कर कहा, "*इसके बंधन खोल दो और इसे जाने दो।*"

मरियम और मारथा दौड़कर आगे आईं और अश्रुपूर्ण हर्ष के साथ अपने भाई को गले लगा लिया। आश्चर्य की वे फुसफुसाहटें अब स्तुति के जयकारों में बदल गईं, क्योंकि उन्होंने एक ऐसा चमत्कार देखा था जिसकी कोई तुलना नहीं थी। किंतु सभी आनंदित नहीं थे। जो कुछ घटित हुआ था, उसका समाचार शीघ्र ही फरीसियों और धर्मगुरुओं तक पहुँच गया। उनका विस्मय अब भय में बदल गया, और उसी क्षण से वे यीशु के प्राण लेने का षडयंत्र रचने लगे, इस बात से अनभिज्ञ कि स्वयं मृत्यु पर भी उन्हीं का अधिकार था।

अध्याय उनतीस

विस्तारित होती सेवा

जैसे-जैसे यीशु अपनी शिक्षाएँ देते रहे, जनसमूह बड़ा होता गया। बहुत से लोग न केवल उनके चमत्कारों के कारण, बल्कि उनके वचनों में निहित सत्य और अनुग्रह के कारण उनके पीछे हो लिए। उनमें ऐसी स्त्रियाँ भी थीं जिन्हें बीमारियों से चंगा किया गया था और दुष्टात्माओं के बंधन से मुक्त किया गया था, वे यीशु और उनकी माता दोनों के प्रति अत्यंत श्रद्धा भाव से खड़ी रहती थीं।

एक संध्या, मरियम को नगर के कुएँ से भारी पात्र ले जाते हुए देखा गया, जिसमें पतरस और योहन उनकी सहायता कर रहे थे। बाद में, जब वे एक साधारण भोजन साझा कर रहे थे, तब मरियम बड़े कोमल स्वर में बोलीं और उनके शब्द बुद्धिमानी से परिपूर्ण थे। प्रेरित बड़े ध्यान से उनकी बातें सुन रहे थे और उनके मार्गदर्शन को अनमोल मान रहे थे। उन सभी में से केवल एक को छोड़कर, बाकी सब हमारी महारानी और उनके पुत्र से परामर्श चाहते थे।

हाँ, उनमें से एक संघर्ष कर रहा था। यद्यपि यहूदा यीशु के पीछे चलता था, फिर भी उसका अहंकार ईश्वरीय अनुग्रह का विरोध करता था। मरियम और उनके पुत्र द्वारा दिखाई गई विशेष दयालुता के बावजूद, वह कुड़कुड़ाता रहता था और स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करता था।

एक रात्रि, मरियम यहूदा के साथ टहल रही थीं, उन्होंने बड़े प्रेम से उसके हाथ अपने हाथों में लिए और उन पर एक ममतामयी चुंबन अंकित किया। उनका स्वर अत्यंत कोमल और प्रेम से भरा था। "*मेरे प्रिय, अपने इरादों के बारे में गंभीरता से विचार करो। तुम विचलित होगे, परंतु यदि तुम स्वीकार करने को तत्पर हो, तो मेरा पुत्र सदैव तुम्हें दया प्रदान करेगा।*"

किंतु यहूदा का हृदय कठोर हो गया। बाद में, हताशा में उसने यीशु के सम्मुख घुटने टेककर उनसे आश्वासन चाहा। यीशु ने उसकी ओर शोकपूर्ण समझ के साथ देखा। "*क्या तुम वास्तव में जानते हो कि तुम क्या खोज रहे हो? उन सम्मानों के पीछे मत भागो जो तुम्हारे पतन का*

कारण बन सकते हैं।"

यहूदा ने हठ किया, "स्वामी, मैं आपकी सेवा करने की इच्छा रखता हूँ, क्योंकि मैं दूसरों की तुलना में अधिक उपयुक्त हूँ।"

और इसी के साथ उसका भाग्य नियत हो गया, क्योंकि जहाँ बहुत से लोगों ने ज्योति को अपनाया, वहीं उसका हृदय विश्वासघात की ओर मुड़ गया।

अध्याय तीस

रूपान्तरण

अपने अपने दुःखभोग से पूर्व, यीशु पतरस, याकूब और योहन को एक ऊँचे पर्वत पर ले गए। जैसे ही वे शिखर पर पहुँचे, वायु स्थिर हो गई और उनकी आँखों के सामने दो महान विभूतियाँ प्रकट हुईं, मूसा और एलिय्याह।

तभी, इससे भी अधिक असाधारण घटना घटित हुई। स्वयं मरियम को स्वर्ग के आह्वान पर स्वर्गदूतों द्वारा उस पर्वत शिखर पर लाया गया।

एक विस्मयकारी दर्शन में, मरियम ने अपने पुत्र को अपनी आँखों के सामने रूपांतरित होते देखा। उनका मुख सूर्य के समान चमकने लगा, उनके वस्त्र उज्ज्वल श्वेत हो गए, और उनके संपूर्ण अस्तित्व से ईश्वरीय महिमा प्रस्फुटित होने लगी। यह उनके वास्तविक स्वरूप की एक झलक थी, एक ऐसा प्रकटीकरण कि वे न केवल मनुष्य थे बल्कि स्वयं परमेश्वर थे।

वहाँ उपस्थित प्रेरित भय और श्रद्धा के कारण भूमि पर गिर पड़े, क्योंकि वे अपने सम्मुख उस प्रखर आभा को देख पाने में असमर्थ थे। और जैसे ही वह क्षण ओझल हुआ, स्वर्ग से एक वाणी सुनाई दी:

"यह मेरा प्रिय पुत्र है। इसकी सुनो।"

मरियम यह सब देख रही थीं, और उनका हृदय हर्ष और शोक दोनों से भर उठा। वे जानती थीं कि उनकी ईश्वरीय महिमा की यह झलक एक पूर्वाभास थी, क्योंकि अपनी अंतिम विजय से पहले, उन्हें पीड़ा और कष्टों के मार्ग पर चलना था।

समय निकट आ रहा था। शांत शिक्षाओं और छोटे चमत्कारों के दिन अब ढल रहे थे। शीघ्र ही, संपूर्ण संसार उस महानतम बलिदान का साक्षी बनने वाला था।

अध्याय एकतीस

अंतिम भोज

गुरुवार की उस भोर, सूर्योदय की कोमल आभा नाज़रेथ के उनके साधारण निवास के भीतर छन कर आ रही थी; यह 'अंतिम भोज' का दिन था। यीशु और मरियम अकेले विराजमान थे, एक ऐसी गंभीर आत्मीयता में लिपटे हुए जो हर्षपूर्ण भी थी और हृदय विदारक भी। जैसे ही मरियम भावविभोर होकर अपने पुत्र के सम्मुख घुटनों के बल झुकने लगीं, यीशु ने उन्हें कोमलता से रोक दिया और हाथ थामकर खड़ा किया। उन्होंने अत्यंत मधुर और सौम्य स्वर में कहा, "*माता, मेरे पिता द्वारा नियत की गई घड़ी आ पहुँची है। उन्होंने मुझे दुःख सहने के लिए भेजा है, ताकि मैं आदम की खोई हुई संतानों का उद्धार कर सकूँ। अब, आपको स्वेच्छा से मुझे अर्पित करना होगा, क्योंकि मैं आपसे यही मांगता हूँ। मुझे अपने दुःखभोग और मृत्यु में प्रवेश करने के लिए अपना आशीष प्रदान करें।*"

माता मरियम का शोक स्पष्ट था; उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी और उनकी देह की भंगिमा उस गहरी पीड़ा को दर्शा रही थी मानो वे अपने पुत्र के चरणों में ढह जाना चाहती हों। फिर भी, प्रभु के दृढ़ और करुणामयी सहारे ने उन्हें थामे रखा। शोक और प्रेम से कांपते हुए स्वर में उन्होंने उत्तर दिया, "*हे मेरे प्रभु, मेरे ईश्वर और समस्त सृष्टि के सृजनहार, यद्यपि आप मेरी कोख के पुत्र हैं, फिर भी मैं आपकी तुच्छ दासी हूँ। मेरा सबसे बड़ा दुख यह है कि मैं आपके साथ मर नहीं सकती। मेरी एकमात्र सांत्वना यही है कि आपकी पीड़ा मानव जाति के लिए मुक्ति लेकर आएगी। मैं आपसे बस एक ही विनती करती हूँ, मुझे अपनी शिष्या और संगिनी बने रहने दें, ताकि मैं आपके दुःखभोग और क्रूस के कष्टों में सहभागी हो सकूँ, जिससे कि सनातन पिता आपके बलिदान के साथ-साथ आपकी माता के इस त्याग को भी स्वीकार करें।*"

अतः, उनकी इस विनती और हमारे प्रभु की कृपालु सहमति से, स्वर्ग की महारानी मानव जाति के उद्धार में 'सह-उद्धारिका' बनीं। और उन पवित्र शब्दों के साथ, वह क्षण सदैव के लिए अंकित हो गया। उसी संध्या यरूशलेम के एक कक्ष में, यीशु अपने प्रेरितों के मध्य विराजमान हुए। उन्होंने अपने सम्मुख एक पात्र और एक थाली रखी। फिर उन्होंने

अखमीरी रोटी और दाखरस (शराब) मंगवाया, और बड़े ही गंभीर आदर के साथ उस पात्र में दाखरस (शराब) डाल दिया।

मसीह ने अपने पूजनीय हाथों में रोटी और वह पात्र लिया। उन्होंने अपने अंतर्मन में सनातन पिता से अनुमति और सहभागिता की प्रार्थना की, ताकि वे स्वयं अपने शरीर और रक्त के रूप में उन दोनों में उपस्थित हो सकें।

जैसे-जैसे यह पवित्र संस्कार आगे बढ़ा, हनोक और एलियाह की आत्माएँ मसीह के बाईं ओर प्रकट हुईं, जिनकी उपस्थिति उस क्षण के दिव्य महत्व का प्रमाण थी। यीशु के पीछे स्वर्गदूत गाब्रिएल खड़े थे, जिनका स्वरूप स्वर्गीय प्रकाश से देदीप्यमान था। अपने पुत्र के दाईं ओर माता मरियम उपस्थित थीं, जो अपने स्वर्गदूतों से घिरी हुई थीं; उनके मुख-मंडल पर शोक और अगाध बोध का संगम स्पष्ट था।

यीशु ने अपनी भुजाएँ उठाईं और रोटी तथा उस पात्र को ऊँचा किया, उनकी आँखें दिव्य भव्यता के भाव के साथ स्वर्ग की ओर लगी थीं। एक तेजस्वी प्रकाश ने रोटी और उस पात्र को चारों ओर से घेर लिया, और उनकी आशीष की शक्ति से वे रूपांतरित हो गए। उन्होंने उन उपहारों को नीचे रखा और अत्यंत श्रद्धा के साथ घुटने टेक दिए, और परमेश्वर के इस अनुग्रह के लिए उनका धन्यवाद किया।

माता मरियम और अन्य धर्मपिताओं ने यह जान लिया कि उस रोटी के भीतर उनका शरीर था, और उस दाखरस (शराब) के भीतर उनका रक्त था। उनकी आत्मा का उनके शरीर और रक्त के साथ मिलन होने के कारण, जीवित मसीह वहाँ वास्तव में उपस्थित थे। उस क्षण में, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक हो गए थे; और उस 'परमप्रसाद' में प्रभु की पूर्ण मानवता के साथ-साथ ईश्वरत्व के तीनों दिव्य व्यक्ति विराजमान थे।

यीशु ने रोटी का एक टुकड़ा तोड़ा और उसे ग्रहण किया, फिर उस पात्र में से पान किया। उन्होंने एक और टुकड़ा तोड़ा और उसे गाब्रिएल को सौंपा, जिन्होंने उसे धन्य माता तक पहुँचाया।

मरियम ने इसे अत्यंत श्रद्धा के साथ ग्रहण किया, और वह उनके हृदय के ऊपर उनके वक्ष में स्थापित हो गया, जहाँ वह पुनरुत्थान तक बना रहना था। इसके पश्चात यीशु ने हनोक और एलियाह को परमप्रसाद दिया, जिन्होंने ओझल होने से पूर्व उनके सम्मुख झुककर वंदना की;

उनके चेहरे विस्मय और कृतज्ञता से भरे थे।

जैसे ही प्रेरितों और अन्य चेलों को परमप्रसाद दिया गया, यीशु ने वे पवित्र शब्द कहे:

"लो और खाओ; यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए दिया गया है।मेरी स्मृति में ऐसा करो।"

फिर पात्र लेकर उन्होंने कहा,

"तुम सब इसमें से पियो; क्योंकि यह मेरा रक्त है, नवीन और अनंत वाचा का रक्त, जो पापों की क्षमा के लिए बहुतों के निमित्त बहाया जाता है।"

एक-एक करके, सभी प्रेरितों और चेलों ने 'परमप्रसाद' ग्रहण किया, और उनके हृदय श्रद्धा तथा विस्मय से भर गए। उस क्षण की गंभीरता उन पर छा गई जब उन्होंने नवीन वाचा के इस प्रथम संस्कार में सहभागिता की, यद्यपि वे अभी तक इसके पूर्ण महत्व को समझ पाने में असमर्थ थे।

जैसे ही वह संध्या समाप्त हुई, यीशु और उनके अनुयायी उठे और गेटसेमनी के बाग की ओर अपनी गंभीर पदयात्रा आरम्भ की, जहाँ शोक की वह रात्रि अब आरम्भ होने वाली थी।

उसी समय, यहूदा ने यीशु और प्रेरितों से विदा ली और अनजाने में उसका मिलन लूसिफ़ेर से हुआ। लूसिफ़ेर ने यहूदा के किसी परिचित व्यक्ति का छद्म रूप धर रखा था, और उसके स्वर में एक विचित्र बेचैनी भरी थी। *"यहूदा," उसने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा, "मैं फिर कहता हूँ, मुझे लगता है कि उनके कर्म उतने बुरे नहीं हैं जितना लोग कहते हैं। तुम्हें अब उन सिक्कों की इतनी अधिक चाह तो नहीं होगी, है ना?"*

यहूदा का चेहरा कठोर हो गया और उसका स्वर कड़वाहट से भर उठा। *"तुम अब यह कह रहे हो, तुम जिसने मुझे इस पूरे मार्ग पर उकसाया? अब, क्या मृत्यु उनके योग्य नहीं है?"* लूसिफ़ेर के चेहरे पर चिंता बढ़ गई। *"जब उन्हें जंजीरों में जकड़ा जाएगा, तो संभव है कि वे स्वयं को मुक्त कर लें। तुमने और मैंने, दोनों ने उनके चमत्कार देखे हैं! तब तुम्हारा क्या होगा, जिसने उनके साथ ऐसा किया?"*

यहूदा ने उसे एक ओर धकेल दिया, उसका संकल्प अडिग था। *"और क्या तुमने नहीं किया?"* उसने पलटकर उत्तर दिया, और प्रधान याजक

के भवन की ओर बढ़ता रहा। लूसिफ़ेर, जो अब अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हो चुका था, ओझल हो गया, उसका भय स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता था।

जुडास ने उसे एक तरफ धकेल दिया, उसका संकल्प अडिग था। "और तुमने नहीं किया?" उसने पलटकर कहा, पुजारी के घर की ओर बढ़ते हुए। लूसिफर, अब अपने असली रूप में प्रकट, गायब हो गया, उसका भय स्पष्ट था।

अध्याय बत्तीस

मरियम का शोक

उस ऊपरी कक्ष में, मरियम और वे पवित्र स्त्रियाँ, जो लगभग तीन वर्षों से यीशु के पीछे चलती आ रही थीं, जिनमें मरियम मगदलेनी, मारथा और उसकी बहन मरियम सम्मिलित थीं, एकत्र हुईं। जिस क्षण मसीह को शत्रुओं के हवाले किया गया, मरियम ने अपनी अंतर्वेदना उन पर प्रकट की। "*मेरी आत्मा अत्यंत दुखी है," उन्होंने कांपते हुए स्वर में कहा, "क्योंकि मेरे प्रिय पुत्र दुःख सहने और मरने वाले हैं, और मुझे उनके कष्टों में मर जाने की अनुमति नहीं है। प्रार्थना करो, मेरे मित्रों, ताकि तुम प्रलोभन से पराजित न हो जाओ।*"

मरियम अल्प समय के लिए उन्हें छोड़कर अपने निजी कक्ष की ओर चली गईं। वहाँ वे एकांत में विलाप करने लगीं, उनकी पीड़ा इतनी गहन थी कि उनके माथे पर रक्त की बूंदें उभर आईं। प्रधान दूत गाब्रिएल उनके सम्मुख प्रकट हुए, जिनकी उपस्थिति एक सांत्वना के समान थी। उन्होंने कोमलता से कहा, "*ढारस रखिए, मेरी महारानी। आपका निष्ठावान सेवक मिखाएल आपके प्रिय पुत्र के साथ है, जब वे उस बाग में अकेले प्रार्थना कर रहे हैं।*"

मरियम ने सिर हिलाया, उनका स्वर शोक से भरा था। "मैं यह देख रही हूँ, गाब्रिएल। जैसा कि मैं यह भी देख रही हूँ कि शीघ्र ही मेरे प्रिय पुत्र को एक चुंबन के द्वारा पकड़वा दिया जाएगा।"

अन्नास, जो प्रधान याजक था, के भवन में यीशु को बड़ी निर्दयता से बांधा गया था, उनके हाथों को पीछे की ओर जंजीरों से जकड़ दिया गया था। वे सैनिकों, और साथ ही लूसिफ़ेर तथा उसके दुष्टात्माओं से घिरे थे, जिन्होंने भीड़ को उकसाने के लिए मनुष्यों का रूप धर लिया था। वे उन्हें बार-बार प्रहार कर रहे थे, और उनकी क्रूरता का कोई अंत नहीं था। उनके दबे हुए कराहने के स्वर उस कक्ष में प्रतिध्वनित हो रहे थे।

ऊपरी कक्ष में, मरियम भूमि पर साष्टांग दण्डवत लेटी थीं और अपने

सनातन पिता से वार्तालाप करते हुए विलाप कर रही थीं। "*हे परम दयालु और कृपालु प्रभु, यद्यपि मैं उनके स्थान पर अपना जीवन नहीं दे सकती, फिर भी मैं आपकी इच्छा स्वीकार करती हूँ। परंतु उनकी प्रिय माता होने के नाते, मैं आपकी दया की याचना करती हूँ। मुझे उनके दुःखभोग में सहभागी होने दें और मुझे वह पीड़ा अनुभव करने दें जो वे उनके पावन शरीर को पहुँचा रहे हैं। जब आप स्वर्ग में हैं और उनके साथ नहीं हो सकते, तो मुझे आने वाले इन घंटों में उनके साथ खड़े रहने की अनुमति दें।*"

और क्योंकि ईश्वर उन्हें मना नहीं कर सकते थे, परम पवित्र कुंवारी मरियम का वह कोमल शरीर दुःखभोग की प्रसव-वेदना को सहन करने लगा। यद्यपि उन्हें मृत्यु प्राप्त नहीं होनी थी, परंतु सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अनुमति दी कि उनका शरीर, हृदय और आत्मा वह सब अनुभव करे जो मसीह अनुभव कर रहे थे। अतः, उन दोनों ने, माता और पुत्र ने, मानव जाति के पापों और उसके उद्धार के लिए स्वेच्छा से दुःख सहा

अध्याय तेईस

कालवारी का मार्ग

कालवारी के उस मार्ग पर, जहाँ यीशु अपना क्रूस उठाने की तैयारी कर रहे थे, मरियम और अन्य जन प्रतीक्षा कर रहे थे; और प्रभु के कष्टों को देख-देखकर उनके हृदय छलनी हो रहे थे। क्योंकि अब वह समय आ गया था जब परमेश्वर के पुत्र को अपना प्रिय क्रूस ढोना था। उनके शुद्ध और निष्कलंक शरीर पर 5115 बार प्रहार किया गया था। उनके शरीर का कण-कण घायल था, लहूलुहान था और उघड़ा हुआ था। फिर भी, जब उन्होंने उस क्रूस की ओर देखा, तो वहाँ उपस्थित लोग, माता मरियम के अतिरिक्त, उनके मुख पर प्रेम और उस तीव्र अभिलाषा के भाव को समझ न सके। विशेष रूप से लूसिफ़ेर और उसके अनुयायी यीशु के इस आचरण से भ्रमित और निरंतर भयभीत हो रहे थे।

कालवारी की ओर जाने वाले उस मार्ग पर लूसिफ़ेर और उसके सैकड़ों दुष्टात्मा भी उपस्थित थे जो भीड़ को भड़का रहे थे, और उनके स्वर द्वेष से भरे थे। वे लोग, जो इन दुष्टात्माओं के प्रभाव से मुक्त थे, बड़ी व्यथा के साथ देख रहे थे, उस निर्दोष मनुष्य के लिए उनके हृदय शोक के भार से दबे जा रहे थे। माता मरियम, जिनका मुख ढका हुआ था, मौन रहकर देख रही थीं। तब ईश्वर की वाणी उनसे बोली, जो कोमल होते हुए भी आज्ञापूर्ण थी, *"हे मेरी प्रिय, अपने शोक के इस महानतम क्षण में अपनी शक्ति का आह्वान करो। अब वह समय है कि आदम की संतानों का सबसे बड़ा शत्रु तुम्हारी सामर्थ्य को जाने।"*

मरियम के कदम ठहर गए, और उनकी अंतर्दृष्टि ने लूसिफ़ेर और उसके मंत्रियों को एक दहकती हुई लाल ज्योति में घिरे हुए देखा। उन्होंने पूर्ण अधिकार के साथ कहा, और उनका स्वर उन दुष्टों के मति-मस्तिष्क में गूँज उठा, "*मैं तुम्हें आज्ञा देती हूँ कि तुम वहीं ठहरे रहो, ऐ दुष्ट प्राणियों जो परमेश्वर की संतानों के हृदयों में बुराई फैलाते हो। तुम यहीं रुकोगे और उनके साथ-साथ चलोगे जब वे अपना क्रूस उठाएंगे। तुम स्वयं देखोगे जब वे उनके इस क्षत-विक्षत शरीर को उस पर कीलों से ठोकेंगे। तुम उनकी*

हड्डियों के चटकने की ध्वनि सुनोगे, उनकी प्यास देखोगे, और उनके दया तथा क्षमा के वचनों को सुनोगे। तत्पश्चात, मुझे प्रदान की गई शक्ति के द्वारा, मैं तुम्हें पाताल की सबसे गहरी गहराइयों में फेंक दूँगी।" वे दुष्टात्मा थरथरा उठे और अपनी जगह पर जड़ हो गए; उनका भय प्रत्यक्ष था क्योंकि माता मरियम के शब्द दिव्य अधिकार के साथ गूँज रहे थे, और उनकी आज्ञा का भार उस वातावरण में ठहर गया था।

माता मरियम की उस आज्ञा के साथ ही, वे नरक के प्राणी किसी दंडित कैदी की भाँति मसीह के क्रूस-मरण की ओर बढ़ चले। वे एक अदृश्य बंधन से उस क्रूस के आधार से जकड़े रहे, जिस पर यीशु लटके हुए थे, और उनका शरीर क्षत-विक्षत तथा लहूलुहान था। उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं, और कांपते हुए स्वर में अपने अंतिम शब्द कहे: "*हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।*" मसीह और मरियम ने ईश्वर के उन वचनों को सुना। "*मैं तुझसे सच कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा। हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है। देख, यह तेरी माता है।*"

मानवीय पीड़ा के चरम पर यीशु पुकार उठे। "*हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? मैं प्यासा हूँ। अब पूरा हुआ। हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।*" तब, एक अंतिम श्वास के साथ, उनका सिर उनके वक्ष पर झुक गया। उनके अनुयायियों के बीच से शोक की एक चीख उठी, और उनका विलाप आकाश में कड़कती बिजली और बादलों के गर्जन में विलीन हो गया। संपूर्ण धरा पर अंधकार छा गया, और पृथ्वी कांपने लगी, मानो उनके पैरों के नीचे से फट रही हो। जैसा कि पहले ही कहा गया था, लूसिफ़ेर और उसके दुष्टात्मा पृथ्वी की गहराइयों में खींच लिए गए, और उनकी चीखें उस पाताल में शांत हो गईं।

आकाश अब भी अंधकारमय था और सूर्य लुप्त हो चुका था, फिर भी उस अंधकार के विरुद्ध क्रूस और मसीह की देह की आकृति स्पष्ट दिखाई दे रही थी। क्रूस के चरणों में मरियम खड़ी थीं, उनका शरीर पीड़ा से कांप रहा था और उनका हाथ अपने पुत्र के चरणों को स्पर्श करने के लिए ऊपर उठ रहा था। उनके चारों ओर उनके संगी-साथी, जिनमें नश्वर मनुष्य और स्वर्गीय दूत दोनों थे, खड़े थे, उनके चेहरे शोक और श्रद्धा से परिपूर्ण थे। उस क्षण की गंभीरता संपूर्ण वातावरण में व्याप्त थी।

बाद में, नाज़रेथ के उस घर के भीतर, प्रेरित पतरस, योहन और अन्य

जन एकत्रित हुए, और उनके चेहरे शोक के भार से दबे थे। मरियम उस कक्ष में धीरे-धीरे चल रही थीं; यद्यपि उनका शरीर, हृदय और आत्मा पीड़ा से व्याकुल थे, फिर भी उन्हें अपने पुत्र के दफ़न की तैयारी करनी थी। योहन उनके समीप आए, और उनका स्वर चिंता से भरा था।

"माता," उन्होंने कोमलता से उनके हाथों को चूमते हुए कहा, *"आपको कुछ आहार ग्रहण करना चाहिए। कृपया, इस समय हमें अपनी सेवा करने दें। आपने कई दिनों से कुछ नहीं खाया है। मैं यह सहन नहीं कर पाऊँगा कि आप भी हमें छोड़कर चली जाएँ।"*

मरियम ने उनकी ओर देखा, और उनकी आँखों में एक शांत शक्ति व्याप्त थी। उन्होंने कहा, *"मेरा विश्राम और मेरी सांत्वना तो अपने पुत्र और प्रभु को मृतकों में से जीवित होते देखने में ही है। मेरे प्रिय मित्रों, तुम यहीं रुको और एक-दूसरे को ढ़ारस दो, जबकि मैं अपने पुत्र के साथ एकांत में जाने के लिए विदा लेती हूँ।'*

मरियम अपने उस ऊपरी कक्ष में चली गईं, जहाँ वे अपनी खाट पर लेट गईं और अपनी आँखें मूँद लीं। उनके सम्मुख 'लिम्बो' (अधोलोक) का संसार आकार लेने लगा। उन्होंने अपने प्रिय माता-पिता, अन्ना और योआकीम को देखा, और साथ ही यूसुफ, नबी हनोक और एलिय्याह, मूसा तथा उन हज़ारों आत्माओं को देखा जो अपनी मुक्ति की प्रतीक्षा कर रही थीं। उनके चेहरे आशा से भरे थे, और उनकी यह लंबी प्रतीक्षा माता के उस महानतम शोक के कारण ही संभव हो पाई थी। तभी, अपने पुत्र को देखकर उनका चेहरा हर्ष से दमक उठा। यीशु ने उन सभी का अभिवादन किया जिन्होंने इतने लंबे समय तक प्रतीक्षा की थी, और वे सब कृतज्ञता में घुटनों के बल गिर पड़े।

माता मरियम की आज्ञा से, स्वर्गदूतों ने उनके पुत्र के उस क्षत-विक्षत शरीर को पुनः उसकी पूर्णता में लौटा दिया। तत्पश्चात, उनके मूल जन्म के उसी भव्य प्रकाश के साथ, परमेश्वर और मरियम के पुत्र का पुनरुत्थान हुआ। वे उनके सम्मुख एक पारभासी और प्रकाशमय स्वरूप में प्रकट हुए; यहाँ तक कि उस अर्थी पर रखा कफ़न भी उस दिव्य रूपांतरण से अब तक चमक रहा था जो उसके भीतर घटित हुआ था।

अध्याय चौंतीस

पुनरुत्थान

अपने उस ऊपरी कक्ष में, मरियम अपनी खाट से उठीं और उनका मुख हर्ष से देदीप्यमान था। उनके सम्मुख उनके पुत्र का वह प्रकाशमय स्वरूप प्रकट हुआ। वे उनके सामने साष्टांग दण्डवत हो गईं, परंतु उन्होंने उन्हें ऊपर उठाया और अपने हृदय से लगा लिया। उनके ईश्वरत्व की ज्योति उनसे प्रवाहित होकर माता में समाने लगी, जिससे वे ऊपर की ओर उठने लगीं।

"मेरी प्रिय," यीशु ने प्रेम से भरी आवाज़ में कहा, "और *ऊँचा उठो!"*

तीन दिनों के पश्चात, रविवार की भोर को, जब योहन ने मरियम के कक्ष में झाँका, तो उन्हें प्रार्थना में घुटने टेके हुए पाया; उनका मुख एक दिव्य आभा से चमक रहा था। उन्होंने योहन को देखकर मुस्कान बिखेरी, और योहन के मुख के भावों से यह स्पष्ट था कि वे जान गए थे कि मसीह जी उठे हैं। उन्होंने द्वार बंद कर दिया और मरियम को एकांत में छोड़ दिया। तब ईश्वर, पवित्र आत्मा और यीशु की वाणियाँ सुनाई दीं, जिनके शब्द आदर और प्रेम से ओत-प्रोत थे।

"यह स्वर्ग और पृथ्वी की सारी सृष्टि की रानी है," उन्होंने उद्घोषणा की। *"ये कलीसिया की रक्षक, सभी प्राणियों की स्वामिनी, दया की माता, पापियों की अधिवक्ती और विश्वासियों की मध्यस्थ हैं। यह प्रेम और पवित्र आशा की माता हैं, जिनके भीतर मानवता के उद्धार के लिए हमारी शक्ति के रहस्य निहित हैं। वह हमसे जो कुछ भी माँगेंगी, वह पूरा किया जाएगा, और जो उनकी शरण में आएँगे, उन्हें अनंत जीवन का मार्ग मिलेगा।"*

जब वे बोल रहे थे, स्वर्गदूतों ने मरियम को भूमि से ऊपर उठा लिया और उनका स्वरूप स्वर्गीय ज्योति में स्नान कर रहा था। वे उन सभी के लिए जो उनकी सहायता चाहते थे, अपनी शाश्वत मध्यस्थता की प्रतिज्ञा और मुक्ति की आशा बन गईं।

वह भवन जहाँ 'अंतिम भोज ' हुआ था, अब मरियम, ग्यारह प्रेरितों, तीनों मरियमों, मारथा, लाज़रस, अन्य चेलों और भक्त स्त्रियों की उपस्थिति से भरा था, जिनकी कुल संख्या एक सौ बीस थी। दिव्य प्रकाश से प्रकाशित मसीह

उनके सम्मुख खड़े थे; उनका स्वर कोमल था, फिर भी अधिकार से परिपूर्ण था।

मेरे अति प्रिय बच्चों, अब मैं अपने पिता के पास स्वर्गारोहण करने वाला हूँ, जिनके हृदय से मैं मनुष्यों के उद्धार और उन्हें बचाने के निमित्त नीचे उतर आया था। मैं अपने स्थान पर, तुम्हारे साथ अपनी माता को छोड़े जाता हूँ। जो कोई भी मुझे खोजेगा, वह उन्हें सदैव इन्हीं में पाएगा। पतरस, मैं तुम्हें कलीसिया के सर्वोच्च प्रधान के रूप में नियुक्त करता हूँ। मेरे प्रतिनिधि और मुख्य महायाजक के रूप में उनकी आज्ञा का पालन करना। योहन, तुम मेरी माता के पुत्र का स्थान ग्रहण करोगे, जैसा कि मैंने क्रूस पर तुम्हारे लिए नियत किया था। अब, मेरे निष्ठावान चेलों, मेरे साथ चलो; मेरे साथ उस स्थान की ओर चलो जहाँ से मेरा स्वर्गारोहण होना है।

अध्याय पैंतीस
मसीह का स्वर्गारोहण

जैतून पर्वत के ऊपर का आकाश ईश्वरीय प्रखरता से प्रज्वलित हो उठा, और उसकी स्वर्णिम आभा क्षितिज तक इस प्रकार फैल गई मानो समस्त सृष्टि उस क्षण का आनंद मना रही हो। पर्वत के शिखर पर, मसीह तेजस्वी स्थिरता के साथ खड़े थे, उनके हाथ बड़ी कोमलता से उनके वक्ष पर मुड़े हुए थे और उनका मुख दिव्य तेज से दीप्तिमान था। उनकी उपस्थिति ही पृथ्वी और आकाश दोनों पर शासन करती प्रतीत होती थी, जो नश्वर संसार और उससे परे के अनंत साम्राज्य के बीच एक सेतु के समान थी।

जैसे ही उन्होंने ऊपर की ओर चढ़ना आरम्भ किया, उनके पदचिह्न पृथ्वी पर अंकित रह गए, मनुष्यों के बीच उनके बिताए समय की एक पवित्र छाप, एक मौन किंतु शक्तिशाली प्रमाण कि वे वास्तव में उनके मध्य चले-फिरे थे। वातावरण स्वर्गीय प्राणियों की उपस्थिति से झिलमिला रहा था, जिनका स्वरूप स्वर्ग की ज्योति से चमक रहा था जब प्रभु ने उन्हें अपने साथ उठने का संकेत दिया। स्वर्गदूतों की एक सुरीली टोली ऊपर की ओर उड़ी, और उनके स्वर स्तुति के उस गान में मिल गए जो उस विशाल विस्तार में प्रतिध्वनित हो रहा था।

स्वर्गारोहण के समय भी, उनका हृदय अपनी माता के साथ बना रहा; वे शब्दों से परे की भाषा में उनसे वार्तालाप कर रहे थे, और अपनी अनंत महिमा में पूर्णतः प्रवेश करने से पूर्व प्रेम और सांत्वना का एक अंतिम संदेश दे रहे थे।

यीशु ने अत्यंत प्रेमपूर्ण स्वर में कहा, *"माता, मैं अपने पिता के पास स्वर्गारोहण करते समय आपका साथ चाहता हूँ।"*

मरियम की आत्मा ने उनके पार्थिव शरीर को छोड़ दिया, जिसे स्वर्गारोहण देख रहे लोग न देख सके। जैसे ही उनकी आत्मा मसीह के साथ ऊपर उठी, परमेश्वर की वाणी स्वर्ग में गूँजी, *"हे मेरी प्रिय, और ऊँचे आरोहण करो; मेरे पुत्र को मुझे लौटा दो।"*

वे 'एम्पिरियन' (परम धाम) के स्वर्ग में पहुँचे, जहाँ तीन भव्य सिंहासन उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। समस्त सृष्टि के सृजनहार, ईश्वर, सबसे बाईं ओर के सिंहासन पर विराजमान थे। उनके पीछे हज़ारों धर्मपिता और संत थे जो 'लिम्बो' (अधोलोक) में रहे थे, और उनके चेहरे हर्ष से भरे थे। तेजस्वी रंगों की किरणें चमक रही थीं, स्वर्गदूत आनंद मना रहे थे और तुरहियाँ बज रही थीं। मसीह ने मध्य के सिंहासन पर अपना स्थान ग्रहण किया और अपना दाहिना हाथ बढ़ाते हुए अपने समीप वाले सिंहासन की ओर संकेत किया।

उन्होंने श्रद्धापूर्ण स्वर में कहा, *"माता, उठिए और इस स्थान पर अपना अधिकार ग्रहण कीजिए, जिसका मैं आपका ऋणी हूँ क्योंकि आपने मेरा अनुसरण किया और मेरा अनुकरण किया है।"*

मरियम सिंहासन के समीप आईं और विराजमान हो गईं, और उनका स्वरूप दिव्य ज्योति से चमकने लगा। तब ईश्वर बोले; उनका स्वर प्रेम से भरा था। *"मेरी वधु और प्रिय, मेरे अनंत आलिंगन में आओ। क्योंकि यही तुम्हारा स्थान है, मेरे पुत्र के दाहिने हाथ बैठना, जो स्वयं मेरे दाहिने विराजमान है। यह अनंत काल तक तुम्हारा है। तुम इसे अभी चुन सकती हो, या जब तुम्हारी इच्छा हो।"*

मरियम ने अपने चारों ओर देखा, और उनकी दृष्टि अपने पुत्र पर टिक गई, फिर वे खड़ी हुईं और ईश्वर के सम्मुख घुटने टेक दिए। उन्होंने अत्यंत नम्रता से कहा, "*हे सनातन और सर्वशक्तिमान परमेश्वर, इस प्रतिफल को अभी स्वीकार करना मुझे विश्राम प्रदान करेगा, परंतु मुझे संसार में लौटना होगा और आदम की संतानों तथा कलीसिया के विश्वासियों के लिए अपना कार्य जारी रखना होगा। हे मेरे प्राणों के स्वामी और प्रभु, मेरे इस बलिदान को स्वीकार करें, और अपनी दिव्य शक्ति से मुझे उस मिशन में थामे रखें जो मुझे सौंपा गया है। मैं स्वयं को एक बार फिर अर्पित करती हूँ, और जब तक मैं समर्थ हूँ, अपना सर्वस्व आपकी महिमा और आत्माओं के उद्धार के लिए समर्पित करती हूँ।*"

ईश्वर ने मसीह की ओर देखा और अपना सिर हिलाया। तब मसीह बोले; उनका स्वर दुख और प्रशंसा दोनों से भरा था। *"माता, मैं आपके बलिदान को स्वीकार करता हूँ, परंतु मैं चाहता हूँ कि आप कुछ समय के लिए मेरे साथ रहें, क्योंकि मुझे आपकी उपस्थिति के अभाव का कष्ट सहना होगा।"*

परमेश्वर की माता के पृथ्वी पर लौटने से पूर्व, उन्हें पवित्र आत्मा के पृथ्वी पर आने के संभावित समय और तिथि के विषय में बताया गया, जो उन सबको उनके प्रभु की शिक्षाओं में दीक्षित करने वाले थे।

अध्याय छत्तीस

पिन्तेकुस्त

उस ऊपरी कक्ष अभी भोर का समय था; वातावरण प्रार्थना की प्रगाढ़ता से भरा हुआ था। मरियम, प्रेरितों और चेलों का एक समूह, जिनमें स्त्री और पुरुष मिलाकर कुल एक सौ बीस जन थे, भक्ति में लीन होकर एक मन थे। वहाँ केवल स्वर्ग की ओर उठने वाली प्रार्थनाओं और स्तुति की मंद फुसफुसाहटों के अतिरिक्त पूर्ण सन्नाटा व्याप्त था। अचानक, बादलों के एक भीषण गर्जन ने उस शांति को भंग कर दिया और वायु में एक प्रचंड वेग के साथ आंधी चलने लगी। बाहर, आकाश ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह फट गया हो, और बिजली के समान एक प्रज्वलित अग्नि उस घर पर उतर आई, जिससे वह घर उस दिव्य ज्योति में समा गया जो छत से भीतर की ओर उमड़ रही थी।

दूर खड़े गाँव वाले अपने स्थान पर ही ठिठक गए और उस निवास स्थान को विस्मय से निहारने लगे जो अब ईश्वरीय प्रखरता से दमक रहा था। भीतर उपस्थित उन विश्वासियों ने किसी असाधारण शक्ति की उपस्थिति का अनुभव किया। प्रत्येक व्यक्ति के सिर के ऊपर एक अग्नि-शिखा प्रकट हुई, जो बड़ी तीव्रता के साथ झिलमिला रही थी। प्रेरितों की ज्वालाएँ दूसरों की तुलना में अधिक दीप्तिमान थीं, जिनमें योहन और पतरस की ज्वालाएँ सबसे अधिक प्रखर थीं। किंतु माता मरियम के ऊपर वह अग्नि-शिखा सबसे विशाल थी, जो उनके अद्वितीय अनुग्रह का प्रमाण थी। कुछ क्षणों के लिए वह कक्ष स्वर्गदूतों के मंडलियों के गान से गूँज उठा, जिनके स्वर स्वर्गीय स्तुति में परस्पर मिल रहे थे।

तब एक गंभीर, गूँजती हुई और निस्संदेह ईश्वरीय वाणी सुनाई दी। वह स्वयं 'पवित्र आत्मा' थे, जो उन सबको संबोधित कर रहे थे। "*मैं तुम सब में सात वरदानों के स्वभाव का संचार करता हूँः प्रज्ञा, समझ, ज्ञान, भक्ति, सुमति, धैर्य और ईश्वर का भय।*" प्रेरितों और माता मरियम की ओर मुड़ते हुए वह वाणी पुनः गूँजी, "*मैं तुम सब में, उस सेवाकार्य के लिए जो तुम पवित्र कलीसिया में करोगे, प्रचुर मात्रा में अपनी कृपा और अनुग्रह प्रदान करता हूँ।*"

जैसे ही वह ज्योति मंद हुई, दृश्य यरूशलेम की व्यस्त गलियों की ओर मुड़

गया। हज़ारों लोग उस नगर में भरे हुए थे और प्रेरित उनके मध्य चल रहे थे; प्रत्येक प्रेरित एक विशाल जनसमूह को संबोधित कर रहा था। यह अत्यंत विस्मयकारी था कि जब प्रेरित बोलते थे, तो उनके शब्द सबकी समझ में आते थे, चाहे उनकी भाषा कोई भी क्यों न हो। लोगों के चेहरे आश्चर्य से खिल उठे; भीड़ में खड़ी एक सुंदर युवती विस्मय से टकटकी लगाए देख रही थी। इसी बीच, अन्य पवित्र स्त्री-पुरुष बीमारों और मरणासन्न लोगों की सेवा कर रहे थे, अद्भुत चंगाई प्रदान कर रहे थे और ग्रसितों में से दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे।

अगले दिन, नदी के तट पर हज़ारों लोग बपतिस्मा ग्रहण करने के लिए एकत्रित हुए, क्योंकि ईश्वरीय वचन की शक्ति से उनके हृदय परिवर्तित हो चुके थे।

ऊपरी कक्ष में विराजमान होकर माता मरियम ने इस दर्शन को साकार होते देखा, और उनके अधरों पर एक सौम्य मुस्कान तैर गई।

समय बीतता गया और प्रेरित यरूशलेम, फिलिस्तीन, लुद्दा और जाफ़ा में फैल गए। कुछ जोड़ों में तो कुछ अकेले यात्रा कर रहे थे, परंतु वे सब अपने मिशन में एक थे: प्रचार करना, चंगाई देना और मसीह की नई कलीसिया को बढ़ाना। फिर भी, उनका कार्य विरोध से मुक्त नहीं था। लूसिफ़ेर, जो समस्त मानव जाति का शत्रु है, हर मोड़ पर उनके प्रयासों में बाधा डालने का प्रयास करता था। उसने अपने प्यादों को प्रेरितों को प्रलोभन देने, अपमानित करने और उन पर आक्रमण करने के लिए भेजा, ताकि ईश्वरीय वचन के प्रसार को रोका जा सके।

किंतु माता मरियम, जो अपने स्वर्गीय स्थान से सदैव चौकस रहती थीं, उनकी संरक्षिका बनी रहीं। जब वे स्वयं हस्तक्षेप नहीं करती थीं, तो वे अपने प्रिय प्रेरितों की रक्षा के लिए स्वर्गदूतों की सेनाएँ भेजती थीं। इससे लूसिफ़ेर अत्यंत क्रोधित हो गया, और उसने अपनी द्वेषपूर्ण दृष्टि निर्बलों और असहायों की ओर मोड़ दी, क्योंकि आत्माओं के लिए उसकी प्यास अब भी अतृप्त थी।

अध्याय सैंतीस
अच्छाई और बुराई का संग्राम

यरूशलेम नगर पर सूर्य अस्त हो चुका था, और उसकी संकरी गलियों में लंबी छायाएँ पसर गई थीं। वह सुंदर युवती, जो पिन्तेकुस्त के प्रारंभिक दिनों में धर्मपरिवर्तित होने वाले अनेक लोगों में से एक थी, अकेली चली जा रही थी; उसका हृदय अब भी उन प्रेम और क्षमा के वचनों से प्रज्वलित था जो उसने प्रेरितों से सुने थे। किंतु जैसे-जैसे वह आगे बढ़ी, अंधकार से एक आकृति उभरकर सामने आई, एक वृद्ध स्त्री, झुकी हुई और दुर्बल, जिसकी आँखें तीक्ष्ण और धूर्ततापूर्ण थीं। वह छद्म वेश में स्वयं लूसिफ़ेर ही था। उस वृद्धा ने युवती के समीप आकर कृत्रिम चिंता दिखाते हुए कहा, "*मैंने तुम्हें उस दिन उन वस्त्रधारी पुरुषों के साथ देखा था। वह जो कुछ भी तुमसे कह रहे थे, सब झूठ था,*" वह फुसफुसाई।

युवती हिचकिचाई, और एक क्षण के लिए उसका विश्वास डगमगाने लगा। "*उन्होंने जो कहा वह अत्यंत सुंदर था। उन्होंने प्रेम और क्षमा की बातें कीं। उन्होंने कहा कि यदि हम परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे, तो मृत्यु के पश्चात हम उनके साथ सदैव जीवित रहेंगे।*"

उस वृद्धा ने उपहास करते हुए कहा। "*आज्ञा? तुम्हें किसी की आज्ञा मानने की आवश्यकता ही क्या है? तुम मुझे एक चतुर कन्या प्रतीत होती हो। तुम्हें वही करना चाहिए जो तुम चाहती हो। क्या तुम हास-परिहास और पुरुष के सुखों की अभिलाषा नहीं रखतीं?*"

युवती का स्वर कांप उठा। "*हाँ, किंतु... मैंने देखा कि उन्होंने क्या किया। उन्होंने अनेक ग्रसित लोगों को चंगा किया। जब वे बोलते थे, तो लोग उनकी बातों को सभी भाषाओं में समझ लेते थे।*"

वह वृद्धा और समीप आई, और उसका स्वर और भी अधिक आग्रहपूर्ण हो गया। "*उनका त्याग कर दो, और मैं तुम्हें एक शांतिपूर्ण और वैभवशाली जीवन का वचन देती हूँ।*" युवती पुनः दुविधा में पड़ गई, और उसका मन संदेह के बादलों से घिर गया। "*परंतु उस सौम्य नारी का क्या, जो उनके साथ थी? उनके शब्द सबके शब्दों से कहीं अधिक दयालु और प्रेमपूर्ण थे।*"

उस वृद्धा का मुख घृणा से विकृत हो गया। "*वह स्त्री उन सब में सबसे*

अधिक भयानक है। उससे दूर रहो। उसके जाल से स्वयं को छुड़ा लो।"

इससे पहले कि वह कन्या कोई उत्तर दे पाती, उस वृद्धा का स्वरूप बदलने लगा और वह विकृत होकर लूसिफ़ेर के वास्तविक और भयानक मुखौटे में प्रकट हो गया। एक ही क्षण में, वह उसके शरीर में प्रविष्ट हो गया, जिससे वह कन्या कांपती हुई और भीतर से टूटकर रह गई।

कुछ दिनों पश्चात, उस कन्या के विश्राम कक्ष में वह गंभीर रूप से अस्वस्थ पड़ी थी; उसका परिवार उसके चारों ओर एकत्र था और उनके चेहरों पर चिंता की रेखाएँ स्पष्ट थीं। उसी समय ऊपरी कक्ष में विराजमान माता मरियम ने उस कन्या के कष्टों को देखा और उसकी सहायता के लिए पहले दो स्वर्गदूतों को भेजा। किंतु उनमें से कोई भी उस कन्या को लूसिफ़ेर की आत्मा से मुक्त न कर सका। वह असह्य पीड़ा में तड़प रही थी, और उसका शरीर तथा आत्मा दोनों प्रताड़ित थे।

यरूशलेम की व्यस्त गलियों के बीच से माता मरियम अकेली चल पड़ीं, और उनके स्वर्गदूत मौन रहकर एक पहरेदार की भाँति उनके चारों ओर चल रहे थे। उनके कदम तीव्र थे, और उनका हृदय उस आत्मा की ओर खिंचा जा रहा था जिसे उनकी सहायता की अत्यंत आवश्यकता थी। "*तुम मुझे उस तक पहुँचने में विलंब क्यों करा रहे हो?*" उन्होंने बड़े आग्रह के साथ पूछा। तब एक स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "*आपको इस नगर से होकर पैदल चलने की कोई आवश्यकता नहीं है, जबकि हम आपको बड़ी सुगमता से वहाँ ले जा सकते हैं।*"

तत्क्षण, स्वर्गदूतों ने मरियम को ऊपर उठा लिया और उन्हें अनायास ही वायु मार्ग से ले चले। पलक झपकते ही, वे उस कन्या के कक्ष के भीतर प्रकट हुईं, उनकी उपस्थिति ओजस्वी और अकाट्य थी। वहाँ उपस्थित दुष्ट आत्माएँ भागते हुए प्रकाश के विस्फुटों की भाँति तितर-बितर हो गईं, और 'पवित्र माता' को देखते ही भय के मारे ओझल हो गईं।

मरियम उस कन्या के समीप आईं और उनका स्वर कोमल होते हुए भी दृढ़ था। "*तुमसे क्या कहा गया था?*"

उस दुर्बल और कांपती हुई कन्या ने धीरे से फुसफुसाया, "*उन्होंने मुझे यह विश्वास करने के लिए मनाया कि यीशु के चेले मुझे धोखा दे रहे थे।*"

मरियम की आँखें करुणा से भर आईं। "*देखो कि उन विचारों ने तुम्हारे इस युवा शरीर की क्या दशा कर दी है। तुम मृत्यु के अत्यंत निकट हो। अब*

तुम किस बात पर विश्वास करना चाहती हो?"

उस कन्या का स्वर बड़ी कठिनाई से सुनाई दे रहा था। "*यही कि मुझसे प्रेम किया जाता है। यही कि मुझे शांति प्राप्त होगी।*"

मरियम और भी समीप झुक गईं, और उनके शब्द उस कन्या की व्याकुल आत्मा के लिए एक औषधि के समान थे। "*तुम्हें शांति अवश्य मिलेगी, यदि तुम उन विचारों को निकाल दोगी जो उस कपटी द्वारा तुम्हारे मन में बोए गए थे, जिसने केवल तुम्हें धोखा देना चाहा था। मेरे वचनों पर विश्वास करो, पुत्री। यदि तुम मेरी बातों पर विश्वास करोगी, तो यीशु तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।*"

फिर मरियम ने उस कन्या को अपनी भुजाओं में ले लिया। उस कन्या के अंतिम शब्द विश्वास की एक मंद पुकार थे: "*मैं ईश्वर से प्रेम करती हूँ, और यीशु से, जिन्होंने मेरे पापों के निमित्त अपने प्राण त्याग दिए। हे प्रभु, मुझे क्षमा करें।*" इसके साथ ही, उसने मरियम की गोद में शांतिपूर्वक प्राण त्याग दिए।

प्रेम और दया की महारानी के लिए कोई भी आत्मा तुच्छ नहीं थी। उन्होंने आत्माओं को बचाने के अपने वचन को निभाया, जबकि उनके प्रिय प्रेरितों को अब लूसिफ़ेर के हाथों कष्ट सहने पड़ रहे थे।

स्वर्गदूतों के संरक्षण के बावजूद, प्रेरितों के विरुद्ध अत्याचार और भी भीषण हो गया। सबसे पहले स्तिफनुस को बंदी बनाया गया, जिन्हें घसीटते हुए ले जाया गया और कारागार में डाल दिया गया।

उस ठंडी पत्थर की दीवार से जंजीरों में जकड़े हुए, स्तिफनुस ने अपनी दृष्टि ऊपर उठाई, और उनके सम्मुख मरियम प्रकट हुईं, जो ओजस्वी और गंभीर थीं। उनका स्वर कोमल और शक्तिशाली दोनों था।

"*स्टीफ़न, तुम शहीदों में प्रथम होगे, जिन्हें मेरे पुत्र ने स्वयं के बलिदान के मार्ग का अनुसरण करने के लिए चुना है।*"

स्टीफ़न का स्वर अडिग था और उनका हृदय दृढ़। "*मैं उनका अनुसरण करूँगा, मैं एक सौभाग्यशाली शिष्य हूँ जो उनके पदचिह्नों पर चल रहा है।*"

मरियम के शब्दों में सांत्वना और उद्देश्य दोनों समाहित थे। "*तुम एक निडर सैनिक के रूप में खड़े होगे, जो आने वाले शहीदों की सेना का नेतृत्व*

करेगा और क्रूस की ध्वजा को थामे रखेगा।"

स्टीफ़न को उनकी कोठरी से निकालकर आँगन के मध्य में लाया गया। उनके हाथ बांध दिए गए और उनके अभियुक्तों ने उन्हें घेर लिया। पहला पत्थर चला, फिर दूसरा, और फिर एक और। प्रत्येक प्रहार विनाशकारी बल के साथ उन पर लग रहा था, परंतु स्टीफ़न विचलित नहीं हुए। इसके बजाय, वे अपने घुटनों के बल गिर पड़े, और जैसे ही उनके सामने स्वर्ग खुल गया, उनका मुख मंडल आलोकित हो उठा। "*देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ और उसकी महिमा को देख रहा हूँ, और उसमें मैं यीशु को ईश्वर के दाहिने खड़ा देख रहा हूँ!*" वे पुकार उठे।

उनके वध करने वाले क्रोधित हो उठे और अपने कान बंद कर लिए, क्योंकि वे उस सत्य को सुनने से इनकार कर रहे थे जिसे वे ईश्वर की निंदा मान रहे थे। भीड़ आगे बढ़ी और उन्हें निर्दयता से भूमि पर घसीटने लगी, जबकि पत्थरों की वर्षा निरंतर जारी थी।

ऊपरी कक्ष में विराजमान माता मरियम बड़े शोक के साथ यह देख रही थीं, स्टीफ़न के अंतिम क्षणों की साक्षी बनते हुए उनका हृदय छलनी हो रहा था। अपने एक स्वर्गदूत की ओर मुड़कर उन्होंने आज्ञा दी, "*अंत तक उनके साथ रहो, और फिर उनकी आत्मा को मेरे पुत्र के पास ले जाओ।*"

जब स्टीफ़न ने अपनी अंतिम सांस ली, उनकी आत्मा को स्वर्ग में उठा लिया गया, वे पहले शहीद थे जिनका अनंत महिमा में स्वागत हुआ। किंतु जहाँ स्वर्ग आनंद मना रहा था, वहीं मरियम का हृदय दुखी था, क्योंकि वे जानती थीं कि आने वाली परीक्षाओं का यह तो केवल आरम्भ मात्र था।

अध्याय अड़तीस

प्रेरितों का धर्मसार

उस निर्णायक दिन से कई महीने बीत चुके थे; और उसी शांत, पवित्र कक्ष में जहाँ कभी 'अंतिम भोज' संपन्न हुआ था, मरियम ने शेष प्रेरितों को एकत्रित किया। वह कक्ष, जो शोक और आशा दोनों से भरा था, मानो अपनी साँसें थामे हुए था जब पतरस बोलने के लिए खड़े हुए। उनके स्वर में दृढ़ संकल्प प्रतिध्वनित हो रहा था:

"हम अपने भाई स्तिफनुस की तुलना में अधिक भाग्यशाली रहे हैं, कि निकटवर्ती नगरों में मसीह के वचनों का प्रसार करते समय हम प्रधान याजक के क्रोध से बचे रहे। फिर भी, प्रभु की आज्ञा के अनुसार, हमें शीघ्र ही आगे बढ़ना होगा और संपूर्ण विश्व में सुसमाचार का प्रचार करना होगा। अब, वे अपने दिव्य 'पवित्र आत्मा' के द्वारा हमारा मार्गदर्शन करेंगे; जिससे कि हम उनके नाम पर और एक अपरिवर्तनीय डिक्री के द्वारा उन सत्यों को समझ सकें और स्थापित कर सकें, जो उनकी पवित्र कलीसिया की नींव बनेंगे, एक ऐसी कलीसिया जो समय के अंत तक टिकी रहेगी।"

माता मरियम की आँखें मातृ-प्रेम और दृढ़ उद्देश्य दोनों से चमक रही थीं जब उन्होंने एकत्रित प्रेरितों को संबोधित किया। "*इस समय, मैं तुम सबको अपने पुत्र के आंतरिक वचनों को सुनने का निर्देश देती हूँ, क्योंकि वे रहस्यों को व्यक्त करने और परिभाषित करने के लिए तुम्हारे हृदयों को आलोकित करेंगे।*"

तत्पश्चात, एक शांत अधिकार के साथ, पतरस ने उस पवित्र घोषणा का आरम्भ किया, और एक-एक करके उनके साथी प्रेरित उस धर्मसार में सम्मिलित होते गए।

"मैं स्वर्ग और पृथ्वी के सृजनहार, सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ। और उनके एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह पर; जो पवित्र आत्मा की शक्ति से गर्भ में आए, और कुंवारी मरियम से जन्मे। उन्होंने पोंतियुस पिलातुस के शासनकाल में दुःख सहा, वे क्रूस पर चढ़ाए गए, मर गए और दफ़नाए गए। वे अधोलोक में उतरे और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे। वे स्वर्गारोहण कर गए और सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर के दाहिने विराजमान हैं। वहाँ से वे जीवितों और मृतकों का न्याय

करने आएँगे। मैं पवित्र आत्मा पर विश्वास करता हूँ। एक ही पवित्र कैथोलिक प्रेरितिक कलीसिया, संतों के सहभाग, पापों की क्षमा, शरीर के पुनरुत्थान और अनंत जीवन पर विश्वास करता हूँ। आमीन।"

विश्वास की इस सुदृढ़ घोषणा के पश्चात, प्रेरितों ने शीघ्र ही अपनी यात्राओं के लिए प्रस्थान किया। नाज़रेथ के एक साधारण से घर में, उनमें से प्रत्येक को एक अंगरखा दिया गया, जो उस वस्त्र की स्मृति दिलाता था जिसे स्वयं यीशु पहना करते थे, यह कत्थई और राख के समान धूसर रंगों में बुना हुआ एक परिधान था। माता मरियम ने प्रत्येक के लिए उनकी लंबाई के अनुसार एक-एक क्रूस भी तैयार किया था, और उन्होंने उनके हाथों में एक छोटा किंतु बहुमूल्य पोटली थमा दी।

ममतामयी दृढ़ता के साथ उनकी ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "*मैं तुम्हें ये वस्तुएँ तुम्हारे जीवन के अंत तक साथ रखने के लिए देती हूँ। मैं तुम्हें बिना किसी भोजन के भेज रही हूँ, क्योंकि तुम अपने पोषण के लिए अजनबियों की दया पर निर्भर रहोगे। मैं तुममें से प्रत्येक को अपने पुत्र का एक अंशावशेष सौंपती हूँ, जो मेरे लिए पृथ्वी के समस्त खजानों से भी अधिक मूल्यवान है। मेरे पुत्रों, यह जान लो कि तुम अकेले नहीं जा रहे हो। मुझे केवल एक बार पुकारना, और या तो मेरा कोई स्वर्गदूत या मैं स्वयं वहाँ उपस्थित होऊँगी।*"

जैसे ही प्रेरित अपने ईश्वरीय उद्देश्य पर निकले, अन्यत्र कुछ घटनाएँ घटित हो रही थीं। प्रधान याजक के भव्य कक्ष में, साऊल नामक एक व्यक्ति, जो धर्मांधता से भरा हुआ था और अंधकारमय शक्तियों द्वारा संचालित था, मसीह के बढ़ते हुए अनुयायियों का शिकार करने की अनुमति मांग रहा था।

अहंकार और दृढ़ निश्चय के साथ उसने प्रधान याजक को संबोधित किया। "*आयुक्त महोदय, मुझे आपके नगर में व्यवस्था बहाल करने का सम्मान प्रदान करें। ये पाखंडी संपूर्ण देश में ईश्वर-निंदा फैला रहे हैं। मुझे उन्हें आपके लिए बंदी बनाने दें, या फिर, थोड़े अधिक पुरस्कार के बदले उन्हें वहीं मार डालने दें जहाँ वे खड़े हों।*"

प्रधान याजक ने, अपनी ठंडी और धूर्त दृष्टि से देखते हुए, हाथ के एक झटके के साथ मौन रहकर अपनी स्वीकृति दे दी। साऊल ने झुककर वंदना की, और फिर तेजी से मुड़कर कई सौ सशस्त्र पुरुषों के साथ दमिश्क की ओर निकल पड़ा; वह इस बात से अनभिज्ञ था कि उसकी यह यात्रा शीघ्र ही इतिहास की धारा को बदलने वाली थी।

अपने पावन कक्ष में लौटकर, मरियम ने भारी मन से देखा कि सुसमाचार के प्रचारकों की आवाज़ को दबाने के लिए एक सेना आगे बढ़ रही है। उस ऊपरी कक्ष की नीरवता में, उन्होंने प्रार्थना में अपना स्वर ऊँचा किया और अपने पुत्र से बड़े आग्रह के साथ याचना की:

"उस व्यक्ति को देखिए, वह साऊल; वही है जिसे आपने अपने महानतम सेवकों में से एक होने के लिए चुना है। मैं आपसे विनती करती हूँ, उसके हृदय-परिवर्तन की अपनी योजना में शीघ्रता करें, क्योंकि लूसिफ़ेर ने उसे एक भयानक अभियान पर भेजा है।" उनके शब्द, जो ईश्वरीय संकल्प से ओत-प्रोत थे, अदृश्य पंखों पर सवार होकर मसीह के कानों तक जा पहुँचे। तब ज्योतिर्मय लोक से एक वाणी सुनाई दी, जिसने घोषित किया, *"मेरी माता, समस्त प्राणियों में चुनी हुई, आपकी इच्छा बिना विलंब पूर्ण हो।"*

जैसे ही साऊल और उसके सैनिक धूल भरे मार्ग पर आगे बढ़े, अचानक एक अत्यंत तीव्र और अपार प्रखरता उन पर उतर आई। वह ज्योति इतने वेग के साथ फूटी कि उसने साऊल को उसके घोड़े से नीचे गिरा दिया और उसे अंधा कर दिया। उस उथल-पुथल भरे क्षण में, उस कोलाहल के बीच एक आज्ञाकारी वाणी गूँजी: "*साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?*" साऊल ने कांपते हुए पुकारा, "*प्रभु, आप कौन हैं?*" *उस दीप्तिमान वाणी ने उत्तर दिया, "मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है; मेरी सर्वशक्तिमान सत्ता के विरुद्ध प्रहार करना तेरे लिए कठिन है।*" साऊल व्याकुल हो उठा, फिर भी मार्गदर्शन की अभिलाषा लिए उसने विनती की, "*प्रभु, आप मुझे क्या आज्ञा देते हैं और मेरे साथ क्या करने की इच्छा रखते हैं?*"

अपने उस अंधकार से निकलकर वह एक महान ज्योति की ओर बढ़ा और माता मरियम द्वारा उसे 'पौलुस' नाम दिया गया। उसका स्वरूप एक दुष्टात्मा से बदलकर उच्चतम और अत्यंत उत्साही 'सराफिम' स्वर्गदूत के समान हो गया। जिन सैनिकों ने इस घटना को देखा, वे मसीह की वाणी और साऊल के इस अद्भुत परिवर्तन को देखकर विस्मय में पड़ गए। माता मरियम की मध्यस्थता के द्वारा, उस दिन शत्रु की सेना में कई सौ आत्माओं की कमी हो गई।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, प्रेरितों की शिक्षाएँ दूर-दराज़ के देशों में फैल गईं और उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ती गई। किंतु इस वृद्धि के

साथ-साथ बड़ी परीक्षाएँ भी आईं। माता मरियम ने बाद में स्मरण किया कि इस अत्याचार के अग्रभाग में हेरोदेस खड़ा था, उस शासक का पुत्र जिसने कभी यीशु के जन्म के समय नवजात शिशुओं के नरसंहार की आज्ञा दी थी।

हमारी 'धन्य माता' अटूट ममता के साथ प्रेरितों की देखरेख करती रहीं। ईश्वर द्वारा उन्हें प्रदान किए गए दिव्य वरदानों के माध्यम से, वे सदैव जान जाती थीं कि कब उनमें से कोई अपनी यात्रा में कष्ट सह रहा है और उनके पुत्र का संदेश फैला रहा है। दूर रहकर भी उनका हृदय उनके साथ बना रहा, और जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, वे उनके मिशन में उनका मार्गदर्शन करती रहीं।

अध्याय उनतालीस

याकूब की मृत्यु

हेरोदेस के राजदरबार की उन भयानक सीमाओं के भीतर, कई स्त्री-पुरुषों को जंजीरों में जकड़कर लाया गया, जिनमें से प्रत्येक को उस शासक की क्रूर आज्ञा द्वारा त्वरित मृत्यु का सामना करना था। उनके मध्य प्रेरित याकूब भी थे, जिनके गले में एक रस्सी बंधी हुई थी। दया का लेश मात्र भी त्याग करते हुए, हेरोदेस ने आदेश दिया, "*इसका सिर काट दो। इसकी जीभ भी काट दो ताकि यह अपनी मृत्यु के पश्चात भी ऐसी अपवित्र बातें न बोल सके।*"

जैसे ही याकूब वध करने वाले के सम्मुख घुटने टेक कर बैठे, उनकी अश्रुपूर्ण आँखों ने अचानक माता मरियम का दर्शन किया, जो स्वर्गदूतों की एक विशाल सेना से घिरी हुई थीं और उनकी उपस्थिति से दिव्य अनुग्रह प्रस्फुटित हो रहा था। उनका हृदय विस्मय से भर उठा और उन्होंने बोलने के लिए अपना मुख खोला, परंतु इससे पहले कि वे एक भी शब्द कह पाते, एक स्वर्गदूत ने आगे बढ़कर बड़े आग्रह के साथ उनके कान में फुसफुसाया:

"याकूब, इन पवित्र अनुभूतियों को अपने हृदय में ही संजोकर रखो। इन दुष्ट पुरुषों के सम्मुख हमारी महारानी की उपस्थिति को प्रकट न करो। वे न तो उनके योग्य हैं और न ही उन्हें जानने में सक्षम, और उनके कठोर हृदय केवल द्वेष में और गहरे डूबेंगे।"

उस अंतिम और पावन क्षण में, याकूब ने अपनी आँखें मूँद लीं और पूर्ण अटूट भक्ति के साथ अपनी आत्मा अर्पित कर दी:

मेरे प्रभु यीशु मसीह की माता, मेरी स्वामिनी और संरक्षिका, मेरे जीवन के इस बलिदान को अपने पुत्र, जगत के मुक्तिदाता के सम्मुख प्रस्तुत करें। आपके हाथों में, और उनके माध्यम से मेरे सृजनहार के हाथों में, मैं अपनी आत्मा सौंपता हूँ।

इन अंतिम शब्दों के साथ ही तलवार चली और याकूब का सिर काट दिया गया। अपने वचन के अनुसार, माता मरियम वहाँ उपस्थित थीं; उनकी उपस्थिति सौम्य और ओजस्वी थी जब उन्होंने उनकी आत्मा को अपने पुत्र के

प्रेमपूर्ण आलिंगन की ओर निर्देशित किया और अनंत साम्राज्य में उनका स्वागत किया।

अध्याय चालीस

पतरस की मुक्ति

उस धुंधले और शीतल कालकोठरी में, पतरस भारी जंजीरों में जकड़े हुए अपने भाग्य की प्रतीक्षा कर रहे थे। बहुत दूर, अपने निजी कक्ष में माता मरियम के नेत्रों से रक्त के आँसू बह रहे थे। भूमि पर गिरकर, उन्होंने क्रूस के चिह्न के रूप में साष्टांग दण्डवत किया। उस पावन क्षण में, एक अत्यंत प्रखर और वैभवशाली ज्योति से वह कक्ष भर गया और मसीह वहाँ प्रकट हुए। वे माता के समीप घुटनों के बल बैठ गए और उन्हें कोमलता से ऊपर उठाते हुए उस वाणी में बोले जो दिव्य अधिकार से प्रतिध्वनित हो रही थी।

"माता, अपने शोक को शांत करें और जो कुछ आपकी अभिलाषा हो, वह मांगें; क्योंकि मैं वह सब प्रदान करूँगा, और आप मेरी दृष्टि में सदैव अनुग्रह पाएंगी।"

मरियम का स्वर दृढ़ता और शोक दोनों से कांप रहा था जब उन्होंने उत्तर दिया, "*मुझे अपनी कलीसिया की रक्षा करने हेतु ज्ञान और शक्ति प्रदान करें।*"

प्रभु के वचनों से प्रोत्साहित होकर, मरियम अडिग खड़ी हुईं और घोषणा की, "*चूँकि आपने मुझे सुदृढ़ किया है और मुझे दी गई शक्ति की पुनः पुष्टि की है, इसलिए अब मैं लूसिफ़ेर और उसके सभी दुष्ट सेवकों को आज्ञा देती हूँ कि वे पाताल की गहराइयों में उतर जाएँ और तब तक मौन रहें जब तक आपकी दिव्य इच्छा उन्हें लौटने की अनुमति न दे।*"

यरूशलेम की दीवारों के परे, आकाश में एक उज्ज्वल ज्योति उभर आई, जिसने अंधकार को पीछे धकेल दिया और एक विशाल छाया पृथ्वी की गहराइयों में समा गई। वातावरण उस सामर्थ्य से कांप उठा जब मरियम ने आगे कहा,

"अब, मेरे पुत्र, यदि आपकी यही इच्छा है, तो यहाँ उपस्थित स्वर्गीय दूतों में से किसी एक को जाने दें और पतरस को उसके कारागार से मुक्त कराएं।"

पतरस की कोठरी के भीतर, जब वे गहरी निद्रा में थे, उनके सिरहाने एक सौम्य और प्रकाशमय स्वर्गदूत प्रकट हुआ। उस स्वर्गीय प्राणी ने बड़े ही मृदु स्वर में उनसे कुछ फुसफुसाया और फिर सोए हुए पहरेदारों के बीच से उन्हें चुपचाप बाहर ले आया, और मुक्ति की ओर उनका मार्गदर्शन किया। तत्पश्चात, भारी हृदय के साथ माता मरियम का स्वर अंतर्वेदना और करुणा से भर उठा, जब उन्होंने अपने सम्मुख उपस्थित उस कठिन मार्ग के विषय में प्रश्न किया।

"और अब, मेरे प्रभु, अत्यंत गहन शोक के साथ मैं पूछती हूँ, क्या मुझे आपकी प्रतिछाया में रचे गए एक प्राणी पर भी न्याय सुनाना होगा? आरम्भ से ही मैंने कभी उनके प्रति प्रतिशोध की इच्छा नहीं रखी; इसके विपरीत, मेरा हृदय तो घोर अधर्मियों के उद्धार के लिए भी व्याकुल रहता है।"
मसीह ने नपे-तुले और गंभीर स्वर में उत्तर दिया, "*हेरोदेस उन लोगों में से है जिनके विषय में पूर्वज्ञान है, और अपने कठोर हृदय के कारण वह किसी भी मार्गदर्शन से विचलित नहीं होता। वह न तो शिक्षा की खोज करेगा और न ही उद्धार के अनुग्रह को स्वीकार करेगा, चाहे आपके प्रयास कितने ही अधिक क्यों न हों। आपकी दया केवल उनके लिए सुरक्षित होनी चाहिए जो उसे ग्रहण करने के इच्छुक हैं और जो आपकी शक्तिशाली मध्यस्थता की याचना करते हैं।*"

संकल्प और अश्रुओं के संगम के साथ मरियम ने आगे कहा, "*हेरोदेस की इस आत्मा को बचाने के लिए मैं अनेक बार मृत्यु स्वीकार कर लेती, परंतु उस परम न्यायप्रिय ईश्वर की साक्षी में, मैं उसे उसी मृत्यु का दंड सुनाती हूँ जिसका वह पात्र है, जिससे कि वह अपनी रची हुई बुराइयों को कार्यान्वित कर और भी भयानक यातनाओं का भागी न बने।*"

हेरोदेस के उस उदास कक्ष में, वही हुआ जो अनिवार्य था। अचानक रोग से ग्रसित होकर हेरोदेस बीमार पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई। हेरोदेस की मृत्यु ने महारानी को अगाध शोक से भर दिया, क्योंकि वे जानती थीं कि अब किसी को भी पुनः ऐसा दंड सुनाने के लिए नहीं बुलाया जाना चाहिए।

तत्पश्चात, मसीह अपनी माता के पास से विदा हुए, और उन्हें अपने कृत्यों के भार तथा ईश्वरीय न्याय के उत्तरदायित्व पर विलाप करने के लिए छोड़ दिया।

समय बीतता गया, और इफिसुस में अपने प्रार्थना-कक्ष की शांत पवित्रता में, मरियम योहन के साथ बैठी थीं जब वे पतरस द्वारा भेजा गया

एक पत्र ऊंचे स्वर में पढ़ रहे थे। चर्मपत्र की कोमल सरसराहट और प्रार्थनाओं की फुसफुसाहट उस स्थान में गूँज रही थी जब उन्होंने पढ़ा: "*परमेश्वर की कुंवारी माता मरियम के चरणों में, विश्वासियों के मध्य आपके पुत्र की शिक्षाओं के विषय में कुछ संदेह और मतभेद उत्पन्न हो गए हैं, कि क्या मूसा के उस प्राचीन विधान का पालन अब भी उनकी शिक्षाओं के साथ अनिवार्य है। वे हमसे मार्गदर्शन चाहते हैं जिससे कि हम वह घोषित कर सकें जो हमने साक्षात दिव्य गुरु के मुख से सुना था।*"

"*मैं अब यरूशलेम की यात्रा कर रहा हूँ, और अन्य जन भी विभिन्न नगरों से वहाँ पहुँच रहे हैं। आपकी सहायता से, हम वह सब स्थापित करेंगे जो पवित्र विश्वास और अनुग्रह के विधान की पूर्णता के लिए उत्तम होगा। मसीह में आपका सेवक, पतरस।*"

माता मरियम की आँखें दृढ़ संकल्प से चमक उठीं और उन्होंने बड़ी कोमलता से उत्तर दिया, "*यह उचित ही है कि हम इस सभा में सम्मिलित होने के लिए प्रस्थान की तैयारी करें। कलीसिया के प्रधान की आज्ञा का पालन करना ही न्यायोचित और श्रेष्ठ है।*"

तत्पश्चात, 'अंतिम व्यालू' वाले उस पावन कक्ष में, महारानी और अन्य भक्त स्त्रियों ने उस पवित्र स्थान को स्वच्छ करने और सजाने में बड़ा परिश्रम किया, जिससे कि आगामी 'पवित्र मिस्सा' की तैयारी की जा सके। वेदी को बड़े ही जतन से सजाया गया, और माता मरियम ने स्वयं उस पवित्र 'पवित्र पात्र' को तब तक माँजा जब तक कि वह ईश्वरीय ज्योति से जगमगा न उठा। जैसे-जैसे प्रेरित और विश्वासी एकत्र होने लगे, वह कक्ष श्रद्धा और प्रतीक्षा की भावना से भर गया। पतरस माता के समीप आए, और उन्हें शांत भक्ति में घुटने टेके हुए पाया।

सच्चे हृदय की निष्कपटता के साथ मरियम ने कहा, "*हे मेरे पुत्र की कलीसिया के प्रतिनिधि, मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान करें।*"

पतरस ने उनके ऊपर क्रूस का चिह्न बनाया और बड़ी ही सज्जनता से उन्हें खड़े होने में सहायता की। "*माता, आपको देखकर मेरा हृदय अत्यंत प्रसन्न है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपने अपने पुत्र से परामर्श प्राप्त किया होगा, जैसा कि मैंने भी किया है। आइए, हम उनके पवित्र नाम में, उसी रीति से प्रार्थना करें जो उन्होंने हमें सिखाई है। हम मिलकर उस 'परम त्रित्व' के दिव्य ज्ञान के लिए प्रार्थना करेंगे कि वे हमें अपने शाश्वत अनुग्रह से प्रेरित करें।*"

जब 'पवित्र मिस्सा' का बलिदान चढ़ाया जा रहा था, तब 'पवित्र आत्मा' की उपस्थिति साक्षात प्रकट हुई। एक भव्य ज्योति ने माता मरियम के हृदय को आलोकित कर दिया, और उस ईश्वरीय प्रकाश में उन्होंने अपनी उन सभी याचनाओं और प्रार्थनाओं की स्वीकृति का अनुभव किया, जो उन्होंने कलीसिया के लिए इतनी प्रगाढ़ता से अर्पित की थीं। उस क्षण ऐसा प्रतीत हुआ मानो 'दिव्य इच्छा' की आज्ञाएँ ही पूर्ण हो रही हों, जिससे यह सुनिश्चित हो गया कि सुसमाचार का विश्वास और उनका संपूर्ण पवित्र विधान इस संसार में स्थापित होकर रहेगा।

स्वर्गदूत और प्रेरित, उस ओजस्वी दृश्य को देखकर विस्मय से भर गए और स्तुति गान में एक साथ स्वर मिलाने लगे। "*पवित्र, पवित्र, पवित्र और सर्वशक्तिमान हैं आप, हे सामर्थ्य और पराक्रम के प्रभु परमेश्वर। स्वर्ग और पृथ्वी आपकी महिमा से परिपूर्ण हैं!*" उन्होंने एक स्वर में यह घोषणा की, और उनकी आनंदपूर्ण पुकार उस पावन कक्ष में प्रतिध्वनित होने लगी।

इस प्रकार, शोक और ईश्वरीय दया, न्याय और उद्धार के उस अद्भुत मिलन के बीच, स्वर्गीय योजना साकार होती गई; जहाँ प्रत्येक क्षण विश्वास की उस अटूट शक्ति और रहस्य का प्रमाण दे रहा था।

अध्याय इकतालीस

सुसमाचार

माता मरियम के कक्ष की उस शांत पवित्रता में, इससे पूर्व कि अन्य प्रेरित वहाँ एकत्र होते, उन्होंने पतरस को शांत अधिकार के साथ संबोधित किया। *"मुख्य महायाजक और कलीसिया के प्रधान होने के नाते, आप संसार के मुक्तिदाता के कार्यों और उनकी शिक्षाओं के लेखन हेतु चार जनों को नियुक्त करें।"* उसी क्षण, अन्य प्रेरित वहाँ प्रविष्ट हुए, और उनके मुखों पर श्रद्धा और संकल्प के भाव झलक रहे थे।

तब पतरस ने घोषणा की, *"मैथ्यू, हमारे प्रिय भाई, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर तत्काल अपना सुसमाचार लिखना आरम्भ करेंगे। इसी प्रकार, मारकुस दूसरा और लूका तीसरा सुसमाचार लिखेंगे। हमारे प्रिय भाई योहन, हमारे मुक्तिदाता और गुरु के रहस्यों को लिखने वाले चौथे और अंतिम होंगे।"*

कुछ समय पश्चात, उस साधारण से कक्ष में जहाँ मैथ्यू कठिन परिश्रम कर रहे थे, उन्होंने स्वयं को विचारों के द्वंद्व में पाया। वे अपने आसन से उठे और व्याकुलता में इधर-उधर टहलने लगे, और अंततः एक लंबी आह भरते हुए पुनः बैठ गए। उनका कार्य रुक गया था, और उनकी उस निराशा के क्षण में, माता मरियम उनके सम्मुख प्रकट हुईं। मैथ्यू ने अत्यंत भावुक नेत्रों से ऊपर देखा और कहा,

"आपने मेरी प्रार्थनाएँ सुन ली हैं, हे अति पवित्र माता। मैं आपसे यह ज्ञान चाहता हूँ कि मुझे आपके विषय में किस प्रकार लिखना चाहिए। मैं पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ, फिर भी अब तक मैंने एक शब्द भी नहीं लिखा है।"

मरियम का स्वर अत्यंत कोमल था जब उन्होंने अपना मार्गदर्शन प्रदान किया।

"यह उत्तम है कि आप उनसे बुद्धि मांग रहे हैं जो इसे देने के सर्वाधिक योग्य हैं। फिर भी, मेरे विषय में, आप केवल वही लिखें जो 'देहधारण', यानी 'शब्द के देह बनने' के रहस्यों और उनकी कलीसिया की नींव को प्रकट करने के लिए अनिवार्य हो। एक बार जब यह विश्वास स्थापित हो जाएगा,

तो सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने समय पर दूसरों को चुनेंगे, जो विश्वासियों पर उन चमत्कारों और आशीषों को प्रकट करेंगे जो उन्होंने मुझमें पूर्ण किए हैं।"

इस प्रकार, वर्ष 42 ईस्वी में, मत्ती का सुसमाचार इब्रानी भाषा में लिखा गया, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए मसीह का सत्य सुरक्षित हो गया।

फलिस्तीन की एक शांत पहाड़ी पर, प्रेरित मारकुस अपने लेखन में लीन बैठे थे। कार्य करते समय, वे भी इस द्वंद्व से जूझ रहे थे कि उन्हें 'अति पवित्र माता' के विषय में क्या लिखना चाहिए, कि तभी अचानक एक महान ज्योति उन पर चमक उठी, और उन्होंने स्वाभाविक रूप से घुटने टेक दिए; उनका मुख हर्ष से दीप्तिमान था। इसी समय उन्हें माता की उस अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका के विषय में निर्देश दिए गए। मारकुस ने उन निर्देशों को शिरोधार्य किया और फलिस्तीन में रहते हुए इब्रानी में अपना सुसमाचार लिखा, और बाद में रोम के सुसमाचार प्रचार हेतु लातिन भाषा में उसका एक संक्षिप्त रूप तैयार किया।

मत्ती के कार्य को चार वर्ष बीत चुके थे, और दो वर्ष पश्चात मारकुस ने अपना कार्य पूर्ण किया; वह वर्ष 48 ईस्वी था और 'कुंवारी मरियम' स्वयं अपने सांसारिक जीवन के तिरसठवें वर्ष में पहुँच चुकी थीं।

एक शांत कक्ष में, प्रेरित लूका अपने लेखन से क्षण भर के लिए रुके और श्रद्धापूर्वक साष्टांग दण्डवत हो गए। उस गंभीर क्षण में माता मरियम उनके सम्मुख प्रकट हुईं। लूका ने बड़ी नम्रता से पूछा, "*मेरे प्रभु की कुंवारी माता, आपके विषय में लिखने के आपके निर्देशों को सुनकर, अब मैं और अधिक स्पष्टता से बोलने की अनुमति चाहता हूँ, जिससे कि मैं 'देहधारण' की रीति और मसीह की माता के रूप में आपकी भूमिका का वर्णन कर सकूँ।*"

अत्यंत सौम्य किंतु दृढ़ विवेक के साथ, मरियम ने उत्तर दिया, "*उन शब्दों का प्रयोग करें जो आपके सुसमाचार के उद्देश्य के प्रति सत्यनिष्ठ हों। मेरे पुत्र, यदि 'पवित्र आत्मा' आपको किसी विशेष अनुग्रह के साथ लिखने के लिए प्रेरित करते हैं, तो उन्हीं के मार्गदर्शन का अनुसरण करें।*"

लूका ने यूनानी भाषा में लिखते हुए, अपने सुसमाचार में अपनी स्वर्गीय माता की उस छवि को सुरक्षित रखा, सौंदर्य का वह दर्शन जिसने उन्हें बाद में 'अखिया' में रहने के दौरान भी निरंतर प्रेरित किया।

तत्पश्चात, अपने उस चिर-परिचित कक्ष की सीमाओं के भीतर, मरियम ने योहन से वार्तालाप किया, जिन्हें मसीह ने अपनी मृत्यु के पश्चात माता के साथ रहने का निर्देश दिया था। उन्होंने बड़े आदर और सम्मान के साथ कहा, *"चूँकि यह हमारे प्रभु के 'दुःखभोग' की वर्षगाँठ है, इसलिए मैं इसे*

बृहस्पतिवार, जब उन्होंने हमारे साथ 'अंतिम भोज' किया था, से लेकर रविवार तक, जब वे मृतकों में से जी उठे थे, विधिपूर्वक मनाने के लिए आपकी अनुमति चाहती हूँ।" योहन ने शांत निश्चय के साथ उत्तर दिया, *"माता, मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि इस समय के दौरान आपको कोई बाधा न पहुँचे।"*

अपने निजी कक्ष में जाते हुए, मरियम स्मृतियों में लीन हो गईं; जैसे-जैसे उनके हृदय में प्रभु का 'दुःखभोग' साकार होने लगा, उन्होंने अपने दिव्य पुत्र की प्रत्येक गतिविधि, प्रत्येक कार्य और प्रत्येक कष्ट को पुनः अनुभव किया। जब स्वर्गारोहण का क्षण आया, तो स्वर्गदूतों की मंडलियों ने उन्हें घेर लिया, और उनके गौरवशाली स्तुति-गानों ने उस पावन विदाई की भव्यता को प्रतिध्वनित किया।

दूसरे दिन, मरियम अपने साधारण से निवास के फर्श पर घुटने टेककर बैठी थीं और बड़ी लगन से प्रेरितों तथा याजकों के लिए अलंकृत 'परमप्रसाद के वस्त्र' सी रही थीं, ऐसे वस्त्र जो उनके दैनिक जीवन में पहने जाने वाले वस्त्रों से सर्वथा भिन्न थे। उस शांत कक्ष में उनकी सुई और धागे की लयबद्ध ध्वनि गूँज रही थी। जब योहन ने भीतर प्रवेश किया, तो वे आश्चर्यचकित रह गए और बोले, *"ये तो अत्यंत भव्य हैं। आप इन्हें किस राजा के लिए बना रही हैं?"* मरियम ने मंद मुस्कान के साथ उत्तर दिया, *"ये वे वस्त्र होंगे जिन्हें आप और अन्य याजक तब पहनेंगे जब आप 'पवित्र मिस्सा' के बलिदान का उत्सव मनाएंगे।"*

मरियम ने इस अत्यंत पवित्र कार्य में अपने स्वर्गदूतों की सहायता लेने से भी इनकार कर दिया और अपने ही हाथों से इन वस्त्रों को तैयार करने में कठिन परिश्रम किया। उन्होंने दान से एकत्रित धन से उत्तम मलमल और रेशम जैसी सामग्री खरीदी थी, और इस पावन कर्तव्य के प्रति सम्मान प्रकट करने हेतु वे निरंतर घुटनों के बल बैठकर अथक परिश्रम करती रहीं। जब उन्होंने कार्य पूर्ण कर लिया, तो अंतिम आशीष के रूप में उन्होंने प्रत्येक वस्त्र का चुंबन लिया।

इसके दस वर्ष पश्चात, योहन ने अपने मुक्तिदाता, राजा और उनकी माता की इस पावन कथा को लिखने का वह पवित्र उत्तरदायित्व पूर्ण किया। उन्होंने अपना सुसमाचार यूनानी भाषा में लिखा, जिसे उन्होंने वर्ष 58 ईस्वी में 'एशिया माइनर' में रहने के दौरान पूर्ण किया, जो माता

मरियम की मृत्यु और उनके 'स्वर्गोदग्रहण' के पश्चात का समय था।

इन पवित्र सत्यों से अपमानित और पराजित होकर, लूसिफ़ेर ने शीघ्र ही ईश्वर के वचन को विकृत करने के लिए पाखंड फैलाना आरम्भ कर दिया। इसके उत्तर में, योहन का सुसमाचार एक शक्तिशाली रक्षा-कवच के रूप में खड़ा रहा, जिसके शब्द दृढ़तापूर्वक उन भ्रांतियों के विरुद्ध थे जिन्हें शैतान फैलाने का प्रयास कर रहा था।

अध्याय बयालीस
हमारी परमप्रिया की मृत्यु

माता मरियम के निजी कक्ष में, वे प्रार्थना में साष्टांग दण्डवत थीं और अपनी भक्ति की नीरवता में डूबी हुई थीं। अचानक, स्वर्गदूतों के संगीत की चिर-परिचित मधुर स्वर-लहरियाँ वातावरण में गूँज उठीं, जिससे विस्मय में भरकर वे अपने घुटनों के बल खड़ी हो गईं। उस ज्योतिर्मय क्षण में, जिब्राइल उनके सम्मुख प्रकट हुए; उनका स्वरूप उतना ही प्रभावशाली और तेजस्वी था जितना उनके स्वयं के 'अकलंक गर्भाधान' के समय था। ईश्वरीय अधिकार से पूर्ण उनकी वाणी ने घोषित किया:

"हमारी महारानी और स्वामिनी, सर्वशक्तिमान और पवित्रों के पवित्र प्रभु ने हमें अपने स्वर्गीय दरबार से भेजा है, ताकि वे आपके नाम पर इस नश्वर जीवन में आपकी पृथ्वी की तीर्थयात्रा और वनवास के सुखद अंत की घोषणा कर सकें। आज की तिथि से ठीक तीन वर्ष पश्चात, आप अपने प्रिय पुत्र, हमारे प्रभु से पुनः मिल जाएंगी, जो आपकी उपस्थिति के लिए लालायित हैं।"

मरियम का हृदय हर्ष और पूर्ण समर्पण से भर उठा जब उन्होंने उत्तर दिया, "*देख, मैं प्रभु की दासी हूँ; तेरे वचन के अनुसार मुझमें वैसा ही हो।*" इन शब्दों के साथ ही, स्वर्गदूतों के एक समूह ने उन्हें घेर लिया। उनकी प्रकाशमय आकृतियों ने उन्हें कोमलता से भूमि से ऊपर उठा लिया, और वे उन्हें एक गरिमामय नृत्य में घुमाने लगे, जबकि माता की आत्मा अपने प्रिय पुत्र के साथ पुनर्मिलन के उस वचन पर आनंदित हो रही थी।

तीन वर्ष पश्चात, अपने घर के बगीचे के उस एकांत में, मरियम को खिली हुई वनस्पतियों के बीच अकेले देखा गया। 'पवित्र माता' ने अपना पावन कार्य कभी बंद नहीं किया; वे निरंतर बीमारों और मरणासन्न लोगों की सेवा करती रहीं, उन्हें सांत्वना और शांति प्रदान करती रहीं, और उन आत्माओं के लिए बड़े उत्साह से प्रार्थना करती रहीं जो उनके पुत्र तक पहुँचने का मार्ग खोजने के लिए संघर्ष कर रही थीं। जैसे-जैसे उनकी सांसारिक यात्रा अपने अंत के निकट पहुँचने लगी, मरियम ने दूर-दराज़ के देशों में फैले हुए अपने प्रिय प्रेरितों को स्वर्गदूतों के माध्यम से संदेश

भेजना आरम्भ कर दिया।

अपनी मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व, मरियम ने अत्यंत कृतज्ञता के साथ यह प्रार्थना अर्पित की: *"सर्वशक्तिमान पिता, मैं आपको ही समस्त अस्तित्व के एकमात्र सत्य सृजनहार और पालनहार के रूप में स्वीकार करती हूँ। इस संसार की वस्तुओं में से मेरे पास पीछे छोड़ने के लिए कुछ भी नहीं है, क्योंकि मैंने आपके अतिरिक्त कभी किसी वस्तु पर न तो अधिकार जताया और न ही किसी से प्रेम किया। मैं स्वर्ग, नक्षत्रों, ग्रहों और समस्त सृष्टि को धन्यवाद देती हूँ, क्योंकि उन्होंने मेरी अपनी योग्यता से कहीं बढ़कर मुझे संभाले रखा है।"*

मैं प्रार्थना करती हूँ कि वे उसी प्रकार आपकी सेवा और महिमा करते रहें जिसके लिए उनकी रचना की गई है, और मानव जाति उन्हें उसी सुरक्षा और प्रेम के साथ संजोए रखे जैसा मैंने रखा है।

जो पुण्य और भंडार मैंने आपके अनुग्रह के माध्यम से, अपने कार्यों और प्रयासों द्वारा प्राप्त किए हैं, उन्हें मैं आपकी पवित्र कलीसिया के लिए छोड़ती हूँ। आपके आशीर्वाद के साथ, मैं उन्हें इस आशा में अर्पित करती हूँ कि वे और भी बढ़ें। मैं उन्हें प्रेरितों और वर्तमान तथा भविष्य की पीढ़ियों के सभी याजकों को समर्पित करती हूँ, जिससे कि उनके माध्यम से वे सत्य सेवक बन सकें, अपने बुलावे के योग्य, बुद्धि, सद्गुण और पवित्रता से परिपूर्ण, ताकि वे उन आत्माओं का मार्गदर्शन और पवित्रीकरण कर सकें जिन्हें आपने अपने रक्त से छुड़ाया है।

मेरे प्रभु, यह मेरा अंतिम अर्पण है, जो सदैव आपकी दिव्य इच्छा के अधीन है।" तब एक कोमल और अधिकारपूर्ण वाणी ने उनकी प्रार्थना का उत्तर दिया: "वैसा ही हो जैसा आप चाहती और आज्ञा देती हैं।"

उनके स्वर्ग-प्रस्थान की उस भोर को, प्रेरित उनके कक्ष में एकत्र हुए। वे पिछली रात ही पहुँच चुके थे; योहन ने सबसे पहले उनका स्वागत किया, जबकि लूका एक स्वर्गदूत के पहरे में आए थे और पतरस सुदूर देशों से लौटे थे। उस पवित्र स्थान में, मरियम उन सबके सम्मुख घुटनों के बल बैठीं। एक-एक करके, उन सबने उन्हें आशीर्वाद दिया और झुककर

उनके हाथों का चुंबन लिया, जबकि शोक और श्रद्धा के अश्रु अविरल बह रहे थे। अत्यंत कोमलता और पूर्णता भरे स्वर में, मरियम ने उन्हें संबोधित किया:

मेरे प्रिय बालकों और आदरणीय स्वामियों, तुम सदैव मेरी आत्मा में बसे रहे हो और मेरे हृदय पर अंकित रहे हो। मैंने तुम्हें उस कोमल प्रेम और परोपकार के साथ प्रेम किया है जो मेरे दिव्य पुत्र ने मुझे प्रदान किया था; क्योंकि तुममें, उनके चुने हुए मित्रों में, मैंने उन्हीं के दर्शन किए हैं।

मेरे बच्चों, कलीसिया से प्रेम करना और एक-दूसरे से प्रेम के उसी बंधन में बंधे रहना जिसे तुम्हारे गुरु ने तुम्हारे भीतर स्थापित किया है। हे पतरस, पवित्र पोप, मैं अपने पुत्र योहन और शेष सभी को आपको सौंपती हूँ।"

उसी क्षण, स्वर्गदूतों की एक मंडली गान करने लगी, उनके सुरीले स्वर गूँज उठे, "*प्रणाम मरियम, कृपा पूर्ण, धन्य है आपका नाम।*" माता मरियम अपनी शय्या पर लेट गईं और उन्होंने अपने दोनों हाथों को जोड़कर बड़े दृढ़ भाव से अपने हृदय पर रख लिया।

जैसे ही उन्होंने ऐसा किया, एक प्रज्वलित और दैदीप्यमान ज्योति ने उनके संपूर्ण अस्तित्व को अपने घेरे में ले लिया। वह प्रार्थना-कक्ष एक स्वर्गीय संगीत से भर गया, ऐसी मधुर ध्वनियाँ जो किसी भी नश्वर कान की कल्पना से कहीं अधिक गौरवशाली थीं। उनके चारों ओर, प्रेरित बिलख-बिलख कर रो रहे थे; उनके चेहरों पर विस्मय, शोक और परमानंदपूर्ण श्रद्धा का अनूठा संगम था। माता अपनी शय्या पर लेटी हुई थीं और उन्होंने अपने हाथों को जोड़कर बड़े दृढ़ भाव से अपने हृदय पर रख लिया था। उसी क्षण, एक दीप्तिमान प्रकाश ने उन्हें पूर्णतः ढक लिया और वह स्थान उस संगीत से गूँज उठा जिसे केवल स्वर्ग ही रच सकता है।

बाहर, वह घर भी उसी उज्ज्वल ज्योति से सराबोर हो गया, जबकि स्वर्गदूतों का संगीत अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँच गया। मरियम ने धीरे से अपनी आँखें खोलीं, और उनके सम्मुख उनके पुत्र का सौम्य और प्रेमपूर्ण मुख मण्डल प्रकट हुआ। प्रभु का स्वर कोमल और निमंत्रण देता हुआ प्रतीत हुआ:

"*उठो, मेरी प्रियतमा, मेरी कपोती, मेरी सुंदरी, चली आओ; देखो, शीत*

ऋतु बीत चुकी है।" अत्यंत शांत स्वीकृति के साथ, मरियम ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा आपके हाथों में सौंपती हूँ।"

और इन अंतिम शब्दों के साथ, मरियम ने सदैव के लिए अपनी आँखें मूँद लीं। उनकी आत्मा उनके शरीर से निकलकर अपने पुत्र के उस ज्योतिर्मय मुख की ओर बढ़ने लगी, मानो प्रकाश के गोलक ऊपर की ओर तैर रहे हों; और वह कक्ष एक पारलौकिक वैभव की अवस्था में छूट गया। उनका पार्थिव स्वरूप, जिसकी रक्षा अब एक सहस्र स्वर्गदूत कर रहे थे, प्रकाशमान महिमा के एक स्तंभ के रूप में शेष रहा।

तब पतरस ने उस जनसमूह को कक्ष से बाहर निकाला। शीघ्र ही, निकटवर्ती स्थान और संपूर्ण उद्यान में लोगों ने देखा कि वह पावन ज्योति अब भी उस घर के ऊपर चमक रही है। योहन के साथ परामर्श करने के पश्चात, पतरस उन दो भक्त स्त्रियों के समीप आए, वे दो मरियम, जिन्होंने अंतिम वर्षों में 'धन्य माता' के सानिध्य में रहकर निष्ठापूर्वक उनकी सेवा की थी। उन्होंने उनसे कहा:

"आपको उन्हें अभिषिक्त करना है और उन्हें दफनाने (Burial) के लिए तैयार करना है। इन्हीं सुगंधित तेलों का प्रयोग करें, जिन्हें हमारी महारानी ने अपने पुत्र, हमारे प्रभु के लिए उपयोग किया था।"

उन्होंने उन्हें छोटी शीशियाँ और पात्र सौंपे, जबकि योहन ने कफन के वस्त्र भेंट किए। योहन ने आगे कहा:

"हमारी माता की इस शुद्ध और पवित्र देह को लपेटने के लिए इनका उपयोग करें। अत्यंत सावधानी बरतें और उनकी गरिमा के प्रति उच्चतम शील और सम्मान बनाए रखें।"

उन स्त्रियों ने उन पावन वस्तुओं को स्वीकार किया और मरियम के कक्ष की ओर लौट गईं। वह कमरा अब भी दिव्य ज्योति से जगमगा रहा था; जैसे ही वे धीरे-धीरे मध्य की ओर बढ़ीं, उनके हाथ उस शय्या को खोजने के लिए आगे फैले हुए थे। किंतु वह प्रखरता इतनी अपार थी कि उनके हाथ उस दीप्ति में खो गए, और घबराहट में फुसफुसाते हुए वे शीघ्र ही उस कक्ष से बाहर निकल आईं।

निकटवर्ती कक्ष में पतरस और योहन के पास दौड़ते हुए पहुँचकर, मरियम मग्दलेनी घुटनों के बल गिर पड़ीं और व्याकुलता में पतरस का हाथ थाम लिया।

"पतरस, हमें अपनी स्वामिनी की देह नहीं मिल रही है। उस कमरे का प्रकाश अंधा कर देने वाला है। हम उस शय्या तक पहुँचने का मार्ग भी नहीं खोज पाए कि आपकी आज्ञा अनुसार उनकी देह को तैयार कर सकें।"

पतरस ने योहन की ओर एक दृष्टि डाली और फिर मरियम मग्दलेनी को सहारा देकर खड़ा किया। उन्होंने कहा, *"योहन, मेरे साथ आओ,"* और वे उस कक्ष के द्वार की ओर बढ़े। कमरे में उपस्थित अन्य लोग मौन और प्रतीक्षापूर्ण भाव से देख रहे थे जब योहन ने धीरे से द्वार खोला, जिससे एक ऐसी चकाचौंध कर देने वाली ज्योति प्रकट हुई कि हर कोई विस्मय में पड़ गया। वे दोनों पुरुष भीतर प्रविष्ट हुए और द्वार बंद कर लिया; उस कक्ष के भीतर उन्होंने बड़ी तन्मयता से खोज की, परंतु उस प्रखर चमक के बीच उनकी देह अलभ्य ही बनी रही। तब व्याकुल होकर पतरस ने परमेश्वर को पुकारा,

"मेरे पिता, अपनी 'परमप्रिया' की देह को हम पर प्रकट करें, जिससे कि हम उन तेलों और कफन के साथ उनकी उचित सेवा कर सकें, जिनका उपयोग आपके पुत्र, हमारे प्रभु के लिए किया गया था।" तब एक ईश्वरीय उत्तर मिला, जो सौम्य था किंतु दृढ़: *"पतरस, योहन, इस पवित्र देह को न तो अनावृत किया जाए और न ही स्पर्श किया जाए। और न ही इसे देखा जाए।"*

उसी पावन क्षण में, शय्या के ऊपर की वह मंद चमक एक अत्यंत कोमल गुलाबी आभा में बदल गई, जिससे संपूर्ण कक्ष में एक स्वर्गीय गर्माहट फैल गई। पतरस और योहन पर एक सन्नाटा छा गया जब वे उस सौम्य प्रकाश की ओर खिंचे चले गए जिसने मरियम के स्वरूप को घेर रखा था, जो उस ज्योति के भीतर बमुश्किल दिखाई दे रहा था। अत्यंत कोमल श्रद्धा के साथ वे आगे बढ़े, और भक्ति से कांपते हुए हाथों से उन्होंने उनके अंगरखे के कोनों को पकड़कर उन्हें ऊपर उठाया। उनकी देह भारहीन प्रतीत हो रही थी, मानो वह किसी अदृश्य स्वर्गीय समीर पर टिकी हो, जिस पर इस संसार के बोझ का कोई प्रभाव न था।

अत्यंत सावधानी के साथ चलते हुए, उन्होंने उन्हें एक अर्थी पर लिटा दिया; उनकी उपस्थिति अब भी एक परलौकिक शांति में लिपटी हुई थी। अत्यंत गंभीर गरिमा के साथ, उन्होंने उनके ऊपर एक चादर डाल दी;

उनकी प्रत्येक चेष्टा शोक और विस्मय से भरी थी। उस क्षण में, जो गहन दुःख का था किंतु अकथनीय अनुग्रह से भरा था, 'धन्य माता' के पार्थिव अवशेष ईश्वरीय रहस्य के पर्दे में समा गए, जो उनकी पवित्रता और उस शाश्वत ज्योति का अंतिम प्रमाण था जो सदैव के लिए कलीसिया पर चमकती रहेगी।

अध्याय तैंतालीस
मरियम का स्वर्गारोहण

यरूशलेम की गलियां संध्याकालीन आकाश के नीचे मौन थीं, और दिन के उजाले के अंतिम चिह्न बढ़ते हुए अंधकार में ओझल हो रहे थे। तभी, एक-एक करके छोटे-छोटे दीप जलने लगे, जो साधारण घरों की खिड़कियों से टिमटिमाते हुए दूर के तारों के समान प्रतीत हो रहे थे।

एक छोटे से निवास में, एक माता अपने ज्वर से तड़पते हुए बालक को गोद में लिए बैठी थी, और उसका चेहरा चिंता की छाया से घिरा था। उसके समीप, एक छोटा बालक एक मोमबत्ती थामे हुए था, जिसकी लौ रात की शीतल वायु में कांप रही थी। शांत दृढ़ निश्चय के साथ वे बाहर निकले, और उस मोमबत्ती की गुनगुनी चमक ने उनकी आकृतियों को सौम्य प्रकाश से सराबोर कर दिया।

वे अकेले नहीं थे। द्वारों और गलियों से अन्य लोग भी निकल आए; जिनमें से कुछ अपाहिज थे और कुछ दृष्टिहीन, और उनमें से प्रत्येक एक कोमल ज्योति थामे हुए था। उनकी ये टिमटिमाती रोशनी अंधकार के बीच जुगनुओं की भांति गुंथी हुई प्रतीत हो रही थी। उनका यह मौन जुलूस बढ़ता गया, मानो प्राचीन गलियों से होकर शांत विश्वास की कोई नदी बह रही हो, और उनके कोमल कदमों की आहट पत्थरों से टकराकर फुसफुसाहट पैदा कर रही थी। यद्यपि वे कष्ट में चल रहे थे, किंतु वे आशा के साथ बढ़ रहे थे; उनकी मोमबत्तियाँ एक प्रार्थना थीं और उनकी यह यात्रा उस विश्वास का प्रमाण थी जो उन्हें आगे लिए जा रहा था।

एक अन्य घर में, एक स्त्री अपने पति का हाथ खींच रही थी और उसे उस बढ़ती हुई भीड़ में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित कर रही थी। उसने विरोध किया, और उसका चेहरा संदेह के बादलों से घिरा था। *"मैं क्यों जाऊँ? इससे क्या लाभ होगा?"* वह बड़बड़ाया। किंतु उसकी पत्नी का संकल्प अटल था। *"कृपया,"* उसने विनती की, *"बस मेरे साथ चलें।"* अनिच्छा से, वह उसके पीछे हो लिया, और उसके कदम संशय के बोझ से भारी थे।

सड़कों पर लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा, और उनकी मोमबत्तियाँ एक गुनगुना, स्वर्णिम प्रकाश बिखेर रही थीं। रात्रि के सन्नाटे में एक भजन की कोमल गूँज उठी; वह एक मधुर स्वर-लहरी थी जो मानो उनकी प्रार्थनाओं को स्वर्ग की ओर ले जा रही थी। वह पदयात्रा बढ़ती गई और माता मरियम के घर की ओर मुड़ गई।

जब वे वहाँ पहुँचे, तब प्रेरित अत्यंत श्रद्धा के साथ उनकी देह को लेकर बाहर आए।

वे यहोसापात की घाटी की ओर अपनी गंभीर यात्रा पर निकल पड़े, और जनसमूह शांत भक्ति के साथ उनके पीछे-पीछे चलने लगा। जैसे-जैसे वे नगर से होकर गुजरे, चमत्कार प्रकट होने लगे। रोगी स्वस्थ हो गए, दृष्टिहीनों को उनकी दृष्टि प्राप्त हुई, और पीड़ितों को शांति मिली। चिकित्सालय और कारागार दिव्य ऊर्जा से कांपते हुए प्रतीत हो रहे थे, क्योंकि मनुष्यों के शरीर, मन और आत्माएं पूर्णतः निरोग और शुद्ध हो रही थीं। वातावरण विस्मय और कृतज्ञता से भर उठा था, जो विश्वास की शक्ति का एक जीवंत प्रमाण था।

यहोसापात की उस कब्र पर पहुँचकर, पतरस और योहन ने कोमलता से माता मरियम की देह को विश्राम के लिए लिटा दिया। स्वर्गदूतों ने, जो अधिकांश लोगों की दृष्टि से ओझल थे, उन शोक संतप्त प्रेरितों की सहायता की; उनकी उपस्थिति उस दुःख के बीच एक बड़ी सांत्वना थी। भीड़ धीरे-धीरे छंट गई, और प्रेरित अपने विचारों के साथ अकेले रह गए। पतरस योहन की ओर मुड़े, और उनका स्वर भावनाओं के बोझ से भारी था। *"आओ, हम कुछ समय उनके पास ही रुकें। मैं अभी उनसे दूर जाने का साहस नहीं जुटा पा रहा हूँ।"*

योहन ने सिर हिलाया, और उनकी आँखें आँसुओं से डबडबा रही थीं। *"उनके स्वयं के पुत्र से बढ़कर कोई मित्र और परामर्शदाता मैंने नहीं जाना। उनकी मुस्कान मेरे हृदय पर अंकित है; मेरे हाथ पर उनके कोमल स्पर्श का अहसास कभी ओझल नहीं होगा।"* प्रेरित फूट-फूट कर रोने लगे, क्योंकि उनका शोक अत्यंत गहरा था। तीन दिनों तक वे उस कब्र के पास ही बने रहे, उन्होंने अन्न-जल का त्याग कर दिया, क्योंकि उनका हृदय पोषण के विषय में सोचने के लिए बहुत भारी था।

तीसरे दिन की भोर में, कुछ असाधारण घटित हुआ। कुछ पुरुष निद्रा में थे, किंतु योहन, पतरस और लूका चौंककर खड़े हो गए क्योंकि उनके ऊपर का आकाश मानो दो भागों में फट गया हो। उमड़ते हुए बादल नीचे उतर आए, और एक वाणी गूँजी, गहन, गुंजायमान और निस्संदेह दिव्य, वह मसीह थे।

"मेरी माता 'अकलंक' गर्भ में आईं, ताकि उनके कुंवारी गर्भ से मैं स्वयं को मानवता के वस्त्रों में लपेट सकूँ। उन्होंने 'मुक्ति' के कार्यों में मेरा सहयोग किया, अतः मुझे उन्हें जीवित उठाना ही होगा, ठीक वैसे ही जैसे मैं मृतकों में से जी उठा था, और उसी समय और उसी घड़ी में। क्योंकि मैं उन्हें समस्त बातों में अपने समान बनाना चाहता हूँ।"

वे उमड़ते हुए बादल उस कब्र तक पहुँचे और पत्थरों को भेदकर भीतर समा गए। एक अत्यंत भव्य ज्योति प्रस्फुटित हुई, जिसने रात्रि के अंधकार को पूर्णतः आलोकित कर दिया। प्रेरित अपने घुटनों के बल गिर पड़े; और उनके मुखमण्डल विस्मय से भर उठे।
उस कब्र के भीतर से 'धन्य कुंवारी मरियम' बाहर आईं, जो दीप्तिमान और महिमामयी थीं, और उन्होंने मसीह का हाथ थाम रखा था। उनके शरीरों से प्रकाश की ऐसी किरणें फूट रही थीं, जिनकी प्रखरता मानो पृथ्वी के प्रत्येक कोने को स्पर्श कर रही हो। वे दोनों एक साथ आकाश की ओर बढ़ चले, और पिता परमेश्वर की वाणी संपूर्ण स्वर्ग में प्रतिध्वनित हुई:

"और ऊपर आएं, मेरी प्रियतमा। ऊपर आएं और मेरे पास लौट आएं।"

प्रेरित टकटकी लगाए देखते रहे, और उनके हृदय हर्ष और वियोग के अनूठे संगम से भर गए, जब मसीह अपनी माता को स्वर्ग में उनके सिंहासन तक ले गए। वहाँ, प्रभु ने उनके शीश पर एक मुकुट सुशोभित किया, अतुलनीय वैभव का एक मुकुट, जिसके रत्न और उभार प्रकाश की पुंज बिखेर रहे थे। यीशु बोले; और उनका स्वर प्रेम और अधिकार से ओत-प्रोत था:

मेरी सत्य और स्वाभाविक माता का उन समस्त प्राणियों पर अधिकार है, जिनकी रचना और उद्धार मेरे द्वारा किया गया है। और उन समस्त वस्तुओं पर जिनका मैं राजा हूँ, वे भी अनंत काल के लिए उनकी वैध और सर्वोच्च महारानी होंगी।

परमेश्वर की वाणी एक बार फिर गूँजी: *"मेरी प्रियतमा, हमारा राज्य आपका है। आपकी शांति का शासन हो।"*

स्वर्ग संगीत की स्वर-लहरियों से गूँज उठा, एक ऐसी स्वर-संगति जिसने संपूर्ण ब्रह्मांड को भर दिया। पृथ्वी से स्वर्ग का वह दृश्य अत्यंत मनमोहक था, जो उस ईश्वरीय प्रेम का स्मरण करा रहा था जिसने उनके जीवन को स्पर्श किया था।

हमारी 'धन्य कुंवारी', समस्त सृष्टि की राजमाता, हमारी 'शांति की महारानी' का स्वर्गारोहण हमारे प्रभु के वर्ष 54 में, 13 अगस्त के दिन हुआ। उनकी मृत्यु ने पृथ्वी पर रहने वाले उनके बच्चों के प्रति उनके प्रेम को कभी समाप्त नहीं किया, और न ही कभी करेगी। वे संकट के समय में हमारा मार्गदर्शन करेंगी, और हमारी रक्षा वैसे ही करेंगी जैसे केवल एक माता ही कर सकती है। वे अपने प्रभु के लिए आत्माओं को एकत्रित करना निरंतर जारी रखेंगी। लूसिफ़ेर के साथ युद्ध में वे हमारी महानतम योद्धा होंगी।

क्योंकि प्रथम सहस्राब्दी के अंतिम कालखंड में, वह दुष्टात्मा आत्माओं को छलने के लिए अंतिम बार पृथ्वी पर लौटेगा। उसने इस समय को इसलिए चुना क्योंकि वह जानता था कि मानव जाति मानसिक और तकनीकी रूप से तो उन्नत होगी, किंतु स्वयं के अहंकार और स्वार्थ से भरी होगी। वह लौटेगा तो सही, परंतु उसे इस बात का तनिक भी आभास नहीं होगा कि उससे कहीं अधिक शक्तिशाली सत्ता भी आत्माओं को एकत्रित करने के लिए वहाँ उपस्थित होगी, वही, जिन्हें उनके आरम्भ से ही उस सर्प के कुचलने के लिए चुना गया था, जिन्हें मरियम के नाम से जाना जाता है।

धन्य है उनका नाम।

लेखक का संदेश

हमारी परमप्रिया माता का प्रथम प्रलेखित दर्शन वर्ष 40 ईस्वी में प्रेरित याकूब को हुआ था, जब वे स्पेन के सारागोसा के निकट सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे। यह मसीह की मृत्यु के सात वर्ष पश्चात की घटना है; किंतु याकूब भयभीत थे और स्वयं को उस कार्य के लिए अयोग्य तथा अक्षम अनुभव कर रहे थे जो उन्हें सौंपा गया था। उन्होंने हमारे मुक्तिदाता का नाम पुकारा, उनसे लौटने की विनती की, कि उन्हें प्रभु की आवश्यकता है, परंतु उन्हें सांत्वना देने के लिए स्वयं मरियम प्रकट हुईं। जैसा कि मसीह के स्वर्गारोहण के समय उनसे कहा गया था कि हमारी परमप्रिया माता ही वह होंगी जो संकट के समय उनके समान अधिकार के साथ मध्यस्थता करेंगी। मैं यह नहीं जानती थी, और शायद कभी जान भी न पाती, यदि निम्नलिखित घटना घटित न हुई होती।

अप्रैल 1998 में, मैं न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय के 'टिश स्कूल ऑफ आर्ट्स' में संगीत नाट्य लेखन के स्नातकोत्तर कार्यक्रम में अपना प्रथम वर्ष पूर्ण कर रही था। अपने संकाय द्वारा अनुमोदित शोध-प्रबंध के लिए, मैंने अपने जीवन पर आधारित एक नाटक "सिंग ए सॉन्ग ऑफ सिक्सपेंस" को अनुकूलित करना आरम्भ किया था।

किंतु मई के माह में सब कुछ बदल गया, जब मैं समुद्र तट पर दौड़ते हुए 'रोज़री' की प्रार्थना कर रही था। मैंने एक ऊँची और अधिकारपूर्ण वाणी सुनी, जो इतनी वास्तविक थी कि मुझे लगा कोई मेरे पीछे खड़ा है। मैं तेजी से पीछे मुड़ी, परंतु वहाँ कोई न था; मैं अकेली था। वह आज्ञा यह थी: "*तुम्हें मरियम के दर्शनों के विषय में लिखना होगा।*"

वह वाणी दिन-रात मेरा पीछा करती रही। मैंने शोध आरम्भ किया, किंतु इस विचित्र आज्ञा का पालन करने के कई प्रयासों के पश्चात, मैं व्याकुल हो उठी। स्वयं को क्रोधित, अयोग्य और कुंठित अनुभव करते हुए, मैं अपने लेखन कक्ष से बाहर निकल गई और पुनः दौड़ने चली गई, इस बार मेरे पास मेरी 'रोज़री' की माला भी नहीं थी।

घर लौटने पर, जैसे ही मैंने अपने लेखन कक्ष का द्वार खोला, मैं अविश्वास

के साथ वहीं स्थिर रह गई, वह कमरा गुलाबों की उस चिर-परिचित सुगंध से भरा हुआ था जिसे झुठलाया नहीं जा सकता था। मैं तत्काल अपने संगणक की ओर बढ़ी ताकि इसका अर्थ खोज सकूँ, और जब शब्द पटल पर उभर कर आए, तो मैं स्तब्ध रह गई।

मैंने स्वर्ग की ओर देखा और अपनी 'परमप्रिया माता' से कहा, "ठीक है, मैं यह कार्य करूँगी, परंतु आप मेरा साथ न छोड़िएगा क्योंकि मैं नहीं जानती कि मैं क्या कर रही हूँ।" और इस प्रकार, मेरा प्रयास आरम्भ हुआ।

मैंने वर्ष 1998 की शरद ऋतु में अपने नए और संकाय द्वारा अनुमोदित शोध-प्रबंध का प्रथम प्रारूप प्रस्तुत किया, इसका शीर्षक था, 'परमेश्वर की माता'। मैंने अपनी 'परमप्रिया माता' को "हाँ" कह दिया था। और सत्य तो यह है कि मुझ पर हँसा गया, कई लोगों ने उपेक्षापूर्ण दृष्टि से मुझे देखा, परंतु मैं अडिग रही। मैंने उन हज़ारों प्रलेखित मरियम के दर्शनों में से पाँच को अपने कार्य में सम्मिलित किया।

वर्ष 1917 में पुर्तगाल के एक छोटे से क्षेत्र 'फातिमा' में जो घटनाएँ घटीं, वे भी उनमें से एक थीं। जनवरी तक आते-आते, फातिमा की गाथा ही एकमात्र शेष रह गई थी जिस पर मुझे ध्यान केंद्रित करना था।

हमारी रानी का आदर्श

जैसे-जैसे मैं इस पटकथा को एक वृत्तांत के रूप में ढाल रही हूँ, मैं स्वयं से पूछती हूँ, क्या मैं आत्माओं के उद्धार के लिए कठिन परिश्रम करने हेतु स्वर्ग का सुख त्याग सकती हूँ? हमारी महारानी ने संपूर्ण मानवता के लिए यही किया, उन्होंने स्वर्ग का परित्याग कर दिया। मैंने फातिमा की 1917 की घटनाओं के अपने पच्चीस वर्षों के अध्ययन और कार्य के विषय में सोचा, जिसके परिणामस्वरूप एक संगीत-नाट्य का सृजन हुआ था। मैंने नन्हीं जेसिंता मार्टो (जो अब संत जेसिंता हैं) के विषय में सोचा, और उस महान कार्य के विषय में जो उसने 13 मई, 1917 को अपने भाई फ्रांसिस्को और चचेरी बहन लूसिया के सम्मुख 'हमारी माता' के प्रथम दर्शन के दो वर्ष पश्चात किया था। अगले ही वर्ष, वह और फ्रांसिस्को 'स्पेनिश इन्फ्लुएंजा' से गंभीर रूप से बीमार हो गए और एक वर्ष से अधिक समय तक कष्ट सहते रहे।

वर्ष 1919 में, फ्रांसिस्को की मृत्युशैया के समीप, स्वर्ग से उनकी वह 'सुंदर स्वामिनी' उनके कक्ष में प्रकट हुईं। वे अपने प्रिय फ्रांसिस्को को अपनी बाहों में लेकर स्वर्ग ले जाने आई थीं। उन्होंने जेसिंता की ओर प्रेमपूर्वक मुस्कुराते हुए उस गंभीर रूप से बीमार बच्ची से कहा, "*अब तुम भी चल सकती हो।*"

जेसिंता ने बड़ी गंभीरता से पूछा, "*परंतु यदि मैं यहाँ रुक जाऊँ, तो क्या मुझे और अधिक कष्ट सहना पड़ेगा?*" परमेश्वर की माता ने 'फातिमा की माता' के रूप में अपनी स्वीकृति में सिर हिलाया और फिर उस बालिका को विस्तार से बताया कि यदि वह पृथ्वी पर रुकती है, तो उसे किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

"*हाँ, मेरी बच्ची। तुम्हें अपने फेफड़ों के उपचार हेतु अपने परिवार को छोड़ना होगा, तुम्हें शल्य-चिकित्सा की आवश्यकता होगी, जिसके कष्ट को कम करने का कोई उपाय न होगा, और तुम्हारी मृत्यु एकांत में होगी।*"

उस नन्हीं पावन बच्ची ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "*तो फिर मैं रुकूँगी, क्योंकि इसका अर्थ यह होगा कि और भी बहुत सी आत्माएं स्वर्ग जा सकेंगी।*"

उस दिन जेसिंता को बताया गया एक-एक शब्द सत्य सिद्ध हुआ। दस महीने पश्चात उसके फेफड़ों में एक फोड़ा हो गया जिसके लिए शल्य-चिकित्सा अनिवार्य थी। उसे लिस्बन के एक अनाथालय में भेज दिया गया. जो उसके घर से साठ मील दूर था परंतु एक अस्पताल के निकट था। युद्ध के प्रभावों के कारण, चेतना-शून्य करने वाली औषधि केवल उन पुरुषों के लिए सुरक्षित रखी गई थी जिन्होंने सेना में सेवा की थी, और इसलिए बिना किसी औषधि के ही उस फोड़े को साफ किया गया, जो कि एक अत्यंत पीड़ादायक प्रक्रिया थी।

जेसिंता ने स्वर्ग के सुख का परित्याग कर दिया ताकि दूसरों की आत्माएं उससे पूर्व अनंत जीवन का वरदान प्राप्त कर सकें। जेसिंता मार्टो केवल नौ वर्ष की थी। क्या मैं इतनी साहसी, इतनी निस्वार्थ बन सकती हूँ? क्या आप बन सकते हैं? इतनी कोमल आयु में उसने मानवता के प्रति निस्वार्थ प्रेम के कार्य में हमारी महारानी के आदर्श को प्रस्तुत किया। मैं ऐसे कार्यों में कितनी दयनीय रूप से विफल हो जाती हूँ।

अंत में, मैं उन सभी के साथ यह साझा करना चाहती हूँ जो इस पृथ्वी पर हमारी 'परमप्रिया' की यात्रा के विषय में पढ़ेंगे या सुनेंगे, आपको भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, वे आपके साथ हैं, सदैव। आप अकेले नहीं हैं; उनकी बाहें आप सभी को अपने भीतर समेटने के लिए फैली हुई हैं। हमारे प्रति उनका प्रेम अनंत है। उन्हें पुकारें और वे आपकी रक्षा करेंगी तथा अपने पुत्र की ओर आपका मार्गदर्शन करेंगी। वे अपना वह वचन निभाएंगी जिसे ईश्वर ने उनकी रचना के समय ही निर्धारित किया था। यह वही प्रतिज्ञा है जो उन्होंने 13 जुलाई, 1917 को फातिमा के बच्चों से अपनी भेंट के दौरान की थी, *"अंत में मेरा निर्मल हृदय विजयी होगा!*"

सुनने के लिए धन्यवाद!

'**ब्लेस्ड इज़ हर नेम**' का निर्माण '**द मदर ऑफ गॉड स्टडीज**' द्वारा किया गया है

कॉपीराइट 2026 **बारबरा ओलेनिक** द्वारा

बारबरा ओलेनिक की अन्य रचनाएँ www.themotherofgod.org पर उपलब्ध हैं